उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

MINOR COURSE **बी.ए.– (प्रथम सेमेस्टर)**

BAKA(N)-120

कर्मकाण्ड का आरम्भिक परिचय

मानविकी विद्याशाखा

भारतीय कर्मकाण्ड

ॐ
Devpujan

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं .05946- 261122 , 261123
टॉल फ्री न0 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

अध्ययन समिति

अध्यक्ष

कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

प्रोफेसर रेनू प्रकाश

निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी – संयोजक

असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय

पौरोहित्य विभाग
लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रोफेसर रामानुज उपाध्याय

वेद विभाग
लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रोफेसर उपेन्द्र त्रिपाठी

अध्यक्षचर, वेद विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाठ्यक्रम सम्पादन एवं संयोजन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

इकाई लेखक	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, ज्योतिष-कर्मकाण्ड विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी	1	1, 2, 3, 4, 5,6
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, ज्योतिष-कर्मकाण्ड विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी	2	1, 2, 3, 4, 5,6,7

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

ISBN No. –

प्रकाशित वर्ष - 2024

मुद्रक: -

प्रकाशक : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

नोट - : (इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।)

कर्मकाण्ड का आरम्भिक परिचय MINOR COURSE BAKA(N)-120

अनुक्रम

प्रथम खण्ड- आरम्भिक परिचय	**पृष्ठ - 1**
इकाई 1 : दैनन्दिन कर्म परिचय	2-13
इकाई 2 : सन्ध्योपासना	14-26
इकाई 3 : पूजन परिचय	27-35
इकाई 4 : पंचमहायज्ञ	36-43
इकाई 5 : वेद परिचय	44-50
इकाई 6 : पुराण परिचय	51-62
द्वितीय खण्ड - स्वस्तिवाचन, संकल्पादि परिचय	**पृष्ठ-63**
इकाई 1 : स्वस्तिवाचन, संकल्प तथा न्यास	64-72
इकाई 2 : गणेश एवं षोडशमातृका पूजन	73-88
इकाई 3 : कलश एवं पुण्याहवाचन	89-115
इकाई 4 : नवग्रह पूजन	116-138
इकाई 5 : अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता एवं पंचलोकपाल पूजन	139-173
इकाई 6 : वास्तोष्पत्ति एवं क्षेत्रपाल	174-198
इकाई 7 : दश दिक्पाल पूजन	199-220

बी.ए. (कर्मकाण्ड)

BA-23

प्रथम सेमेस्टर

BAKA(N)-120

(कर्मकाण्ड का आरम्भिक परिचय)

MINOR COURSE

खण्ड – 1

आरम्भिक परिचय

इकाई - 1 दैनन्दिन कर्म परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3. दैनन्दिन कर्म परिचय
बोध प्रश्न
1.4 सारांश
1.5 शब्दावली
1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावनाः-

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–120 के प्रथम खण्ड की पहली इकाई 'दैनन्दिनी कर्म परिचय' से सम्बन्धित हैं। जैसा कि आप जानते है कि परमपिता परमेश्वर द्वारा रचित सृष्टि में सर्वोत्कृष्ट मानव - सृष्टि है। मानव अपनी दैनन्दिनी जीवन में क्या-क्या कार्य करें, जिसके फलस्वरूप उसका सर्वतोमुखी विकास हो। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत इकाई में नित्यकर्म की विधि दी जा रही है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ समय ऐसे होते है जब उसकी बुद्धि निर्मल और सात्विक रहती हैं तथा उस समय में किये गये क्रियाकलाप शुभ कामनाओं से समन्वित एवं पुण्यवर्धन करने वाले होते है।

इस इकाई में आपके पठनार्थ कर्मकाण्ड में उद्धृत दैनन्दिनी कर्म का विवेचन प्रस्तुत है, जिसके अध्ययन से आप तत्सम्बन्धित ज्ञान को प्राप्त कर सकेगें।

1.2 उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ दैनन्दिनी कर्म के अन्तर्गत क्या – क्या आता है, जान लेंगे।
- ❖ दैनन्दिनी कर्म महत्व को समझा सकेंगे।
- ❖ प्रात: स्मरणीय देवताओं के स्मरित मन्त्रों को जान लेंगे।
- ❖ दैनन्दिनी कर्म को अपने शब्दों में बता सकेंगें।
- ❖ दैनन्दिनी कर्म के गुण – दोष की समीक्षा कर सकेंगे।

1.3 दैनन्दिन कर्म परिचय

दैनन्दिनी शब्द का अर्थ है – नित्य या प्रतिदिन। मनुष्य अपने जीवन में प्रतिदिन ऐसा कौन – कौन सा कर्म करें, जिससे उसके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति हो, तथा जीवनयापन में उसे कठिनाई न हों, इस दृष्टिकोण से शास्त्रों ने हमें कई मार्ग बताये हैं। शास्त्रविधि से गृहस्थ के लिए नित्यकर्म का निरूपण किया जाता है, जिसे करके मनुष्य देव सम्बन्धी, पितृ सम्बन्धी, और मनुष्य सम्बन्धी तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है। तैत्तरीय संहिता में कहा गया है - ''जायमानो वै ब्रह्मणोस्त्रिभिर्ऋणवा जायते''। इसके अनुसार मनुष्य देवऋण, मनुष्य ऋण, पितृऋण से युक्त होकर जन्म लेता है। इन ऋणों से मुक्ति कैसे मिले, इसलिये दैनन्दिनी या नित्य कर्म का विधान

बताया गया है। दैनन्दिनी कर्म में मुख्य छः कर्म बताये गये है -

संध्या स्नानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम।
वैश्वदेवं तथाऽऽतिथ्यं षट् कर्माणि दिने दिने।।

मनुष्य को शारीरिक शुद्धि के लिए स्नान, संध्या, जप, देवपूजन, बलिवैश्वदेव और अतिथि सत्कार - ये **'छः कर्म'** प्रतिदिन करने चाहिए। यहॉ दैनन्दिनी कर्मों में प्रात:कालीन भगवत स्मरण, दन्तधावन, स्नान एवं पूजा के बारे में बताया जा रहा है। सन्ध्या कर्म के बारे में हम आगे की इकाई में आपको बतायेंगे। हमारी दिनचर्या को नियमित रूप से निश्चित समयानुसार होना चाहिये। प्रातः काल जागरण से लेकर शयन तक की समस्त क्रियाओं के लिए शास्त्रकारों ने अपने दीर्घकालीन अनुभव से ऐसे नियमों का निर्माण किया है जिनका अनुसरण करके मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सकता है। नियमित क्रियाओं के ठीक रहने पर ही स्वास्थ एवं मन स्वस्थ रहता है। अत: मानव को सर्वतोमुखी विकास के लिए अपने–अपने जीवन में नियमित रूप से दैनन्दिनी कर्म करने चाहिए।

'आचारो परमो धर्मः'

उपर्युक्त पंक्ति के अनुसार आचार ही मनुष्य का परम धर्म है। आचार - विचार के पवित्र होने पर ही मनुष्य चरित्रवान बनता है, मनुष्य के चरित्रवान होने से राष्ट्र का भी सर्वांगीण विकास होता है।

प्रातःकालीन कर्मों में सर्वप्रथम ब्रह्ममुहूर्त में जगना चाहिये, ब्रह्ममुहूर्त में नहीं जगने से क्या हानि होती है आचार्यों ने इस प्रकार प्रतिपादित किया है -

ब्रह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी।
तां करोति द्विजो मोहात् पादकृच्छ्रेण शुद्धयति।।

ब्रह्ममुहूर्त में जो मुनष्य सोता है, उस समय की निद्रा उसके पुण्यों को समाप्त करती है, उस समय जो शयन करता है उसे इस पाप से बचने के लिए पादकृच्छ्र नामक (व्रत) प्रायश्चित्त करना होता है।

हमारी दैनिक चर्या का आरम्भ प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में जागरण से होता है। शास्त्रों में ब्रह्ममुहूर्त की व्याख्या इस प्रकार से है -

रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः।
स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने।।

अर्थात् - रात्रि के अन्तिम प्रहर का जो तीसरा भाग है उसको ब्रह्म मुहूर्त कहते है। निद्रा त्याग के लिए यही समय शास्त्र विहित है।

ब्राह्ममुहूर्त सूर्योदय से चार घड़ी (डेढ़ घंटे) पूर्व को कहते है। मनुष्य प्रातःकालीन जागरण के पश्चात्

ऑखों के खुलते ही दोनों हाथों की हथेलियों को देखें और निम्न मन्त्र को बोले -

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्।।

अर्थ - हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी हाथ के मध्य में सरस्वती का निवास है, हाथ के मूल भाग में ब्रह्माजी का निवास है, अतः प्रातः काल कर (हाथ) का दर्शन करना चाहिए।

उपयुक्त श्लोक बोलते हुए अपने हाथो को देखना चाहिए। यह शास्त्रीय विधान बड़ा ही अर्थपूर्ण है। इससे मनुष्य के हृदय में आत्म-निर्भरता और स्वावलम्ब की भावना उदय होती है। वह जीवन के प्रत्येक कार्य में दूसरों की तरफ न देखकर अन्य लोगों के भरोसे न रहकर-अपने हाथों की तरफ देखने का अभ्यासी बन जाता है।

भूमि की वन्दना –

शय्या से उठकर पृथ्वी पर पैर रखने से पूर्व पृथ्वी की प्रार्थना करें -

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।

विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

समुद्ररूपी वस्त्रो को धारण करने वाली पर्वत रूपी स्तनो से मण्डित भगवान विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवी आप- मेरे पाद स्पर्श को क्षमा करें।

मंगल दर्शन - तत्पश्चात् गोरोचन, चन्दन, सुवर्ण, शंख, मृदंग, दर्पण, मणि आदि मांगलिक वस्तुओं का दर्शन करे तथा गुरू, अग्नि और सूर्य को नमस्कार करे।

माता, पिता गुरू एवं ईश्वर का अभिवादन –

शारीरिक शुद्धि कर माता- पिता, गुरू एवं परम पिता परमेश्वर को प्रणाम करे।

उत्थाय मातापितरौ पूर्वमेवाभिवादयेत्।

आचार्यश्च ततो नित्यमभिवाद्यो विजानता।।

प्रातः स्मरण

धर्म शास्त्रों ने निद्रा त्याग के उपरान्त मनुष्य मात्र का प्रथम कर्तव्य उस कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड-नायक, सच्चिदानन्द-स्वरूप प्यारे प्रभु का स्मरण बताया है - जिस की असीम कृपा से अत्यन्त दुर्लभ मानव देह प्राप्त हुई है, जो समस्त सृष्टि के कण-कण में ओत-प्रोत है, और सत्य, शिव, व सुन्दर है। जिसकी कृपा से मनुष्य सब प्रकार के भयों से मुक्त होकर ''अहं ब्रह्मास्मि'' के उच्च लक्ष्य पर पहुंच कर तन्मय हो जाता है। दैनिक जीवन के प्रारम्भ में उस के स्मरण से हमारे हृदय में आत्मविश्वास और

दृढता की भावना ही उत्पन्न नहीं होगी अपितु सम्पूर्ण दिन मंगलमय वातावरण में व्यतीत होगा। चराचर जगत् में प्रत्येक प्राणी मात्र के लिए उसके माता – पिता उसके जन्म के कारक होते हैं। अत: सर्वप्रथम माता–पिता को प्रणाम करना चाहिये, पश्चात् गुरू को पुन: उसी क्रम में अपने से बड़े को।

शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि के लिए मन्त्र बोलें -

ऊँ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तर: शुचि।।
अतिनीलघनश्यामं नलिनायतलोचनम्।
स्मरामि पुण्डरीकाक्षं तेन स्नातो भवाम्यहम्।।

इस मन्त्र से बाहरी एवं आन्तरिक शुद्धि कर आगे की क्रिया करनी चाहिये।

प्रात: स्मरणीय श्लोक: -

निम्नलिखित श्लोकों का प्रातः काल पाठ करने से कल्याणकारी होता है। जैसे- दिन अच्छा बीतता है, दु:स्वप्न, कलिदोष, शत्रु, पाप और भव के भय का नाश होता है, विष का भय नहीं होता, धर्म धर्म की वृद्धि होती है, अज्ञानी को ज्ञान प्राप्त होता है, रोग नहीं होता, पूरी आयु मिलती है, विजय प्राप्त होती है, निर्धन धनी होता है, भूख – प्यास और काम की बाधा नहीं होती है, निधन धनी होता है तथा सुख एवं शान्ति की प्राप्ति होती है। निष्काम कर्मियों को भी केवल भगवत् प्रसन्नार्थ इन श्लोकों का पाठ करना चाहिए।

गणेशस्मरण:-

प्रात: स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं
सिन्दूरपूरपरिशोभित गण्डयुग्मम्।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड
माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम्।।

अर्थ- अनाथों के बन्धु सिन्दूर से शोभायमान दोनो गण्डस्थलवाले प्रबल विघ्न का नाश करने में समर्थ एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कृत श्रीगणेश का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

विष्णुस्मरण:-

प्रात: स्मरामि भवभीतिमहार्तिनाशं
नारायणं गरूडवाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरूणवारिजपत्रनेत्रम्।।

अर्थ- संसारके भय रूपी महान् दुःख को नष्ट करने वाले ग्राह से गजराज को मुक्त करने वाले चक्रधारी एवं नवीन कमल दलके समान नेत्रवाले पद्मनाभ गरूडवाहन भगवान् श्रीनारायण का मैं ध्यान करता हूँ।

शिवस्मरण:-

प्रातः स्मरामि भगभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।

अर्थ- संसार के भय को नष्ट करनेवाले देवेश, गंगाधर, वृषभवाहन, पार्वतीपति, हाथ में खट्वांग एवं त्रिशूल लिये और संसाररूपी रोग का नाश करने वाले अद्वितीय औषध स्वरूप अभय एवं वरद मुद्रयुक्त हस्तवाले भगवान् शिव का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

देवीस्मरण -

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करोज्ज्वलाभां
सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं पेरशाम्।।

अर्थ - शरत्कालीन चन्द्रमाके समान उज्ज्वल आभावाली उत्तम रत्नों से जटित मकरकुण्डलों तथा हारों से सुशोभित दिव्यायुधों से दीप्त सुन्दर नीले हजारों हाथोंवाली लाल कमल की आभायुक्त चरणोंवाली भगवती दुर्गा देवी का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

सूर्यस्मरण -

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभावादिहेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्।।

अर्थ - सूर्यका वह प्रशस्त रूप जिसका मण्डल ऋग्वेद, कलेवर यजुर्वेद तथा किरणें सामवेद हैं। जो

सृष्टि आदि के कारण है ब्रह्मा और शिव के स्वरूप हैं तथा जिनका रूप अचिन्त्य और अलक्ष्य है प्रातः काल मैं उनका स्मरण करता हूँ।

नवग्रहों का स्मरण -

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतोबुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थ - ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राह, एवं केतु ये सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

ऋषिस्मरण -

भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरंगिराश्च
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थ - भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अंगिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष ये समस्त मुनिगण मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें ।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिंगलौ च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थ– सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, आसुरि और पिंगल– ये ऋषिगण, षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाद-ये सप्त स्वर, अतल, वितल, सुतल, तलातल,महातल, रसातल तथा पाताल- ये सात अर्धलोक सभी मेरे प्रातःकाल को मंगलमय करें। सातों समुद्रों कुलपर्वत, सप्तर्षिगण, सातों वन तथा सातों द्वीप, भूर्लोक, भुवर्लोक आदि सातों लोक सभी मेरे प्रातःकाल को मंगलमय करें।

प्रकृतिस्मरण -

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थ- गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु , प्रज्वलित तेज, शब्दसहित आकाश एवं महतत्व ये सभी मेरे प्रातःकाल को मंगलमय करें।

बोधात्मक प्रश्न - 1

1. मनुष्य कितने ऋणों से युक्त होता है?
2. शय्या से उठने के पश्चात् सर्व प्रथम क्या किया जाता है?
3. प्रातः कालीन भगवत स्मरण से क्या लाभ होता है?
4. ब्रह्ममुहूर्त का क्या समय है ?

1.3.1 शौच, दन्तधावन, स्नान

उपर्युक्त कर्म के पश्चात् उसी क्रम में शौच क्रिया करनी चाहिये। कहा गया है कि –

शौचे यत्नः सदा कार्यः शौचमूलो द्विजः स्मृतः।
शौचाचारविहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः।

शौचाचार की क्रिया दैनन्दिनी कार्यों में एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसे करके मनुष्य शुद्ध होता है । इसे प्रतिदिन करने से शरीर के अपशिष्ट पदार्थ मल के रूप में निकल आते हैं। शौच क्रिया से निवृत्त होकर दन्तधावन करे, मुखशुद्धि के बिना पूजा-पाठ मन्त्र जप ये सब निष्फल हो जाते है , अतः प्रतिदिन मुख शुद्धयर्थ दन्तधावन अथवा मंजनादि अवश्य करना चाहिये। दातून करने के लिये दो दिशाएँ ही विहित हैं–ईशानकोण और पूर्व। अतः इन्हीं दिशाओं की ओर मुख करके बैठकर दातून करनी चाहिये। जो दातून करते हैं, उन्हें यह स्मरण रखना चाहिये कि ब्राह्मण के लिये दातून बारह अंगुल, क्षत्रिय के लिये नौ अंगुल, वैश्य के लिये छः अंगुल और शूद्रों के लिये चार अंगुल का होना चाहिये। स्त्रियों के लिये भी चार अंगुल के दातुन से ही दन्तधावन का विधान है । सम्प्रति टूथपेस्ट व मंजनादि का प्रयोग अत्यधिक होता है। कम से कम व्रत – पर्वो में अवश्य ही दातुन का प्रयोग करना चाहिये । वेद पढ़ने के लिए निम्नलिखित दातुनों का उपयोग करना चाहिए –

1.चिड़चिड़ा (अपामार्ग) 2.गूलर, 3. आम, 4. नीम, 5. बेल, 6. खैर , 7. तिमुर, 8. करंज
इसी क्रम में दन्तधावन के पश्चात् स्नान का विधान हैं।

स्नान –

प्रातः काल स्नान करने के पश्चात् मनुष्य शुद्ध होकर जप, पूजा, पाठ आदि समस्त कर्मो के करने योग्य बनता है नौ छिद्रोवाले अत्यन्त मलिन शरीर से दिन-रात मल निकलता रहता है, अतः प्रातः कालीन स्नान करने से शरीर शुद्धि होती है। वेद स्मृति में कहे गये समस्त कार्य स्नानमूलक है -

स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रुतिस्मृत्युदिता नृणाम्।
तस्मात् स्नानं निषेवेत श्रीपुष्टयारोग्यवर्धनम्।।

सारी क्रियायें स्नान से सम्बन्धित है, अतः स्नान आवश्यक है, अतएव लक्ष्मी, पुष्टि आरोग्य की वृद्धि चाहने वाले मनुष्य को स्नान सदैव करना चाहिए।

स्नान के प्रकार - स्नान के सात भेद है -

मान्त्रं भौमं तथाग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च।
वारूणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात्।।

1. मन्त्र स्नान 2. भौम (भूमि) 3. अग्नि 4. वायु (वायव्य) 5. दिव्यस्नान 6. वारूण
7. मानसिक स्नान

हाथ में जल लें और बोलें।

स्नान - संकल्प- ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने अद्य ..... अमुक गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं श्री भगवत्प्रीत्यर्थं च प्रातः/ मध्याह्न/सायं स्नानं करिष्ये ।।

संकल्प के पश्चात् - तीर्थो का आवाहन करें

ऊँ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदा सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू।।

बोधात्मक प्रश्न - 2

1. दातुन करने की आवश्यकता क्यों है?
2. स्नान के कितने प्रकार होते है?

तत्पश्चात् वस्त्रधारण कर पूजनादि कर्म में प्रवृत्त होना चाहिये। पूजन में विशेषकर ब्राह्मणों के लिये

सन्ध्या एवं गायत्री जप का विधान है, साथ ही अपने–अपने इष्ट देवतओं का पूजन भी। इससे आगे की इकाई में आपको सन्ध्या से परिचित कराया जायेगा। सम्भव हो तो क्षत्रिय, वैश्य आदि वर्णों को भी सन्ध्या करनी चाहिये। फिर इसके बाद अल्पाहार (नास्ता) ग्रहण कर अपने – अपने कर्म को (यथा-जो जहॉ नौकरी करता हो वहॉ जाकर नौकरी करें, अन्य जो करते हो, वह करें) करना आरम्भ करें।

दिन भर के कार्य में आन्तरिक रूप से केवल हरि नाम का स्मरण करते रहने से सभी कार्य सिद्ध हो जाते है। यथा –

कर्मकालेऽपि सर्वत्र स्मरेद् विष्णुं हविर्भुजम्।
तेन स्यात् कर्म सम्पूर्णं तस्मै सर्वं निवेदयेत्।।

भारतीय सनातन परम्परा में माता–पिता का स्थान सर्वोपरि बताया गया है। अत: प्रत्येक मनुष्य को अपने दैनन्दिनी कर्म आरम्भ करने से पहले अपने माता–पिता को सादर प्रणाम करते हुए उनका आशीष ग्रहण करना चाहिये। माता–पिता के पश्चात् गुरू का पुन: अपने से बड़ों को प्रणाम, सम्मान एवं आदर करना चाहिये। फलस्वरूप मनुष्य का बहुमुखी विकास होता है।

प्रात:कालीन निद्रा से जगने के पश्चात् क्रमश: उपर्युक्त कथित कार्य यदि मानव सम्यक् रूप से निश्चित समयावधि में करता हो तो निश्चय ही उसका सर्वतोमुखी विकास होगा, ऐसा आचार्यों का मानना है।

1.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि दैनन्दिनी शब्द का अर्थ है – नित्य या प्रतिदिन। मनुष्य अपने जीवन में प्रतिदिन ऐसा कौन – कौन सा कर्म करें, जिससे उसके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति हो, तथा जीवनयापन में उसे कठिनाई न हों, इस दृष्टिकोण से शास्त्रों ने हमें कई मार्ग बताये हैं। शास्त्रविधि से गृहस्थ के लिए नित्यकर्म का निरूपण किया जाता है, ''जायमानो वै ब्रह्मणोस्त्रिभिर्ऋणवा जायते'' के अनुसार मनुष्य देवऋण, मनुष्य ऋण, पितृऋण से युक्त होकर जन्म लेता है। इन ऋणों से मुक्ति मिले इसलिये दैनन्दिनी या नितय कर्म का विधान बताया गया है। दैनन्दिनी कर्म में मुख्य छः कर्म बताये गये है। मनुष्य को शारीरिक शुद्धि के लिए दैनन्दिनी रूप में स्नान, संध्या, जप, देवपूजन, बलिवैश्वदेव और अतिथि सत्कार - ये **'छः कर्म'** प्रतिदिन करने की बात मुख्य रूप से कही गई है। इस इकाई में आप प्रात:कालीन जागरण से लेकर दैनन्दिनी मुख्य कार्य को समझ लिये हैं।

1.5 शब्दावली

दैनन्दिनी – नित्य, प्रतिदिन

शास्त्रविधि – शास्त्र में कही गई विधि

षट् – छ:

च – और

सप्त - सात

विविध – अनेक

सर्वतोमुखी – सभी प्रकार से

अल्पाहार- संतुलित आहार

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1 का उत्तर –

1. प्रत्येक मनुष्य देवऋण , मनुष्यऋण , पितृण, इन तीन प्रकार के ऋणों से युक्त होता है।
2. शय्या से उठने के पश्चात् सर्व प्रथम दोनों हाथों की हथेलियों को देखें और निम्न मन्त्र को बोलें

   कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

   करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥
3. प्रातः कालीन भगवत् स्मरण से दिन अच्छा बीतता है धर्म की वृद्धि होती है।
4. ब्राह्ममुहूर्त सूर्योदय से चार घड़ी (डेढ़ घंटे) पूर्व को कहते है।

बोध प्रश्न 2 का उत्तर -

1. मुख की शुद्धि के लिये दातून करने की आवश्यकता होती है।
2. स्नान के सात प्रकार होते है।

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्मपूजाप्रकाश
आचारमयूख
आचारप्रदीप
आचारभूषण
कर्मकाण्ड प्रदीप

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

कर्मकाण्ड परिचय

कर्मकलाप

संस्कारप्रदीप

वामन पुराण

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. दैनन्दिनी कर्म से आप क्या समझते है? स्पष्ट कीजिये।
2. दन्तधावन, स्नान के महत्व का निरूपण कीजिये।
3. मानव जीवन में कर्मकाण्ड की उपयोगिता पर प्रकाश डालिये।
4. प्रात:कालीन किये जाने वाले कर्म का परिचय दीजिये।

इकाई - 2 सन्ध्योपासना

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 सन्ध्या कर्म परिचय
2.4 त्रिकाल सन्ध्या
बोध प्रश्न
2.5 सारांश
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-120 के द्वितीय इकाई 'सन्ध्या कर्म' से सम्बन्धित है । इससे पूर्व की इकाई में आपने दैनन्दिनी कर्म परिचय का अध्ययन कर लिया ह। यहॉ आप दैनन्दिनी कर्म से ही सम्बन्धित 'सन्ध्या कर्म' का अध्ययन करने जा रहे है।

मानव जीवन के दैनन्दिनी महत्वपूर्ण षट्कर्मों में एक कर्म सन्ध्या कर्म है। सन्ध्या कर्म तीनों कालों में करने का विधान है। सन्ध्या कर्म परमावश्यक है।

प्रस्तुत इकाई में आपके पठनार्थ व ज्ञानार्थ सन्ध्या कर्म का उल्लेख किया जा रहा है। जिसका अध्ययन कर तत्सम्बिन्धत विषयों से परिचित हो जायेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ सन्ध्या कर्म क्या है? जान जायेंगे।
- ❖ सन्ध्या कर्म का विधान क्या है, समझ जायेंगे।
- ❖ सन्ध्या के महत्व को समझ जायेंगे।
- ❖ सन्ध्या कर्म में क्या-क्या होता है, बता सकेंगे।
- ❖ सन्ध्या के गुण दोष की समीक्षा कर सकेंगे।

2.3 सन्ध्या परिचय

भारतीय सनातन परम्परा में कर्मकाण्ड एक वैदिक प्रक्रिया है। ऋषियों ने तप विधि से अनेकों ऐसे अनुसन्धान किये हैं, जो लोकोपयोगी है। वस्तुत: लोक कल्याण के दृष्टिकोण से ही वह निरन्तर अनुसन्धानरत रहते थे। अपने सम्पूर्ण जीवन की तपस्या से वह अद्भुत शक्तियॉ प्राप्त करते थे और उन शक्तियों को लोक कल्याणार्थ उपयोग करते थे । उसी क्रम में उन्होंने कर्मकाण्ड में 'सन्ध्या कर्म' को कहा है। उपासक जिस क्रिया में परब्रह्म का चिन्तन करते है, वह उपासना कर्म **'सन्ध्या'** कहलाता है। सम् उपसर्ग पूर्वक ''ध्यै चिन्तायाम्'' धातु से अधिकरण में अड्. प्रत्यय करके स्त्री अर्थ में टाप् करके 'संध्या' शब्द को निष्पन्न करते है।

देवी भागवत और धर्मसार के अनुसार सन्ध्या का काल इस प्रकार कहा गया है –

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका।

अधमा सूर्यसहिता प्रातः संध्या त्रिधा स्मृता।।

धर्मसार के अनुसार –

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तसूर्यका।

अधमा तारकोपेता सायं संध्या त्रिधा स्मृता।।

अर्थात् सूर्योदय से पूर्व जब आकाश में तारे भरे हुए हों, उस समय की संध्या कर्म उत्तम मानी गयी है। ताराओं के छिपने से सूर्योदय तक मध्यम और सूर्योदय के बाद की संध्या अधम होती है।

संध्या की आवश्यकता –

नियमपूर्वक जो लोग प्रतिदिन संध्या करते है, वे पापरहित होकर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते है। यथा –

संध्यामुपासते येतु सततं संशितव्रताः।

विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम्।।

इस पृथ्वी पर जितने भी स्वकर्मरहित मनुष्य (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) जो अपने कर्म से रहित हो, उनको पवित्र करने के लिए ब्रह्माजी ने संध्या की उत्पत्ति की है। रात्री या दिन में जो भी अज्ञानवश दुष्कर्म हो जाये, वे त्रिकाल-संध्या करने से नष्ट हो जाते है । यथा याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रायश्चिताध्ययाय में कहा गया है –

यावन्तोऽस्यां पृथिव्यां हि विकर्मस्थास्तु वै द्विजाः।

तेषां वै पावनार्थाय संध्या सृष्टा स्वयम्भुवा।।

निशायां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत्।

त्रैकाल्यसंध्याकरणात् तत्सर्वं विप्रणश्यति।।

सन्ध्या न करने से दोष

जिसने संध्या का ज्ञान नहीं किया, जिसने संध्या की उपासना नहीं की, वह द्विज जीवित रहते शूद्र के समान रहता है और मृत्यु के बाद श्वान (कुत्ता) योनि को प्राप्त करता है।

संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता।

जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते।।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि संध्या नहीं करें, तो वे अपवित्र हैं और उन्हें किसी पुण्यकर्म के करने का फल प्राप्त नहीं होता है।

सन्ध्यास्तुति -

ब्राह्मणरूपी वृक्ष का मूल संध्या है, चारों वेद चार शाखाएँ हैं, धर्म और कर्म पत्ते हैं। अत: मूल की रक्षा रत्न से करनी चाहिये। मूल के छिन्न हो जाने पर वृक्ष और शाखा कुछ भी नहीं रह सकते हैं -

विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र संध्या वेदा: शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा।।

संध्या के प्रकार –

संध्या प्रायः तीन समय की जाती है – प्रातः, मध्याह्न, एवं सायं। प्रातः संध्या सूर्योदय से पूर्व की जाती है।

सूर्योदय से पूर्व जब आकाश मण्डल में तारे दिखाई दें उस समय की संध्या को उत्तम सन्ध्या कहते है। जब तारे लुप्त हो जाये सूर्योदय न हुआ हो वह सन्ध्या मध्यम सन्ध्या होती है। सूर्योदय के पश्चात् जो सन्ध्या होती है उसे अधम सन्ध्या कहते है। सायं सन्ध्या प्रायः सूर्यास्त से पूर्व उत्तम होती है।

सूर्य के रहते सायं कालीन सन्ध्या उत्तम है, सूर्य अस्त हो जाये तो मध्यम सन्ध्या, और तारे दिखाई दे तो वह सन्ध्या अधम मानी जाती है।

प्रातःकालीन संध्या तारो के रहते और जब सूर्य आकाश के मध्य में हो तो मध्याह्न संध्या, सूर्य पश्चिम में हों सायं सन्ध्या होती है इस प्रकार तीन संध्यायें होती है। यथा –

प्रात: संध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्।
ससूर्या पश्चिमां संध्यां तिस्त्र: संध्या उपासते।।

समय पर की गई संध्या इच्छानुसार फल देती है और बिना समय की गयी संध्या वन्ध्या स्त्री के समान होती है। यथा -

स्वकाले सेविता संध्या नित्यं कामदुघा भवेत्।
अकाले सेविता सा च संध्या वन्ध्या वधूरिव।।

सन्ध्या कर्म -

सन्ध्या कर्म करने से पूर्व उसके लिए प्रयुक्त सामग्रियों का ज्ञान कर लेना चाहिये -

सन्ध्या के लिए आवश्यक सामाग्री -

1. लोटा - प्रधान जल पात्र
2. घंटी और सन्ध्या का विशेष जलपात्र –

3. पात्र – चन्दन – पुष्पादि के लिये

4. पञ्चपात्र

5. आचमनी

6. अर्घा

6. थाली - जल गिराने के लिए

7. आसन, जपमाली, एवं जप के लिये माला

स्नान के पश्चात् शुद्ध वस्त्र धारण करें और आसन बिछाकर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुँह करके बैठें और निम्न मन्त्र पढ़ते हुये शिखा बाँधे -

ऊँ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।

तिष्ठ देवि शिखबद्धे तेजोवृद्धि कुरूष्व में।।

तिलक लगायें, दोनों हाथ की अनामिका अंगुली में कुशा धारण करें एवं तीन बार आचमन करे। आचमन निम्न मन्त्रों से करें -

ऊँ केशवाय नमः , ऊँ नारायणाय नमः , ऊँ माधवाय नमः इन मन्त्रों से जल पीयें तथा ऊँ हृषीकेशाय नमः इस मन्त्र को बोलकर हाथ धो लें।

मार्जन विनियोग मन्त्र –

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता,गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। इस प्रकार विनियोग करे। पुनः निम्नलिखित मन्त्र से मार्जन करें (अपने शरीर एवं उपलब्ध सामग्री पर जल छिड़के) -

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

तदनन्तर निम्न विनियोग को पढ़े –

ऊँ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

पुनः जल लेकर आसन में छोड़े मन्त्र बोले -

ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।।

सन्ध्या संकल्प - हाथ में जल, अक्षत, पुष्प एवं कुशा ले और संकल्प पढे -

ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पेवैवस्वतमन्वन्तरेअष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे अमुक स्थाने अमुक संवत्सरे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रे अमुक शर्मा (वर्मा गुप्ता) अहं मम उपात्तदुरितक्षयपूर्वकश्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं प्रातः (सायं,मध्याह्न) संध्योपासनं करिष्ये।

आचमन - इसके लिये निम्नलिखित विनियोग पढ़े –

ऊँ ऋतं चेति माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप छन्दो भाववृतं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोग:।

फिर निम्न मन्त्र को पढ़कर आचमन करे -

ऊँ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजाय। ततो रात्र्यजायत। तत: समुद्रो अर्णव:। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथ्वीं चान्तरिक्षमथो स्व:।

तदनन्तर दायें हाथ में जल लेकर बायें हाथ से ढककर ऊँ के साथ तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़कर अपनी रक्षा के लिए अपने चारों ओर जल की धारा दे। फिर प्राणायाम करे –

प्राणायाम का विनियोग –

हाथ में जल लें और विनियोग पढे -

ऊँ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्दैवी गायत्री छन्द: अग्नि: परमात्मा देवता शुक्लो वर्ण: सर्वकर्मारम्भे विनियोग:।

ऊँ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठ कश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यवृहस्पतिवरूणेन्द्रविष्णवो देवता अनादिष्टप्रायश्चिते प्राणायामे विनियोग:।

ऊँ तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्द: सविता देवता प्राणायामे विनियोग:।

ऊँ आपो ज्योतिरित शिरस: प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता: विनियोग:।

प्राणायम के मन्त्र - ऊँ भू: ऊँ भुवः ऊँ महः ऊँ जनः ऊँ तपः ऊँ सत्यम् ऊँ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ऊँ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

प्राणायाम के तीन भेद है - 1. पूरक 2. कुम्भक, और 3. रेचक

पूरक - अंगूठे से नाक के दाहिने छिद्र को दबाकर बायें छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे खीचने को 'पूरक'

प्राणायाम कहते है।

कुम्भक - श्वास को रोककर नाक के दोनो छिद्रों को बन्द करना कुम्भक कहलाता है।

रेचक - नाक के बाये छिद्र को दबाकर दाहिने छिद्र से धीरे-धीरे छोड़े। इसको रेचक प्राणायाम कहते है।

तत्पश्चात श्वास लेते समय और रोकते समय और छोड़ते समय निम्न मन्त्र को पढ़े -

ऊँ भूः ऊँ भुवः ऊँ महः ऊँ जनः ऊँ तपः ऊँ सत्यम् ऊँ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ऊँ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

प्राणायाम के पश्चात् मार्जन करे पुनः हाथ में जल लेकर विनियोग पढे –

सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमन करे –

ऊँ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

मार्जन -

पुनः बाये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की तीन अंगुलियो से 1 से 7 तक मन्त्रों को बोलकर सिरपर जल छिड़के। 8 वें मन्त्र से पृथ्वीपर तथा 9 वे मन्त्र से पुनः सिर पर जल छिड़के-

विनियोग- आपो हिष्ठेत्यादि त्रयृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिगायत्रीच्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः

1. ऊँ आपोहिष्ठामयोभुवः
2. ऊँ तान ऊर्जेदधातन
3. ऊँ महेरणाय चक्षसे
4. ऊँ शो वः शिवतमो रसः
5. ऊँ तस्य भाजयते नः
6. ऊँ उशतीरिवभातरः
7. ऊँ तस्या अरंगमाम
8. ऊँ यस्य क्षयायजिन्वथ
9. ऊँ आपो जनयथाचनः

अघमर्षण - नीचे लिखे विनियोग को पढ़कर दाहिने हाथ में जल लेकर उसे नाक से लगाकर मन्त्र पढ़े और ध्यान करें कि समस्त पाप नाक से निकलकर जल में आ गये है। फिर उस जल को देखे बिना बायीं ओर फेंक दे।

विनियोग:- अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दः भाववृतो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

मन्त्र - ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्रयजायत। ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवादधी संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदद्यद्विश्वस्य मिषतोवशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् दिवं पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

पुनः निम्नलिखित विनियोग करे –

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

फिर इस मन्त्र से आचमन करे –

ॐ अन्तरश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योति रसोऽमृतम् ॥

सूर्यार्घ्य विधि - सूर्य हमारे प्रत्यक्ष देवता है गायत्री के अधिष्ठातृ देव है, प्रातःकाल काल में इन्हे अर्घ्य अवश्य देना चाहिए। प्रातः काल की संध्या में खड़े होकर तीन बार सूर्य नारायण को अर्घ्य दें मध्याह्न में खड़े होकर 1 बार, सांय संध्या में बैठ कर तीन बार अर्घ्य देना चाहिए, हाथ में जल लेकर विनियोग करें –

सूर्यार्घ्य का विनियोग –

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता अर्घ्यदाने विनियोगः।

ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः अर्घ्यदाने विनियोगः।

ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

इस प्रकार विनियोग पढ़कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर सूर्य को अर्घ्य दे –

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मन्त्र को पढ़कर ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः ।

उपस्थान –

सूर्य के उपस्थान के लिये प्रथम नीचे लिखे विनियोगों को पढ़े –

उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्निचृदगायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्कथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

सूर्योपस्थान के मन्त्र -

- ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरूत्तमम्।।
- ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम्।
- ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष गॅू सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।
- ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत गॅू श्रृणुयामशरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

गायत्री जप का विधान –

षडंगन्यास –

गायत्री मन्त्र के जप के पूर्व षडंगन्यास करने का विधान है। अतः आगे लिखे एक–एक मन्त्र को बोलते हुए चित्र के अनुसार उन–उन अंगों का स्पर्श करें –

ॐ हृदयाय नमः (दाहिने हाथ की पॉचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करे)।

ॐ भूः शिरसे स्वाहा (मस्तक का स्पर्श करे)।

ॐ भुवः शिखायै वषट् शिखा का अंगूठे से स्पर्श करे।

ॐ स्वः कवचाय हुम् (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बॉये कंधे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दायें कंधे का स्पर्श करे)।

ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् (नेत्रों का स्पर्श करें)।

ॐ भुर्भुवःस्वः अस्त्राय फट (बायें हाथ की हथेली पर दायें हाथ को सिर से घुमाकर मध्यमा और तर्जनी से ताली बजाये)।

प्रातः कालीन ब्रह्मरूपा गायत्री माता का ध्यान -

बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्।

रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा।।

कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्।

ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ।।

मन्त्रेणावाहयेद्धेषीमायन्तीं सूर्यमण्डलात्।

भगवती गायत्री का मुख्य मन्त्र के द्वारा सूर्यमण्डल से आते हुए इस प्रकार ध्यान करना चाहिये कि उनकी किशोरावस्था है और वे ज्ञानस्वरूपिणी हैं। वे रक्तवर्णा एवं चतुर्मुखी है। उनके उत्तरीय तथा मुख्य परिधान दोनों ही रक्तवर्ण के हैं। उनके हाथ में रूद्राक्ष की माला है । हाथ में कमण्डल धारण किये वे हंस पर विराजमान हैं। वे सरस्वती स्वरूपा हैं, ब्रह्मलोक में निवास करती हैं और ब्रह्मा जी उनके पतिदेवता है।

इसके बाद गायत्री माता के आवाहन के लिये निम्नलिखित विनियोग करे -

तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्यजुस्त्रिष्टु बुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोग: ।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से गायत्री का आवाहन करे –

ऊँ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि । धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।

गायत्री देवी का उपस्थान -

आवाहन करने पर गायत्री देवी आ गयी हैं, ऐसा मानकर निम्नलिखित विनियोग पढ़कर आगे के मन्त्र से उनको प्रणाम करे –

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषि: स्वराण्महापंक्तिश्छन्द: परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोग:।

ऊँ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ।

गायत्री मन्त्र का विनियोग –

इसके बाद गायत्री मन्त्र के जप के लिये विनियोग पढ़े –

ऊँकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्द: परमात्मा देवता, ऊँ भूर्भुव: स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवता:, ऊँ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्द: सविता देवता जपे विनियोग: ।

इसके पश्चात् गायत्री मन्त्र का 108 बार जप करे।

गायत्री मन्त्र -

ऊँ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

गायत्री जप करते समय गायत्री मन्त्र के अर्थ को ध्यान में रखते हुये जप करें।

सूर्य प्रदक्षिणा –

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

भगवान को जप का अर्पण –

अन्त में भगवान को यह वाक्य बोलते हुए जप निवेदित करे - अनेन गायत्रीजपकर्मणा सर्वान्तर्यामी भगवान नारायण: प्रीयतां न मम।

इस प्रकार प्रात:कालीन संध्या पूर्ण हुई।

मध्याह्न संध्या

मध्याह्न सन्ध्या प्रातः सन्ध्या के अनुसार ही होगी, प्राणायाम सूर्यार्घ्य सब पूर्ववत् होगा।
मध्याह्नकालीन विष्णुरूपा गायत्री का ध्यान निम्नलिखित के अनुसार करें -

ऊँ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ॥

तत् पश्चात् गायत्री जप इत्यादि पूर्ववत् करें, कवच का पाठ करें,
मध्याह्न में तर्पण नहीं करें। अन्य सभी कर्म प्रातः की भाँति होगें।

सायं-संध्या

सायं कालीन संध्या सूर्य के रहते उत्तराभिमुख होकर करें भगवान् सूर्य को पश्चिम मुख होकर अर्घ्य दें।
सायंकाल शिव रूपा गायत्री का ध्यान करें -

ऊँ सायह्ने शिवरूपा च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्॥

जप करें कवच का पाठ करें विसर्जन आदि पूर्ववत्।

बोधात्मक प्रश्न-

1.संध्या किस- किस काल में किया जाता है?
2.अघमर्षण करने से क्या होता है?
3.संध्या के पात्रों के नाम लिखिये?

2.5 सारांश -

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में कर्मकाण्ड एक वैदिक प्रक्रिया है। ऋषियों ने तप विधि से अनेकों ऐसे अनुसन्धान किये हैं, जो लोकोपयोगी है। वस्तुत: लोक कल्याण के दृष्टिकोण से ही वह निरन्तर अनुसन्धानरत रहते थे। अपने सम्पूर्ण जीवन की तपस्या से वह अद्भुत शक्तियॉ प्राप्त करते थे और उन शक्तियों को लोक कल्याणार्थ उपयोग करते थे। उसी क्रम में उन्होंने कर्मकाण्ड में 'सन्ध्या कर्म' को कहा है। उपासक जिस क्रिया में परब्रह्म का चिन्तन करते है, वह उपासना कर्म 'सन्ध्या' कहलाता है। सम् उपसर्ग पूर्वक ''ध्यै चिन्तायाम्'' धातु से अधिकरण में अड्. प्रत्यय करके स्त्री अर्थ में टाप् करके 'संध्या' शब्द को निष्पन्न करते है। संध्या प्रायः तीन समय की जाती है– प्रातः, मध्याह्न, एवं सायं। प्रातः संध्या सूर्योदय से पूर्व की जाती है। सूर्योदय से पूर्व जब आकाश मण्डल में तारे दिखाई दें उस समय की संध्या को उत्तम सन्ध्या कहते है। जब तारे लुप्त हो जाये सूर्योदय न हुआ हो वह सन्ध्या मध्यम सन्ध्या होती है। सूर्योदय के पश्चात् जो सन्ध्या होती है उसे अधम सन्ध्या कहते है। सायं सन्ध्या प्रायः सूर्यास्त से पूर्व उत्तम होती है। सूर्य के रहते सायं कालीन सन्ध्या उत्तम है, सूर्य अस्त हो जाये तो मध्यम सन्ध्या, और तारे दिखाई दे तो वह सन्ध्या अधम मानी जाती है।

2.6 शब्दावली

वैदिक – वेदों से सम्बन्धित

कल्याणार्थ – कल्याण के लिये

अनुसन्धान – खोज

नारायणाय – नारायण के लिये

पूर्ववत् - पहले की भॉति

चतुरानन – चार हो मुख जिसके

सर्वतोमुखी – सभी प्रकार से

रक्त वर्ण - लाल रंग

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. संध्या प्रातःकाल, मध्याह्न काल और सायंकाल में किया जाता है।

2. अघमर्षण करने से पापों का नाश होता है।

3. संध्या के पात्रों के नाम है-

लोटा जल के लिए, पात्र चन्दन पुष्पादि के लिए, पञ्चपात्र, आचमनी, अर्घा

थाली जल गिराने के लिए , आसन- 1 गोमुखी-1 माला-1

2.8 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ नाम	प्रकाशन
नित्यकर्म पूजाप्रकाश	गीताप्रेस गोरखपुर
श्रीमद्देवी भागवत	गीताप्रेस गोरखपुर

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न:

1- संध्या से आप क्या समझते है? स्पष्ट कीजिये।

2- त्रिकाल संध्या विधान का उल्लेख कीजिये?

इकाई - 3 पूजन परिचय

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 पूजन परिचय
3.4 सारांश
3.5 शब्दावली
3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ
3.8 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)120 की तीसरी इकाई 'पूजन परिचय' से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने दैनन्दिनी पूजन – संध्या आदि कर्मों को जान लिया है। यहॉ अब इस इकाई में आप पूजन के बारे में अध्ययन करेंगे।

भारतीय सनातन परम्परा में पूजन को एक धार्मिक क्रिया माना गया है। पूजन के मुख्यत: दो विधि है - पंचोपचार एवं षोडशोपचार। इस इकाई में दोनों विधियों का उल्लेख किया जा रहा है।

प्रस्तुत इकाई में आपके पठनार्थ व ज्ञानार्थ पूजन सम्बन्धित विषयों का विवेचन किया जा रहा है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- पूजन क्या है। समझ लेंगे।
- पूजन के प्रकारों को जान लेंगे।
- पंचोपचार एवं षोडशोपचार का विवेचन कर सकेंगे।
- पूजन के महत्व निरूपण कर सकेंगे।
- पूजन के लाभ – हानि को समझा सकेंगे।

3.3 पूजन परिचय

पूजन एक धार्मिक क्रिया है। भारतीय सनातन परम्परा में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। इसमें आस्था सबसे बड़ी इकाई मानी जाती है। आस्था के बिना पूजन का कोई महत्व नहीं होता। पूजन के कई रूप होते है – जैसे एक वैदिक क्रिया द्वारा , दूसरी मानसिक क्रिया द्वारा, तीसरी यौगिक क्रिया द्वारा चौथी तान्त्रिक क्रिया द्वारा, आदि इत्यादि। पूजन की मुख्यत: दो पद्धति है एक पंचोपचार दूसरी षोडशोपचार। पंचोपचार संक्षिप्त विधि होती है, जबकि षोडशपचार वृहत्। इसे करने के लिये सर्वप्रथम शुभ मुहूर्त्त का चयन करते है। उसके पश्चात् पूजन के लिये सम्बन्धित सामग्रीयों को एकत्र कर पवित्र स्थान पर आसन आदि बिछाकर वहॉ बैठते है तथा पूजन सामग्रीयों को सुव्यवस्थित करते है।

आसन पर बैठकर मंत्रो के द्वारा पूजन सामग्रियों को पवित्र करते है। तत्पश्चात् पूजन क्रम को समझ लिजिये –

जिस देवता की पूजन करनी हो, उसका मंत्र द्वारा आवाहन करते है, फिर पश्चात् का क्रम इस प्रकार है -

आवाहन

आसन

पाद्य

अर्घ्य

आचमन

स्नान

पंचामृत स्नान

शुद्धोदकस्नान शुद्ध जल से स्नान।

वस्त्र, उपवस्त्र

चंदन

यज्ञोपवीत (जनेऊ)

पुष्प

दुर्वा गणेश जी के पूजन में ।

तुलसी विष्णु जी के पूजन में तुलसी।

शमी शमीपत्र।

अक्षत शिव में श्वेत अक्षत, देवी में रक्त (लाल) अक्षत, अन्य में पीत (पीला) अक्षत।

सुगंधिद्रव्य इत्र।

धूप

दीप

नैवेद्य प्रसाद।

ऋतुफल।

ताम्बूल पान।

दक्षिणा।

आरती।

पुष्पाञ्जलि।

मंत्रपुष्पांजलि।

प्रार्थना।

इस प्रकार क्रमानुसार पूजन करते हैं। पंचोपचार एवं षोडशोपचार दोनों ही विधियों में क्रम यही होता

है।

पूजन क्रम को समझने के पश्चात् आप उनके मन्त्रों का भी ज्ञान कीजिये।

आवाहन का मन्त्र -

आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिराः समे।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु संनिधौ॥

मन्त्र पढ़ते हुये जिनकी पूजा कर रहे हो, उनका ध्यानपूर्वक आवाहन करना चाहिये। जिस देवता की पूजा कर रहे हो, उसका नाम लेकर पुष्प अर्पित करना चाहिये। यथा गणेश जी की पूजा कर रहे हो तो – गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि कहते हुए आवहनार्थे पुष्पं समर्पयामि कहना चाहिए । इसी प्रकार जो कर्म कर रहे हो, उसका नाम लेते हुए उच्चारण करना चाहिए।

आसन का मन्त्र –

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं परिगृह्यताम्॥

पाद्य का मन्त्र –

गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृह्णनतु परमेश्वराः॥

अर्घ्य का मन्त्र –

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृह्णन्त्वर्घ्यं महादेवाः प्रसन्नाश्च भवन्तु मे॥

आचमन –

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृह्णन्तु परमेश्वराः॥

स्नान –

मन्दाकिन्याः समानीतैःकर्पूरागुरूवासितैः ।
स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेभिः सुगन्धिभिः॥

पंचामृत स्नान –

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतंस्नानार्थं प्रतिगृह्यातम्॥

शुद्धोद्धक स्नान –

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रतम्।
इदं गन्धोदकं स्नानं कुकुमाक्तं नु गृह्यताम्॥

वस्त्र – उपवस्त्र का मन्त्र –

शीतवातोष्णसंत्राणे लोकलज्जानिवारणे।
देहालंकरणे वस्त्रे भवदभ्यो वाससी शुभे॥

यज्ञोपवीत –

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृह्णन्तु परमेश्वरा:॥

चन्दन –

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प, पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तित:।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

धूप –

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तम:।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यातम्॥

दीप –

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्रिा योजितं मया।
दीपं गृह्णन्तु देवेशास्त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

नैवेद्य -

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ऋतुफल –

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ताम्बूल –

पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयताम्॥

दक्षिणा –

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो : ।
अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

आरती –

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव ॥

पुष्पांजलि –

श्रद्धया सिक्तया भक्तया हार्दप्रेम्णा समर्पित: ।
मन्त्रपुष्पांजलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥

प्रार्थना –

नमोऽस्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नम: ॥

उपर्युक्त सभी मन्त्र लौकिक हैं । इसी प्रकार वैदिक मन्त्रों से भी पूजन किया जाता है ।

पंचदेव परिचय –

आदित्यं गणनाथं च देवीं रूद्रं च केशवम् ।
पंचदैवत्यमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत् ॥

सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, विष्णु - ये पंचदेव कहे गये हैं । इनकी पूजा सभी कार्यों में करनी चाहिये ।

शैलीं दारूमयीं हैमीं धात्वाद्याकारसम्भवाम् ।
प्रतिष्ठां वै प्रकुर्वीत प्रासादे वा गृहे नृप ॥

पत्थर, काष्ठ, सोना या अन्य धातुओं की मूर्तियों की प्रतिष्ठा घर या मन्दिर में करनी चाहिये ।

गृहे चलार्चा विज्ञेया प्रासादे स्थिरसंज्ञिका ।
इत्येते कथिता मार्गा मुनिभि: कर्मवादिभि: ॥

गृह में चल प्रतिष्ठा और मन्दिर में अचल प्रतिष्ठा करनी चाहिये । यह कर्मज्ञानी मुनियों का मत है।

गंगाप्रवाहे शालग्रामशिलायां च सुरार्चने ।
द्विजपुंगव नापेक्ष्ये आवाहनविसर्जने ॥
शिवलिंगेऽपि सर्वेषां देवानां पूजनं भवेत् ।
सर्वलोकमये यस्माच्छिवशक्तिर्विभु: प्रभु: ॥

गंगा जी में, शालग्राम शिला में तथा शिवलिंग में सभी देवताओं का पूजन बिना आवाहन विसर्जन किया जा सकता है ।

पंचोपचार पूजन –

गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य। इनके द्वारा ही पंच उपचार पूजन किया जाता है।

दसोपचार पूजन –

पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र- निवेदन, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य। इनके द्वारा दसोपचार पूजन होता है।

षोडशोपचार पूजन -

पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तवपाठ, तर्पण और नमस्कार । इनके द्वारा षोडशोपचार पूजन किया जाता है।

पंचोपचार पूजन हो या षोडशोपचार पूजन दोनों विधियों में ही सर्वप्रथम गणेश जी का पूजन किया जाता है पश्चात् उपर्युक्त क्रम विधि से पूजन किया जाता है। गणेश जी का स्मरण निम्न मन्त्र से करें

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः । एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। पुनः सकाम व निष्काम संकल्प का विधान है। यदि कामनासहित पूजन करनी हो तो सकाम संकल्प कर पूजन करनी चाहिये तथा कामनारहित पूजन करनी हो तो निष्काम संकल्प करनी चाहिये।

संकल्प –

ऊँ विष्णेव नमः , ऊँ विष्णेव नमः ऊँ विष्णेव नमः। ऊँ श्रीविष्णुविष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतोमहापुरूषस्य प्रवर्तमानस्य विष्णोराज्ञया ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे ..... क्षेत्रे नगरे ग्रामे ..... अमुक नाम संवत्सरे ..... मासे शुक्ल :

कृष्णपक्षे ..... तिथौ..... वासरे ..... गोत्रः ..... शर्मा / वर्मा / गुप्तोऽहम प्रातः मध्याह्ने , सायं सर्वकर्मसु शुद्धयर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तयर्थं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं च अमुक कर्म करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प करके उपर्युक्त पूजन विधि क्रम से देवी - देवता का पूजन करना चाहिये।

3.5 सारांश -

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में कर्मकाण्ड एक वैदिक प्रक्रिया है। ऋषियों ने तप विधि से अनेकों ऐसे अनुसन्धान किये हैं, जो लोकोपयोगी है। वस्तुतः लोक कल्याण के दृष्टिकोण से ही वह निरन्तर अनुसन्धानरत रहते थे। अपने सम्पूर्ण जीवन की तपस्या से वह अद्भुत शक्तियॉ प्राप्त करते थे और उन शक्तियों को लोक कल्याणार्थ उपयोग करते थे। उसी क्रम में उन्होंने कर्मकाण्ड में 'सन्ध्या कर्म' को कहा है। उपासक जिस क्रिया में परब्रह्म का चिन्तन करते है, वह उपासना कर्म 'सन्ध्या' कहलाता है। सम् उपसर्ग पूर्वक ''ध्यै चिन्तायाम्'' धातु से अधिकरण में अड्. प्रत्यय करके स्त्री अर्थ में टाप् करके 'संध्या' शब्द को निष्पन्न करते है। संध्या प्रायः तीन समय की जाती है – प्रातः, मध्याह्न, एवं सायं। प्रातः संध्या सूर्योदय से पूर्व की जाती है। सूर्योदय से पूर्व जब आकाश मण्डल में तारे दिखाई दें उस समय की संध्या को उत्तम सन्ध्या कहते है। जब तारे लुप्त हो जाये सूर्योदय न हुआ हो वह सन्ध्या मध्यम सन्ध्या होती है। सूर्योदय के पश्चात् जो सन्ध्या होती है उसे अधम सन्ध्या कहते है। सायं सन्ध्या प्रायः सूर्यास्त से पूर्व उत्तम होती है। सूर्य के रहते सायं कालीन सन्ध्या उत्तम है, सूर्य अस्त हो जाये तो मध्यम सन्ध्या, और तारे दिखाई दे तो वह सन्ध्या अधम मानी जाती है।

3.6 शब्दावली

वैदिक – वेदों से सम्बन्धित

कल्याणार्थ – कल्याण के लिये

अनुसन्धान – खोज

नारायणाय – नारायण के लिये

पूर्ववत् - पहले की भॉति

चतुरानन – चार हो मुख जिसके

सर्वतोमुखी – सभी प्रकार से

रक्त वर्ण - लाल रंग

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. संध्या प्रातःकाल, मध्याह्न काल और सायंकाल तीन प्रकार की होती है।
2. अघमर्षण करने से पापों का नाश होता है।
3. संध्या के पात्रों के नाम है-
   लोटा जल के लिए, पात्र चन्दन पुष्पादि के लिए, पञ्चपात्र, आचमनी, अर्घा
   थाली जल गिराने के लिए , आसन- 1 गोमुखी-1 माला-1

3.8 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ नाम	प्रकाशन
नित्यकर्म पूजाप्रकाश	गीताप्रेस गोरखपुर
श्रीमद्देवी भागवत	गीताप्रेस गोरखपुर

3.9 निबन्धात्मक प्रश्नः

1- पूजन से आप क्या समझते है ? स्पष्ट कीजिये।
2- पूजन विधान का उल्लेख कीजिये ?

इकाई - 4 पंचमहायज्ञ

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 पंचमहायज्ञ
बोध प्रश्न
4.4 सारांश
4.5 शब्दावली
4.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–120 के प्रथम खण्ड की चतुर्थ इकाई पंचमहायज्ञ से सम्बन्धित है। इसके पूर्व की इकाईयों में आपने दैनन्दिनी कर्म, संध्या कर्म तथा पूजन परिचय का अध्ययन कर लिया है। आइए अब इस इकाई में गृहस्थों के लिए कथित पंचमहायज्ञों का ज्ञान करते हैं। पंचमहायज्ञ कर्मकाण्ड का महत्वपूर्ण अंग है। यह पॉच प्रकार का होता है। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ एवं अतिथि यज्ञ। गृहस्थ के लिए यह पॉच प्रकार के यज्ञों का विधान कहा गया है। इस इकाई में आपके पठनार्थ व ज्ञानार्थ पंचमहायज्ञ का वर्णन किया जा रहा है।

4.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

- ❖ पंचमहायज्ञ को जान पायेंगे।
- ❖ पंचमहायज्ञ के प्रकारों को समझा पायेंगे।
- ❖ पंचमहायज्ञ के महत्व का निरूपण कर सकेंगे।
- ❖ पंचमहायज्ञ के लाभ को समझ जायेंगे ।
- ❖ कर्मकाण्डोक्त पंचमहायज्ञ की विधि को जान लेंगे।

4.3 पंचमहायज्ञ

पंच महायज्ञ भारतीय सनातन परम्परा में मानवों के लिये आवश्यक अंग के रूप में बताये गए हैं। धर्मशास्त्रों ने भी हर गृहस्थ को प्रतिदिन पंच महायज्ञ करने के लिए कहा है। नियमित रूप से इन पंच यज्ञों को करने से सुख-समृद्धि व जीवन में प्रसन्नता बनी रहती है। इन महायज्ञों के करने से ही मनुष्य का जीवन, परिवार, समाज शुद्ध, सदाचारी और सुखी रहता है।

पंच यज्ञ की महत्ता

पर्याप्त धन-धान्य होने पर भी अधिकांश परिवार दु:खी और असाध्य रोगों से ग्रस्त रहते हैं, क्योंकि उन परिवारों में पंच महायज्ञ नहीं होते। मानव जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति है। इन चारों की प्राप्ति तभी संभव है, जब वैदिक विधान से पंच महायज्ञों को नित्य किया जाये। पंच महायज्ञ का उल्लेख **'मनुस्मृति'** में मिलने पर भी उसका मूल यजुर्वेद के **शतपथ ब्राह्मण** हैं। इसीलिये ये वेदोक्त है। जो वैदिक धर्म में विश्वास रखते हैं, उन्हें हर दिन ये 5 यज्ञ करते रहने के लिए मनुस्मृति में निम्न मंत्र दिया गया है-

'अध्यापनं ब्रह्म यज्ञः पित्र यज्ञस्तु तर्पणं। होमोदैवो बलिर्भौतो न्रयज्ञो अतिथि पूजनम्॥

प्रकार

मानव जीवन के लिए जो पंच महायज्ञ महत्त्वपूर्ण माने गये हैं, वे निम्नलिखित हैं-

1. **ब्रह्मयज्ञ**
2. **देवयज्ञ**
3. **पितृयज्ञ**
4. **भूतयज्ञ**
5. **अतिथियज्ञ**

पंचमहायज्ञ का वर्णन प्रायः सभी ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने धर्मग्रन्थों में किया है, जिनमें से कुछ ऋषियों के वचनों को यहॉ उद्धृत किया जाता है -

'भूतयज्ञों मनुष्ययज्ञः पितृयज्ञों देवयज्ञों ब्रह्मयज्ञो इति।'

वेदों को पढ़ना और पढ़ाना **ब्रह्म यज्ञ** कहा जाता है। तर्पण, पिण्डदान और श्राद्ध को **पितृ यज्ञ**। देवताओं के पूजन, होम हवन आदि को **देव यज्ञ** कहते हैं। अपने अन्न से दूसरे प्राणियों के कल्याण हेतु भाग देना **भूतयज्ञ** तथा घर आए अतिथि का प्रेम सहित आदर सत्कार करना **अतिथियज्ञ** कहा जाता है। ब्राह्म यज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ और अतिथि यज्ञ यही **पंच महायज्ञ** है।

भगवान् मनु की आज्ञा है कि -

पञ्चैतान् यो महायज्ञान्न हापयति शक्तितः।
सगृहेऽपि नसन्नित्यं सूनादोषैर्न लिप्यते॥

'जो गृहस्थ शक्ति के अनुकूल इन पंचमहायज्ञों का एक दिन भी परित्याग नहीं करते, वे गृहस्थ-आश्रम में रहते हुए भी प्रतिदिन के पञ्चसूनाजनित पाप के भागी नहीं होते।

महर्षि हारीत ने कहा है -

यत्फलं सोम यागेन प्राप्नोति धनवान् द्विजः।
सम्यक् पन्चमहायज्ञे दरिद्रस्तदवाप्नुयात्॥

धनवान द्विज सोमयाग करके जो फल प्राप्त करता है उसी फल को दरिद्र पंचमहायज्ञ के द्वारा प्राप्त कर सकता है।

पंचमहायज्ञो के अनुष्ठान से समस्त प्राणियों की तृप्ति होती है।

पंचमहायज्ञ करने से अन्नादि की शुद्धि और पापों का क्षय होता है।

पंचमहायज्ञ किये बिना भोजन करने से पाप लगता है।

भगवान श्री **कृष्ण ने गीता** (3/13) में कहा है -

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।

भुन्जते ते त्वघं पापा पचन्त्यात्मकारणात्।।

यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खानेवाले श्रेष्ठ पुरूष सभी पापों कसे मुक्त हो जाते है, किन्तु जो पापी केवल अपने लिये ही भोजन बनाते है, वे पाप का ही भक्षण करते है।

महाभारत में भी कहा है -

अहन्हनि ये त्वेतानकृत्वा भुन्जते स्वयम्।

केवलं मलमश्नन्ति ते नरा न च संशयः।।

जो प्रतिदिन इन पंचमहायज्ञों को किये बिना भोजन करते है, वे केवल मल खाते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

अतः पंचमहायज्ञ कर के ही गृहस्थों को भोजन करना चाहिए। पंचमहायज्ञ के महत्व एवं इसके यर्थाथ स्वरूप को जानकर द्विजमात्र का कर्त्तव्य है कि वे अवश्य पन्चमहायज्ञ किया करें ऐसा करने से धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति होगी।

पञ्च महायज्ञों के पृथक-पृथक रूप

ब्रह्मयज्ञ

अध्ययन - अध्यापन को ब्रह्मयज्ञ कहते है, श्रीमद्भगवत् गीता में कहा है -

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाड्मयं तप उच्यते ।।

वेद- शास्त्रों के पठन एवं परमेश्वर के नाम का जो जपाभ्यास है वही वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है। स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है। अतः सभी अवस्थाओं में ज्ञान की वृद्धि होती है।

ब्रह्मयज्ञ करने से ज्ञान की वृद्धि होती है। ब्रह्मयज्ञ करने वाला मनुष्य ज्ञानप्रद-महर्षिगणो का अनृणी और कृतज्ञ हो जाता है।

1. संध्यावन्दन के बाद को प्रतिदिन वेद-पुराणादि का पठन-पाठन करना चाहिए। यद्यपि आज के व्यस्ततम समय में मनुष्य के पास समयाभाव होता है तो पाठकों को सुविधा के लिए प्रत्येक ग्रन्थ का आदि मन्त्र दिया जा रहा है।

ऋग्वेद - हरिः ऊँ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

यजुर्वेद - ऊँ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मध्न्या

इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघस सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वीर्षजमानस्य पशून पाहि।

सामवेद - ऊँ अग्न आयाहि वीतये गृणनो हव्यदातयेनिहोता सत्सु बर्हिषि ।।

अथर्ववेद - ऊँ शं नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंषोरभिस्रवन्तु नः।

निरूक्तम् - समाम्नायः समाम्नातः

छन्दः – मयरसतजभनतगसंमितम्।

निघण्टु - गौः ग्मा

ज्यौतिषम् – पञ्चसंवत्सरमयम्।

शिक्षा - अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि।

व्याकरणम् – वृद्धिरादैच्।

कल्पसूत्रम् - अथातोऽधिकारः फलयुक्तानि कर्माणि

गृह्यसूत्रम् - अथातो गृह्यस्थलीपाकानां कर्म

न्यायदशैनम् - प्रमाणप्रमेयसंशय प्रयोजन दृष्टान्त सिद्धान्तावयव - तर्क निर्णवाद जल्पवितणहेत्वाभासच्छलजाति निग्रहस्थानानां तत्वज्ञानानिः श्रेयसाधिगमः।

वैशैषिकदर्शनम् - अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः। यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्म।

योगदर्शनम् – अथयोगानुशासनम्। योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।

सांख्यदर्शनम् - अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरूषार्थः

भारद्वाजकर्ममीमांसा - अथातो धर्मजिज्ञासा। धारको धर्मः

जैमिनीकर्ममीमांसा - अथातो धर्मजिज्ञासा, चोदना लक्षणो धर्मः।

ब्रह्ममीमांसा - अथातो ब्रह्मजिज्ञासा। जन्माद्यस्य यतः। शास्त्रयोनित्वात् तत्तु समन्वयात्।

स्मृति - मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः

प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्

रामायणम् - तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।

नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिमुनिपुड.गम्।।

भारतम् –

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।

देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयभुदीरयेत्।।

पुराणम् –

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादि तरतश्चार्थेश्वभिज्ञः स्वराट्

तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः ।

तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा ।

धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ।।

तन्त्रम् –

आचारमूला जाति: स्यादाचार: शास्त्रमूलक: ।

वेदवाक्यं शास्त्रमूलं वेद: साधकमूलक: ।।

साधकश्च क्रियामूल: क्रियापि फलमूलिका

फलमूलं सुखं देवि सुखमानन्दमूलकम् ।।

2. पितृयज्ञ –

पितृयज्ञ के अन्तर्गत तर्पण आदि कार्य आते है । जिसमें देव तर्पण, ऋषि तर्पण, दिव्य मनुष्य तर्पण, दिव्य पितृ तर्पण, यम तर्पण, मनुष्य – पितृ तर्पण, द्वितीय गोत्र तर्पण, पत्न्यादितर्पण, वस्त्र निष्पीडन, भीष्मतर्पण आदि है । पश्चात् सूर्य को अर्घ्यदान दिया जाता है ।

3. देवयज्ञ –

देवयज्ञ में पंचदेव पूजन, अनेक देवमूर्ति – पूजा प्रतिष्ठा विचार, पंचोपचार, दसोपचार, षोडशोपचार, सर्वसामान्य देवी देव पूजा के विधान का अध्ययन किया जाता है ।

4. भूतयज्ञ –

भूतयज्ञ के अन्तर्गत बलिवैश्वदेव विधि तथा पंचबलि विधि का अध्ययन किया जाता है । बलिवैश्वदेव में देवयज्ञ, बलिहरण मण्डल, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्य यज्ञ एवं ब्रह्म यज्ञ तथा पंचबलि विधि में गोबलि, श्वानबलि, काकबलि, देवादिबलि, पिपीलिकादिबलि होता है । अन्त में अग्नि का विसर्जन किया जाता है ।

6. मनुष्य यज्ञ -

बलिवैश्वदेव के पश्चात् सर्वप्रथम अतिथियों को ससम्मान भोजन कराना चाहिये । इसके पहले मनुष्य यज्ञ में जो हन्तकार अन्न दिया गया है, उसे भिन्न – भिन्न श्रेष्ठ ब्राह्मणों को जो दिया जाता है, वह मनुष्य यज्ञ कहलाता है ।

4.5 सारांश -

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में कर्मकाण्ड एक वैदिक प्रक्रिया है। ऋषियों ने तप विधि से अनेकों ऐसे अनुसन्धान किये हैं, जो लोकोपयोगी है। वस्तुत: लोक कल्याण के दृष्टिकोण से ही वह निरन्तर अनुसन्धानरत रहते थे। अपने सम्पूर्ण जीवन की तपस्या से वह अद्भुत शक्तियॉ प्राप्त करते थे और उन शक्तियों को लोक कल्याणार्थ उपयोग करते थे। उसी क्रम में उन्होंने कर्मकाण्ड में 'सन्ध्या कर्म' को कहा है। उपासक जिस क्रिया में परब्रह्म का चिन्तन करते है, वह उपासना कर्म 'सन्ध्या' कहलाता है। सम् उपसर्ग पूर्वक ''ध्यै चिन्तायाम्'' धातु से अधिकरण में अड्. प्रत्यय करके स्त्री अर्थ में टाप् करके 'संध्या' शब्द को निष्पन्न करते है। संध्या प्रायः तीन समय की जाती है – प्रातः, मध्याह्न, एवं सायं। प्रातः संध्या सूर्योदय से पूर्व की जाती है। सूर्योदय से पूर्व जब आकाश मण्डल में तारे दिखाई दें उस समय की संध्या को उत्तम सन्ध्या कहते है। जब तारे लुप्त हो जाये सूर्योदय न हुआ हो वह सन्ध्या मध्यम सन्ध्या होती है। सूर्योदय के पश्चात् जो सन्ध्या होती है उसे अधम सन्ध्या कहते है। सायं सन्ध्या प्रायः सूर्यास्त से पूर्व उत्तम होती है। सूर्य के रहते सायं कालीन सन्ध्या उत्तम है, सूर्य अस्त हो जाये तो मध्यम सन्ध्या, और तारे दिखाई दे तो वह सन्ध्या अधम मानी जाती है।

4.6 शब्दावली

वैदिक – वेदों से सम्बन्धित

कल्याणार्थ – कल्याण के लिये

अनुसन्धान – खोज

नारायणाय – नारायण के लिये

पूर्ववत् - पहले की भॉति

चतुरानन – चार हो मुख जिसके

सर्वतोमुखी – सभी प्रकार से

रक्त वर्ण - लाल रंग

4.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. संध्या प्रातःकाल, मध्याह्न काल और सायंकाल तीन प्रकार की होती है।
2. अघमर्षण करने से पापों का नाश होता है।

3. संध्या के पात्रों के नाम है-

लोटा जल के लिए, पात्र चन्दन पुष्पादि के लिए, पञ्चपात्र, आचमनी, अर्घा

थाली जल गिराने के लिए , आसन- 1 गोमुखी-1 माला-1

4.8 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ नाम	प्रकाशन
नित्यकर्म पूजाप्रकाश	गीताप्रेस गोरखपुर
श्रीमद्देवी भागवत	गीताप्रेस गोरखपुर

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न:

1- पंचमहायज्ञ को परिभाषित कीजिये।

2- पंचमहायज्ञों के पृथक् पृथक् रूपों का वर्णन कीजिये?

3. कर्मकाण्ड में पंचमहायज्ञ का क्या योगदान है?

इकाई - 5 वेद परिचय

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 वेद परिचय
बोध प्रश्न
5.5 सारांश
5.6 शब्दावली
5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–120 के प्रथम खण्ड की पॉचवी इकाई 'वेद परिचय' से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने दैनन्दिनी कर्म, पूजन परिचय एवं पंचमहायज्ञ को समझ लिया है। इस इकाई में अब आप वेद परिचय का अध्ययन करेंगे।

'वेद' भारतीय सनातन परम्परा का मेरूदण्ड है। सर्वविद्या का मूल उसमें अन्तनिर्हित है। पुराण वेद का विस्तार है। इन दोनों के ज्ञानाभाव में आप कर्मकाण्ड को भली–भॉति नहीं समझ सकते। अत: इसका ज्ञान परमावश्यक है।

इस इकाई में आपके पठनार्थ व ज्ञानार्थ वेद का विवेचन किया जा रहा है।

5.2 उद्देश्य -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ वेद क्या है। जान जायेंगे।
- ❖ वेद के प्रकार को समझा सकेंगे।
- ❖ वेद का महत्व निरूपण कर सकेंगे।
- ❖ कर्मकाण्ड में वेद एवं पुराण का प्रयोजन को समझा सकेंगे।

5.3 वेदों का परिचय -

भारतीय विद्याओं की यह मान्यता रही है कि सर्वविद्या का मूल वेद है। भारतीय सनातन परम्परा में वेद को 'अपौरूषेय' कहा गया है। अपौरूषेय का अर्थ होता है– जिसे कोई पुरूष पूर्णरूपेण व्यक्त न कर सके। 'विद् ज्ञाने' धातु से वेद शब्द की निष्पत्ति हुई है। परमपिता ब्रह्मा जी के द्वारा चार वेदों की उत्पत्ति हुई है। उनके नाम है – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद । वस्तुत: इस जगत में वेद से इतर कोई ज्ञान नहीं है। वेद में विपुल ज्ञानराशि का भण्डार है। वेदों के विस्तार हेतु पुराणों का उद्भव हुआ। ''अष्टादशपुराणेषु व्यासेषु वचनद्वयम्'' के आधार पर महर्षि वेदव्यास जी ने अठारह पुराणों की रचना की थी। वेद भारतीय सनातन परम्परा का मेरूदण्ड है। कर्मकाण्ड के अन्तर्गत वेद को समझना परमावश्यक है। अत: इस इकाई में आपके ज्ञानार्थ वेद का वर्णन किया जा रहा है। वेद को 'श्रुति' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है – सुना हुआ। वेद में समस्त ज्ञान-विज्ञान राशि समाहित है। वेद मन्त्रों को 'ऋचा' कहा जाता है, ऋचायें ऋषि हृदय में अवतरित होती

है इसलिए वेद को अपौरूषेय भी कहा गया है। वेद अनादि, अनन्त और शाश्वत् रूप में विद्यमान होकर संसार का कल्याण करते रहते हैं।

वेद कितने है?

भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदों की संख्या को लेकर दो मत मिलते हैं – एक मतानुसार वेदों की संख्या तीन बतायी गयी है, जिनका नाम है'- ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद इसी को 'वेदत्रयी' भी कहा जाता है। दूसरे मत में वेदत्रयी में अथर्ववेद को जोड़कर वेदों की संख्या चार बतलायी गयी है- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।

ऋग्वेद - यह प्रथम वेद के रूप में जाना जाता है। इसमें देवताओं के आवाहन मन्त्र कहे गये है। यह मुख्यत: ऋषियों के लिये होता है।

सामवेद - इसमें मुख्यत: यज्ञादि कार्यों में गायन हेतु मन्त्र दिये गये है। सामवेद के मन्त्रों को गाकर पढ़ा जाता है। यह सर्वोत्तम वेद है जिसकी पुष्टि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता में करते है - 'वेदानां सामवेदोऽस्मि'।

यजुर्वेद - इस वेद में धार्मिक अनुष्ठानादि हेतु देवताओं के मन्त्र दिये गये हैं। यह कर्मकाण्ड के लिये जाना जाता है। पौरोहित्य कर्म के लिए यजुर्वेद का ज्ञान परमावश्यक है।

अथर्ववेद – इस वेद में जादू – टोना, तन्त्र – मन्त्र, वशीकरण, मारण, मोहन, उच्चाटन हेतु तथा आरोग्यता हेतु मन्त्र दिये गये है।

वेद के अंग है -

वेदपुरूष के छ: अंग हैं- 1.शिक्षा 2. कल्प 3. व्याकरण 4. निरूक्त 5. छन्द 6. ज्योतिष। इन्हें ही वेदांग या शास्त्र भी कहा जाता है। वेद के मन्त्र भाग को 'संहिता' कहते हैं। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत उपर लिखे सभी वेदों के कई उपनिषद, आरण्यक तथा उपवेद आदि भी आते जिनका विवरण नीचे दिया गया है। इनकी भाषा संस्कृत है जिसे अपनी अलग पहचान के अनुसार वैदिक संस्कृत कहा जाता है - इन संस्कृत शब्दों के प्रयोग और अर्थ कालान्तर में बदल गए या लुप्त हो गए माने जाते हैं। ऐतिहासिक रूप से प्राचीन भारत और हिन्द-आर्य जाति के बारे में इनको एक अच्छा संदर्भ माना जाता है। संस्कृत भाषा के प्राचीन रूप को लेकर भी इनका साहित्यिक महत्व बना हुआ है।

वेदों को समझना प्राचीन काल में भारतीय और बाद में विश्व भर में एक विवाद का विषय रहा है। प्राचीन काल में, भारत में ही, इसी विवेचना के अंतर के कारण कई मत बन गए थे। मध्ययुग में भी इसके भाष्य (अनुवाद और व्याख्या) को लेकर कई शास्त्रार्थ हुए। कई लोग इसमें वर्णित चरित्रों देव

को पूज्य और मूर्ति रूपक आराध्य समझते हैं जबकि दयानन्द सरस्वती सहित अन्य कईयों का मत है कि इनमें वर्णित चरित्र (जैसे अग्नि, इंद्र आदि) एकमात्र ईश्वर के ही रूप और नाम हैं। इनके अनुसार देवता शब्द का अर्थ है - (उपकार) देने वाली वस्तुएँ, विद्वान लोग और सूक्त मंत्र (और नाम) ना कि मूर्ति-पूजनीय आराध्य रूप। प्राचीनकाल के जैमिनी, व्यास, पराशर, कात्यायन, याज्ञवल्क्य इत्यादि ऋषियों को वेदों का अच्छा ज्ञाता माना जाता है। मध्यकाल में रचित व्याख्याओं में सायण का रचा भाष्य अत्यधिक मान्य है। यूरोप के विद्वानों का वेदों के बारे में मत हिन्द-आर्य जाति के इतिहास की जिज्ञासा से प्रेरित रही है। अठारहवीं सदी उपरांत यूरोपियनों के वेदों और उपनिषदों में रूचि आने के प्राचीन काल से भारत में वेदों के अध्ययन और व्याख्या की परम्परा रही है। हिन्दू धर्म अनुसार आर्षयुग में ब्रह्माऋषि से लेकर जैमिनि तक के ऋषि – मुनियों ने शब्दप्रमाण के रूप में इन्हीं को माने हैं और इनके आधार पर अपने ग्रन्थों का निर्माण भी किये हैं। पराशर, कात्यायन, याज्ञवल्क्य, व्यास, पाणिनी आदि को प्राचीन काल के वेदवेत्ता कहते हैं। वेदों के विदित होने यानि चार ऋषियों के ध्यान में आने के बाद इनकी व्याख्या करने की परम्परा रही है। इसी के फलस्वरूप ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, इतिहास आदि महाग्रन्थ वेदों का व्याख्यान स्वरूप रचे गए। प्राचीन काल और मध्ययुग में शास्त्रार्थ इसी व्याख्या और अर्थांतर के कारण हुए हैं। मुख्य विषय - देव, अग्नि, रूद्र, विष्णु, मरुत, सरस्वती इत्यादि जैसे शब्दों को लेकर हुए। बाद भी इनके अर्थों पर विद्वानों में असहमति बनी रही है।

ऋग्वेद –

ऋग्वेद को चारों वेदों में सबसे प्राचीन माना जाता है। इसको दो प्रकार से बाँटा गया है। प्रथम प्रकार में इसे **10** मण्डलों में विभाजित किया गया है। मण्डलों को सूक्तों में, सूक्त में कुछ ऋचाएं होती हैं। कुल ऋचाएं **1052** हैं। दूसरे प्रकार से ऋग्वेद में **64** अध्याय हैं। आठ-आठ अध्यायों को मिलाकर एक अष्टक बनाया गया है। ऐसे कुल आठ अष्टक हैं। फिर प्रत्येक अध्याय को वर्गों में विभाजित किया गया है। वर्गों की संख्या भिन्न-भिन्न अध्यायों में भिन्न भिन्न ही है। कुल वर्ग संख्या **2024** है। प्रत्येक वर्ग में कुछ मंत्र होते हैं। सृष्टि के अनेक रहस्यों का इनमें उद्घाटन किया गया है। पहले इसकी **21** शाखाएं थीं परन्तु वर्तमान में इसकी शाकल शाखा का ही प्रचार है। ऋग्वेद की समस्त शाखायें 21 है उनमें 5 शाखायें मुख्य है।

1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन

यजुर्वेद –

इसमें गद्य और पद्य दोनों ही हैं। इसमें यज्ञ कर्म की प्रधानता है। प्राचीन काल में इसकी **101** शाखाएं थीं परन्तु वर्तमान में केवल पांच शाखाएं हैं - काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी, तैत्तिरीय, वाजसनेयी। इस वेद के दो भेद हैं - कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद। कृष्ण यजुर्वेद का संकलन महर्षि वेद व्यास ने किया है । इसका दूसरा नाम तैत्तिरीय संहिता भी है। इसमें मंत्र और ब्राह्मण भाग मिश्रित हैं। शुक्ल यजुर्वेद - इसे सूर्य ने याज्ञवल्क्य को उपदेश के रूप में दिया था। इसमें **15** शाखाएं थीं परन्तु वर्तमान में माध्यन्दिन को जिसे वाजसनेयी भी कहते हैं प्राप्त हैं। इसमें **40** अध्याय, **303** अनुवाक एवं **1975** मंत्र हैं। अन्तिम चालीसवां अध्याय ईशावास्योपनिषद है।

सामवेद -

यह गेय वेद है। इसमें गान विद्या का भण्डार है, यह भारतीय संगीत का मूल है। ऋचाओं के गायन को ही साम कहते हैं। इसकी **1001** शाखाएं थीं। परन्तु आजकल तीन ही प्रचलित हैं- कोथुमीय, जैमिनीय और राणायनीय । इसको पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक में बांटा गया है। पूर्वार्चिक में चार काण्ड हैं - आग्नेय काण्ड, ऐन्द्र काण्ड, पवमान काण्ड और आरण्य काण्ड। चारों काण्डों में कुल **640** मंत्र हैं। फिर महानाम्न्यार्चिक के **10** मंत्र हैं। इस प्रकार पूर्वार्चिक में कुल **650** मंत्र हैं । छः प्रपाठक हैं। उत्तरार्चिक को **21** अध्यायों में बांटा गया। नौ प्रपाठक हैं। इसमें कुल **1225** मंत्र हैं । इस प्रकार सामवेद में कुल **1875** मंत्र हैं । इसमें अधिकतर मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। इसे उपासना का प्रवर्तक भी कहा जा सकता है।

अथर्ववेद –

इसमें गणित, विज्ञान, आयुर्वेद, समाज शास्त्र, कृषि विज्ञान, आदि अनेक विषय वर्णित हैं। कुछ लोग इसमें मंत्र-तंत्र भी खोजते हैं। यह वेद जहां ब्रह्म ज्ञान का उपदेश करता है, वहीं मोक्ष का उपाय भी बताता है। इसे ब्रह्म वेद भी कहते हैं। इसमें मुख्य रूप में अथर्वण और आंगिरस ऋषियों के मंत्र होने के कारण अथर्व आंगिरस भी कहते हैं। यह **20** काण्डों में विभक्त है। प्रत्येक काण्ड में कई-कई सूत्र हैं और सूत्रों में मंत्र हैं। इस वेद में कुल **5977** मंत्र हैं। इसकी आजकल दो शाखाएं शौणिक एवं पिप्पलाद ही उपलब्ध हैं। अथर्ववेद का विद्वान् चारों वेदों का ज्ञाता होता है। यज्ञ में ऋग्वेद का होता देवों का आह्वान करता है, सामवेद का उद्गाता सामगान करता है, यजुर्वेद का अध्वर्यु देव:कोटीकर्म का वितान करता है तथा अथर्ववेद का ब्रह्म पूरे यज्ञ कर्म पर नियंत्रण रखता है।

5.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि भारतीय विद्याओं की यह मान्यता रही है कि सर्वविद्या का मूल वेद है। भारतीय सनातन परम्परा में वेद को 'अपौरूषेय' कहा गया है। अपौरूषेय का अर्थ होता है – जिसे कोई पुरूष पूर्णरूपेण व्यक्त न कर सके। 'विद् ज्ञाने' धातु से वेद शब्द की निष्पत्ति हुई है । परमपिता ब्रह्मा जी के द्वारा चार वेदों की उत्पत्ति हुई है। उनके नाम है – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद । वस्तुत: इस जगत में वेद से इतर कोई ज्ञान नहीं है । वेद में विपुल ज्ञानराशि का भण्डार है। वेदों के विस्तार हेतु पुराणों का उद्भव हुआ । ''अष्टादशपुराणेषु व्यासेषु वचनद्वयम्'' के आधार पर महर्षि वेदव्यास जी ने अठारह पुराणों की रचना की थी । वेद एवं पुराण भारतीय सनातन परम्परा के मेरूदण्ड है।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

भारतीय – जो भारत का हो

अपौरूषेय – जिसे कोई पुरूष न जानता हो

पूर्णरूपेण – पूरी तरह से

विपुल – अपार

अष्टादश – अठारह (18)

द्वयम् – दो

सर्वविद्या - समस्त विद्या

5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1- वेदों की संख्या चार है , ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद ।

2- ऋग्वेद की मुख्य पांच शाखाओं के नाम है- 1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन ।

3- ''वेदानां सामवेदोऽस्मि' यह वाक्य गीता से लिया गया है ।

4- पुराणों की संख्या अठारह है ।

5- श्लोकों की संख्या में स्कन्द पुराण सबसे बडा है ।

6- राजनीतिशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र का वर्णन अग्नि पुराण में मिलता है ।

5.8 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक साहित्य का इतिहास
2. पुराणविमर्श

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. वेद से आप क्या समझते है ? वर्णन कीजिये
2. चारों वेदों को समझाते हुए स्पष्ट कीजिये?
3. यजुर्वेद का महत्व प्रतिपादित कीजिये।
4. सामवेद की उपायोगिता सिद्ध करें।
5. वेदों का महत्व निरूपण कीजिये।

इकाई – 6 पुराण परिचय

इकाई की संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 पुराण परिचय

6.4 सारांश

6.5 पारिभाषिक शब्दावली

6.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

6.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

6.8 निबन्धात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-120 के प्रथम खण्ड की छठी इकाई 'पुराण परिचय' से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई में आपने वेदों का अध्ययन कर लिया है। अब आप भारतीय वैदिक सनातन परम्परा के संवाहक पुराणों के बारे में जानेंगे।

पुरा नवं पुराणम्। प्राचीन कथाओं-कहानियों के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान प्रकट करने वाले स्रोत का नाम पुराण है। पुराणों की संख्या 18 कही गयी है, जिसकी रचना महर्षि वेदव्यास के द्वारा की गयी है।

आइए हम सभी प्रस्तुत इकाई के माध्यम से भारतीय सनातन परम्परा के प्रमुख पुराणों का अध्ययन करते हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि -

- पुराण किसे कहते है।
- पुराणों की संख्या कितनी है।
- पुराण का महत्व क्या है।
- पुराणों का वैशिष्ट्य क्या है।

6.3 पुराण परिचय –

भारतीय संस्कृति के स्वरूप को सम्यक ज्ञान के निमित्त पुराणो के अध्ययन की महती आवश्यकता है। पुराण भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड है यह वह आधारपीठ है जिस पर भारतीय समाज प्रतिष्ठित है।

पुराण शब्द की व्युत्पत्ति -

पुराण शब्द की व्युत्पत्ति पाणिनि तथा यास्क के साथ साथ स्वयं पुराणो में भी दी गई है पुरा भवम इस अर्थ में सायंचिरंप्राह्वेप्रगेव्ययेभ्यश्ट्युट्युलौतुट च' इस पाणिनि सूत्र से पुरा शब्द से ट्यु प्रत्यय करने पर तुट् का आगमन हुआ। परन्तु पाणिनि ने स्वयं अपने सूत्र पाठ में 'पूवकालैक- सर्व-जरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन' तथा 'पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु' इत्यादि में पुरा शब्द का प्रयोग किया है।

पुराण शब्द ऋग्वेदादि में अनेक स्थानों में मिलता है यह यहॉ विशेषण है तथा इसका अर्थ है पूर्व काल में होने वाला। यास्क के निरुक्त के अनुसार पुराण की व्युत्पत्ति है, पुरानवं भवति अर्थात जो प्राचीन होकर भी नया होता है। पुराण शब्द की व्युत्पत्ति स्वयं पुराणो में भी मिलती है 'यस्मात् पुरा ह्यनक्तीदं पुराणं तेनतत्स्मृतं' वायु पुराण के अनुसार प्राचीन काल में जो जीवित था यह व्युपत्ति मिलती है।

पद्मपुराण के अनुसार 'पुरापरम्परा वश्अि पुराणं तेन तत् स्मृतम्' अर्थात जो प्राचीनता की अर्थात परम्परा की कामना करता है वह पुराण कहलाता है। यह व्युत्पत्ति यास्क से किंचिद् भिन्न है।

इतिहास और पुराण का सम्बन्ध- प्राचीन ग्रन्थो में पुराण का सम्बन्ध इतिहास से इतना घनिष्ठ है कि दोनो सम्मिलित रूप से पुराणेतिहास नाम से उल्लिखित हैं।

तथापि लोगो में यह भ्रान्ति फैली हुई है कि भरतीय समाज ऐतिहासिक कल्पना से अपरिचित थे। परन्तु यह धारणा निर्मूल तथा अप्रमाणिक है।

पुराणो के अवतरण के विषय में पुराणों तथा इतर ग्रन्थों में अनेक प्रकार की अवधारणा प्राप्त होती है पुराणो के आविर्भाव का निर्देश वायुपुराण तथा मत्स्यपुराण में वेद के आविर्भाव से पूर्ववर्ति बतलाया गया है।

पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रताणा स्मृतम् ।
नित्यं शब्दमयं पुण्यं शतकोटिप्रविस्तरम् ।।
अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिःसृता ।।

पुराणों की संख्या प्राचीन काल से **अठारह** मानी गयी है। पुराणों में एक विचित्रता यह है कि प्रायः प्रत्येक पुराण में अठारहों पुराणों के नाम और उनकी श्लोक-संख्या का उल्लेख है। देवीभागवत में नाम के आरंभिक अक्षर के निर्देशानुसार १८ पुराणों की गणना इस प्रकार की गयी हैं: -

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

अर्थात् मकार से दो मत्स्य एवं मार्कण्डेय पुराण, भकार से दो भविष्य एवं भागवतमहापुराण, ब्रकार से तीन ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म पुराण एवं ब्रह्माण्ड पुराण, वकार से चार वायु, वराह, वामन एवं विष्णु पुराण, अकार से अग्नि पुराण, नाकार से नारद पुराण, पकार से पद्म पुराण, लिंग पुराण, कूर्म पुराण, पद्म पुराण तथा स्कन्द पुराण ये कुल अठारह पुराण कहे गये हैं, जिनकी रचना वेदव्यास जी ने की थी। पुराणों के आधार पर हम भारतीय पुरातन संस्कृति को भली-भॉति समझ सकते हैं।

पुराण लक्षण –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वंतराणि च।

वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्॥

अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, एवं वंशानुचरित ये पाँच पुराण के लक्षण बतलाये गये हैं। पुराण इन्हीं पाँचों पर आधारित होता है।

1. **ब्रह्मपुराण** - यह पुराण आदि ब्रह्मा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अध्यायों की संख्या 245 है और श्लोकों की संख्या 14000 हजार के आस पास है। पुराण सम्मत समस्त विषयों का वर्णन यहॉ उपलब्ध होता है।

सृष्टिका वर्णन, सूर्यवंश तथा सेाम वंश का वर्णन, पार्वती के आख्यान का वर्णन, गौतमी माहात्म्य, सूर्यपूजा इस पुराण की विशेषता प्रतीत होती है।

2. **पद्मपुराण** - यह पुराण श्लोक संख्या में स्कन्दपुराण को छोड़कर अद्वितीय है। इसकी श्लोक संख्या 50000 है। इस प्रमाण से यह महाभारत का ठीक आधा है और श्रीमद्भागवत से तिगुना है। इसमें पॉच खण्ड है -

प्रथमं सृष्टिखण्डं हि भूमिखण्डं द्वितीयकम्।

तृतीयं स्वर्गखण्डं च पातालं च चतुर्थकम्॥

पंचमं चोत्तरं खण्डं सर्वपाप प्रणाशनम्॥

अर्थ - इसमें प्रथम सृष्टि खण्ड, द्वितीय भूमि खण्ड, तृतीय स्वर्ग खण्ड, चतुर्थ पाताल खण्ड और पंचम उत्तर खण्ड है जिसके अध्ययन से सभी प्रकार के पाप नष्ट होते है।

3. **विष्णुपुराण** - यह पुराण वैष्णवपुराण की श्रेणी में आता है इसमे 23000 श्लोक संख्या है। इसमें भगवान के दशावतार के साथ साथ भूगोल एवं खगोल का वर्णन मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से यह पुराण बड़ा ही रमणीय और सुन्दर है।

4. **वायुपुराण** - वायुपुराण अत्यन्त प्राचीन है इसमें 11000 श्लोक है। इसकी विशेषता यह है कि इस में शिव के चरित्र का विस्तृत वर्णन है।

5. **श्रीमद्भागवतमहापुराण** - यह पुराण संस्कृत साहित्य का एक अनुपम रत्न है। भक्तिशास्त्र का तो यह सर्वस्व है। वैष्णव आचार्यो ने प्रस्थानत्रयी के समान भागवत को भी अपना उपजीव्य माना है। श्रीवल्लभाचार्य भागवत को महर्षि व्यासदेव की समाधि भाषा कहते है। श्रीमद्भागवत में 335 अध्याय, 18000 श्लोक और बारह स्कन्द है।

6. **नारदपुराण**- इस ग्रन्थ के दो भाग है। पूर्व भाग के अध्यायों की संख्या 125 है और उत्तर भाग में 82 अध्याय है। श्लोकों की संख्या 25000 है। यह पुराण ऐतिहासिक दृष्टि से बडा ही महत्वपूर्ण है। अठारहें पुराणों के विषयों की विस्तृत अनुक्रमणिका इस पुराण में उपलब्ध है।

7. **मार्कण्डेयपुराण**- इस पुराण का नामकरण मार्कण्डेय ऋषि द्वारा कथन किये जाने के कारण पडा। महापुराणों से इस पुराण की श्लोक संख्या सबसे कम है। इसमें 137 अध्याय है और श्लोको की संख्या 9000 है।

8. **अग्निपुराण** – यह पुराण समस्त भारतीय विद्याओं का कोश कहा जाता है। इस पुराण में 383 अध्याय है इसमें राजनीति शास्त्र, वास्तु, ज्योतिष, धर्मशास्त्र का विवेचन सुचारू रूप से किया गया है।

9. **भविष्य पुराण** - भविष्य पुराण का तात्पर्य भविष्य में होने वाली घटनाओं से है। इस पुराण में पॉच पर्व है तथा 14.000 श्लोक है।

10. **ब्रह्मवैवर्तपुराण** - ब्रह्मवैवर्तपुराण पुराण में 18.000 हजार श्लोक हैं। यह पुराण श्लोक संख्या में भागवत के समान है। इस पुराण में चार खण्ड है 1-ब्रताखण्ड. 2- प्रकृति खण्ड. 3- गणेश खण्ड. 4- कृष्ण जन्म खण्ड।

11. **लिंगपुराण** - इस पुराण में भगवान शंकरकी लिंगरूप से उपासना का विशेष रूप से वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण में श्लोकों की संख्या 11.000 हजार है और 133 अध्याय है। यह पुराण पूर्व एवं उत्तर दो भागों तें विभक्त हैं।

12. **वराहपुराण-** भगवान् वराह के वर्णन इसमें होने के कारण दसपुराण का नाम वराह पुराण है। दस पुराण में 218 अध्याय तथा 24.000 श्लोक है।

13. **स्कन्दपुराण** - इस पुराण में स्वामी कार्तिकेय ने शैव तत्त्वों का निरूपण किया है इसीलिये इसका ना स्कन्दपुराण है। श्लोक संख्या में यहपुराण सभी महापुराणों में सबसे बडा हैं। यह पुराण संहिताओं में विभक्त है इसपुराण में सात सेहितायें हैं। 81,000 हजार श्लोक है।

14. **वामनपुराण** - इस पुराण का सम्बन्ध भगवान के वामनावतार से है इसपुराण में केवल 95 अध्याय है तथा 10000 श्लोक है। भगवान विष्णुके भिन्न भिन्न गवतारों का वर्णन इसपुराण में उपलब्ध है।

15. **कूर्मपुराण** - इस पुराण में प्रारम्भ में चार संहिताएँ थी 1.ब्राती 2. भागवती 3. सौरी 4. वैष्णवी। परन्तु वर्तमान समय में केवल ब्राती ही उपलब्ध होती है। भागवत और मत्स्यपुराण के अनुसार

इसकी श्लोक संख्या 18000 है। परन्तु उपलब्ध पुराण में केवल 6000 श्लोक ही उपलब्ध होते है। भगवान के कूर्म अवतार के वर्णन के कारण इसका नाम कूर्मपुराण है।

16. **मत्स्यपुराण** - मत्स्यपुराण में भगवान के मत्स्यावतार का वर्णन किया गया है। इस में 291 अध्याय और श्लोको की संख्या 15.000 है। इस पुराण में काशीका माहात्म्य नर्मदा का माहात्म्य तथा श्राद्ध कल्प का विवेचन प्रयाप्त रूप से वणित है।

17. **गरूडपुराण** - इस गरूडपुराण में श्रीविष्णुजी ने गरूड जी को विश्व की सृष्टि के विषय में बताया है। गरूडपुरराण में श्लोकों की संख्या 19.000 है और अध्यायों की संख्या 264 है। इस पुराण में रत्नों की परीक्षा तथा राजनीति का विस्तार से वर्णन मिलता है इस में आयुर्वेद के आवश्यक निदान तथ चिकित का कथन भी उपलब्ध है। इसके प्रत कल्प में मानव के निधन के बाद की गति का वर्णन मिलता है।

18. ब्रह्माण्ड पुराण - इस पुराण में समस्त ब्रह्माण्ड का वर्णन होने के कारण इसका ब्रह्माण्डपुराण पड़ा है। इस पुराण में 12000 श्लोक है। इस पुराण में विश्व का विस्तृत रूप से वर्णन प्राप्त होता है।

बोध प्रश्न: -

1- पुराणों की संख्या कितनी है?

2- श्लोकों की संख्या में कौन सा पुराण सबसे बडा है?

3- राजनीतिशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र का वर्णन किस पुराण में मिलता है?

4. पुराण पर टिप्पणी लिखिये।

5. पुराणों के महत्व पर प्रकाश डालिये।

पुराण	**श्लोकों की संख्या**
ब्रह्मपुराण	**14000**
पद्मपुराण	**55000**
विष्णुपुराण	**23000**
शिवपुराण	**24000**
श्रीमद्भावतपुराण	**18000**
नारदपुराण	**25000**
मार्कण्डेयपुराण	**9000**

अग्निपुराण	**15000**
भविष्यपुराण	**14500**
ब्रह्मवैवर्तपुराण	**18000**
लिंगपुराण	**11000**
वाराहपुराण	**24000**
स्कंदपुराण	**810100**
वामनपुराण	**10000**
कूर्मपुराण	**17000**
मत्सयपुराण	**14000**
गरुड़पुराण	**19000**
ब्रह्माण्डपुराण	**12000**

पुराणों में सबसे पुराना **विष्णुपुराण** ही प्रतीत होता है। उसमें सांप्रदायिक खींचतान और रागद्वेष नहीं है। पुराण के पाँचो लक्षण भी उसपर ठीक ठीक घटते हैं। उसमें सृष्टि की उत्पत्ति और लय, मन्वंतरों, भरतादि खंडों और सूर्यादि लोकों, वेदों की शाखाओं तथा वेदव्यास द्वारा उनके विभाग, सूर्य वंश, चंद्र वंश आदि का वर्णन है। कलि के राजाओं में मगध के मौर्य राजाओं तथा गुप्तवंश के राजाओं तक का उल्लेख है। श्रीकृष्ण की लीलाओं का भी वर्णन है पर बिलकुल उस रूप में नहीं जिस रूप में भागवत में है।

वायुपुराण के चार पाद है, जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, कल्पों ओर मन्वन्तरों, वैदिक ऋषियों की गाथाओं, दक्ष प्रजापति की कन्याओं से भिन्न भिन्न जीवोत्पति, सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजाओं की वंशावली तथा कलि के राजाओं का प्रायः विष्णुपुराण के अनुसार वर्णन है।

मत्स्यपुराण में मन्वंतरों और राजवंशावलियों के अतिरिक्त वर्णश्रम धर्म का बड़े विस्तार के साथ वर्णन है और मत्सायवतार की पूरी कथा है। इसमें मय आदि असुरों के संहार, मातृलोक, पितृलोक, मूर्ति और मंदिर बनाने की विधि का वर्णन विशेष ढंग का है।

श्रीमदभागवत का प्रचार सबसे अधिक है क्योंकि उसमें भक्ति के माहात्म्य और श्रीकृष्ण की लीलाओं का विस्तृत वर्णन है। नौ स्कंधों के भीतर तो जीवब्रह्म की एकता, भक्ति का महत्व,

सृष्टिलीला, कपिलदेव का जन्म और अपनी माता के प्रति वैष्णव भावानुसार सांख्यशास्त्र का उपदेश, मन्वंतर और ऋषिवंशावली, अवतार जिसमें ऋषभदेव का भी प्रसंग है, ध्रुव, वेणु, पृथु, प्रह्लाद इत्यादि की कथा, समुद्रमथन आदि अनेक विषय हैं। पर सबसे बड़ा दशम स्कंध है जिसमें कृष्ण की लीला का विस्तार से वर्णन है। इसी स्कंध के आधार पर शृंगार और भक्तिरस से पूर्ण कृष्णचरित् संबंधी संस्कृत और भाषा के अनेक ग्रंथ बने हैं। एकादश स्कंध में यादवों के नाश और बारहवें में कलियुग के राचाओं के राजत्व का वर्णन है। भागवत की लेखनशैली अन्य पुराणों से भिन्न है। इसकी भाषा पांडित्यपूर्ण और साहित्य संबंधी चमत्कारों से भरी हुई है, इससे इसकी रचना कुछ पीछे की मानी जाती है।

अग्निपुराण एक विलक्षण पुराण है जिसमें राजवंशावलियों तथा संक्षिप्त कथाओं के अतिरिक्त धर्मशास्त्र, राजनीति, राजधर्म, प्रजाधर्म, आयुर्वेद, व्याकरण, रस, अलंकार, शस्त्र-विद्या आदि अनेक विषय हैं। इसमें तंत्रदीक्षा का भी विस्तृत प्रकरण है। कलि के राजाओं की वंशावली विक्रम तक आई है, अवतार प्रसंग भी है। इसी प्रकार और पुराणों में भी कथाएँ हैं।

विष्णुपुराण के अतिरिक्त और पुराण जो आजकल मिलते हैं उनके विषय में संदेह होता है कि वे असल पुराणों के न मिलने पर पीछे से न बनाए गए हों। कई एक पुराण तो मत-मतांतरों और संप्रदायों के राग-द्वेष से भरे हैं। कोई किसी देवता की प्रधानता स्थापित करता है, कोई किसी देवता की प्रधानता स्थापित करता है, कोई किसी की। ब्रह्मवैवर्त पुराण का जो परिचय मत्स्यपुराण में दिया गया है उसके अनुसार उसमें रथंतर कल्प और वराह अवतार की कथा होनी चाहिए पर जो ब्रह्मवैवर्त आजकल मिलता है उसमें यह कथा नहीं है। कृष्ण के वृंदावन के रास से जिन भक्तों की तृप्ति नहीं हुई थी उनके लिये गोलोक में सदा होनेवाले रास का उसमें वर्णन है। आजकल का यह ब्रह्मवैवर्त मुसलमानों के आने के कई सौ वर्ष पीछे का है क्योंकि इसमें 'जुलाहा' जाति की उत्पत्ति का भी उल्लेख है -- *म्लेच्छात् कुविंदकन्यायां जोला जातिर्बभूव ह* (१०, १२१)। ब्रह्मपुराण में तीर्थों और उनके माहात्म्य का वर्णन बहुत अधिक हैं, अनन्त वासुदेव और पुरुषोत्तम (जगन्नाथ) माहात्म्य तथा और बहुत से ऐसे तीर्थों के माहात्म्य लिखे गए हैं जो प्राचीन नहीं कहे जा सकते। 'पुरुषोत्तमप्रासाद' से अवश्य जगन्नाथ जी के विशाल मंदिर की ओर ही इशारा है जिसे गांगेय वंश के राजा चोड़गंग (सन् १०७७ ई०) ने बनवाया था। मत्स्यपुराण में दिए हुए लक्षण आजकल के पद्मपुराण में भी पूरे नहीं मिलते हैं। वैष्णव सांप्रदायिकों के द्वेष की इसमें बहुत सी बातें हैं। जैसे, पाषडिलक्षण, मायावादनिंदा, तामसशास्त्र, पुराणवर्णनइत्यादि। वैशेषिक, न्याय, सांख्य और चार्वाक 'तामस शास्त्र' कहे गए हैं और यह भी बताया गया है। इसी प्रकार मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कंद और अग्नि तामस पुराण कहे गए हैं। सारंश यह कि अधिकांश पुराणों का वर्तमान रूप हजार वर्ष के भीतर का है। सबके सब पुराण सांप्रदायिक है, इसमें भी कोई संदेह नहीं है। कई पुराण (जैसे, विष्णु) बहुत कुछ अपने प्राचीन रूप में

मिलते हैं पर उनमें भी सांप्रदायिकों ने बहुत सी बातें बढ़ा दी हैं।

पुराणों के काल एवं रचयिता –

यद्यपि आजकल जो पुराण मिलते हैं उनमें से अधिकतर पीछे से बने हुए या प्रक्षिप्त विषयों से भरे हुए हैं तथापि पुराण बहुत प्राचीन काल से प्रचलित थे। बृहदारण्यक उपनिषद् और शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि गीली लकड़ी से जैसे धुआँ अलग अलग निकलता है वैसे ही महान भूत के निःश्वास से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वांगिरस, इतिहास, पुराणविद्या, उपनिषद, श्लोक, सूत्र, व्याख्यान और अनुव्याख्यान हुए। छान्दोग्य उपनिषद् में भी लिखा है कि इतिहास पुराण वेदों में पाँचवाँ वेद है। अत्यंत प्राचीन काल में वेदों के साथ पुराण भी प्रचलित थे जो यज्ञ आदि के अवसरों पर कहे जाते थे। कई बातें जो पुराण के लक्षणों में हैं, वेदों में भी हैं। जैसे, *पहले असत् था और कुछ नहीं था* यह सर्ग या सृष्टितत्व है; देवासुर संग्राम, उर्वशी पुरूरवा संवाद इतिहास है। महाभारत के आदि पर्व में (१.२३३) भी अनेक राजाओं के नाम और कुछ विषय गिनाकर कहा गया है कि इनके वृत्तांत विद्वान सत्कवियों द्वारा पुराण में कहे गए हैं। इससे कहा जा सकता है कि महाभारत के रचनाकाल में भी पुराण थे। मनुस्मृति में भी लिखा है कि पितृकार्यों में वेद, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण आदि सुनाने चाहिए।

अब प्रश्न यह होता है कि पुराण हैं किसके बनाए। शिवपुराण के अंतर्गत रेवा माहात्म्य में लिखा है कि अठारहों पुराणों के वक्ता सत्यवतीसुत व्यास हैं। यही बात जन साधारण में प्रचलित है। पर मत्स्यपुराण में स्पष्ट लिखा है कि पहले पुराण एक ही था, उसी से १८ पुराण हुए (५३.४)। ब्रह्मांड पुराण में लिखा है कि वेदव्यास ने एक पुराणसंहिता का संकलन किया था। इसके आगे की बात का पता विष्णु पुराण से लगता है। उसमें लिखा है कि व्यास का एक 'लोमहर्षण' नाम का शिष्य था जो सूति जाति का था। व्यास जी ने अपनी पुराण संहिता उसी के हाथ में दी। लोमहर्षण के छह शिष्य थे— सुमति, अग्निवर्चा, मित्रयु, शांशपायन, अकृतव्रण और सावर्णी। इनमें से अकृतव्रण, सावर्णी और शांशपायन ने लोमहर्षण से पढ़ी हुई पुराणसंहिता के आधार पर और एक एक संहिता बनाई। वेदव्यास ने जिस प्रकार मंत्रों का संग्रहकर उन का संहिताओं में विभाग किया उसी प्रकार पुराण के नाम से चले आते हुए वृत्तों का संग्रह कर पुराणसंहिता का संकलन किया। उसी एक संहिता को लेकर सुत के चेलों के तीन और संहीताएँ बनाई। इन्हीं संहिताओं के आधार पर अठारह पुराण बने होंगे।

मत्स्य, विष्णु, ब्रह्मांड आदि सब पुराणों में ब्रह्मपुराण पहला कहा गया है, पर जो ब्रह्मपुराण आजकल प्रचलित है वह कैसा है यह पहले कहा जा चुका है। जो कुछ हो, यह तो ऊपर लिखे प्रमाण से सिद्ध है कि अठारह पुराण वेदव्यास के बनाए नहीं हैं। जो पुराण आजकल मिलते हैं उनमें विष्णुपुराण और

ब्रह्मांडपुराण की रचना औरों से प्राचीन जान पड़ती है। विष्णुपुराण में 'भविष्य राजवंश' के अंतर्गत गुप्तवंश के राजाओं तक का उल्लेख है इससे वह प्रकरण ईसा की छठी शताब्दी के पहले का नहीं हो सकता। जावा के आगे जो बाली द्वीप है वहाँ के हिंदुओं के पास ब्रह्माण्डपुराण मिला है। इन हिंदुओं के पूर्वज ईसा की पाँचवी शताब्दी में भारतवर्ष में पूर्व के द्वीपों में जाकर बसे थे। बालीवाले ब्रह्म़ाडपुराण में 'भविष्य राजवंश प्रकरण' नहीं है, उसमें जनमेजय के प्रपौत्र अधिसीमकृष्ण तक का नाम पाया जाता है। यह बात ध्यान देने की है। इससे प्रकट होता है कि पुराणों में जो भविष्य राजवंश है वह पीछे से जोड़ा हुआ है। यहाँ पर ब्रह्मांडपुराण की जो प्राचीन प्रतियाँ मिलती हैं देखना चाहिए कि उनमें भूत और वर्तमानकालिक क्रिया का प्रयोग कहाँ तक है। 'भविष्यराजवंश वर्णन' के पूर्व उनमें ये श्लोक मिलते हैं—

तस्य पुत्रः शतानीको बलबान् सत्यविक्रमः।
ततः सुर्त शतानीकं विप्रास्तमभ्यषेचयन्।।
पुत्रोश्वमेधदत्तो/?/भूत् शतानीकस्य वीर्यवान्।
पुत्रो/?/श्वमेधदत्ताद्वै जातः परपुरजयः।।
अधिसीमकृष्णो धर्मात्मा साम्पतोयं महायशाः।
यस्मिन् प्रशासति महीं युष्माभिरिदमाहृतम्।।
दुरापं दीर्घसत्रं वै त्रीणि दर्षाणि पुष्करम्
वर्षद्वयं कुरुक्षेत्रे दृषद्वत्यां द्विजोत्तमाः।।

अर्थात्— उनके पुत्र बलवान् और सत्यविक्रम शतानीक हुए। पीछे शतानीक के पुत्र को ब्राह्मणों ने अभिषिक्त किया। शतानीक के अश्वमेधदत्त नाम का एक वीर्यवान् पुत्र उत्पन्न हुआ। अश्वमेधदत्त के पुत्र परपुरंजय धर्मात्मा अधिसीमकृष्ण हैं। ये ही महाशय आजकल पृथ्वी का शासन करते हैं। इन्हीं के समय में आप लोगों ने पुष्कर में तीन वर्ष का और दृषद्वती के किनारे कुरुक्षेत्र में दो वर्ष तक का यज्ञ किया है।

उक्त अंश से प्रकट है कि आदि ब्रह्मांडपुराण अधिसीमकृष्ण के समय में बना। इसी प्रकार विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण आदि की परीक्षा करने से पता चलता है कि आदि विष्णुपुराण परीक्षित के समय में और आदि मत्स्यपुराण जनमेजय के प्रपौत्र अधिसीमकृष्ण के समय में संकलित हुआ।

पुराण संहिताओं से अठारह पुराण बहुत प्राचीन काल में ही बन गए थे, इसका पता लगता है। आपस्तंब धर्मसूत्र (२.२४.५) में भविष्यपुराण का प्रमाण इस प्रकार उदधृत है—

आभूत संप्लवात्ते स्वर्गजितः।

पुनः सर्गे बीजीर्था भवतीति भविष्यत्पुराणे।

यह अवश्य है कि आजकल पुराण अपने आदिम रूप में नहीं मिलते हैं। बहुत से पुराण तो असल पुराणों के न मिलने पर फिर से नए रचे गए हैं, कुछ में बहुत सी बातें जोड़ दी गई हैं।

प्रायः सब पुराण शैव, वैष्णव सम्प्रदाय और सौर संप्रदायों में से किसी न किसी के पोषक हैं, इसमें भी कोई संदेह नहीं। विष्णु, रुद्र, सूर्य आदि की उपासना वैदिक काल से ही चली आती थी, फिर धीरे धीरे कुछ लोग किसी एक देवता को प्रधानता देने लगे, कुछ लोग दूसरे को। इस प्रकार महाभारत के पीछे ही संप्रदायों का सूत्रपात हो चला। पुराणसंहिताएँ उसी समय में बनीं। फिर आगे चलकर आदिपुराण बने जिनका बहुत कुछ अंश आजकल पाए जानेवाले कुछ पुराणों के भीतर है। पुराणों का उद्देश्य पुराने वृत्तों का संग्रह करना, कुछ प्राचीन और कुछ कल्पित कथाओं द्वारा उपदेश देना, देवमहिमा तथा तीर्थमहिमा के वर्णन द्वारा जनसाधारण में धर्मबुद्धि स्थिर रखना था। इसी से व्यास ने सूत (भाट या कथक्केड़) जाति के एक पुरुष को अपनी संकलित आदिपुराणसंहिता प्रचार करने के लिये दी।

6.5 सारांश

इस इकाई के माध्यम से आपने जान लिया है कि पुराण भारतीय संस्कृति के अमूल्य धरोहर है। इसमें निहित ज्ञान से मनुष्य को भारतीय संस्कृति को समझने में सहायता प्राप्त होगी। पुराण जीवन दर्शन को आत्मसात करने की प्रेरणा देता हैं। प्राचीन भारत की वस्तुस्थिति समझने में पुराण की अद्वितीय भूमिका है। इसलिए प्रत्येक भारतवासियों को वेद एवं उपनिषद के साथ-साथ पुराण का भी अध्ययन अनिवार्य रूप से करना चाहिये।

6.7 पारिभाषिक शब्दावली

पुराण – पुरा नवं पुराणम्। प्राचीन होकर भी नवीन होना पुराण है।
मत्स्यावतार – भगवान श्रीहरि का मछली के रूप में अवतार
माहात्म्य – महत्व
निहित – समाहित
आत्मसात – पूरी तरह से ग्रहण कर लेना
अद्वितीय – जिसके समान दूसरा कोई न हो।

6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भारतीय संस्कृति
वैदिक साहित्य का इतिहास

श्रीमद्भागवतमहापुराण

स्कन्द पुराण

मत्स्य पुराण

6.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पुराण का विस्तृत वर्णन कीजिये।
2. पुराणों की महत्ता पर प्रकाश डालिये।
3. भारतीय संस्कृति को समझने में पुराणों का क्या योगदान है?

खण्ड – 2
स्वस्तिवाचन, संकल्पादि परिचय

इकाई – 1 स्वस्तिवाचन, संकल्प एवं न्यास

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 स्वस्तिवाचन परिचय
1.4 संकल्प एवं न्यास
1.5 सारांश
1.6 शब्दावली
1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई द्वितीय खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इसके पूर्व की इकाई में आपने पंचांग का ज्ञान कर लिया है। इस इकाई में कर्मकाण्ड से सम्बन्धित स्वस्तिवाचन, संकल्प एवं न्यास का अध्ययन करेंगे। किसी भी पूजन के आरम्भ में स्वस्तिवाचन का विधान है। स्वस्ति का अर्थ है – कल्याण। उसी क्रम में सकाम एवं निष्काम संकल्प तथा न्यास की बात कही गई है।
पूजन में संकल्प के बिना उसकी सिद्धि नहीं होती। अत: संकल्प एक आवश्यक अंग है।
इस इकाई में आप स्वस्तिवाचन, संकल्प एवं न्यास का विधिवत् अध्ययन करेंगे, जिससे आपको तत्सम्बिन्धत ज्ञान हो जायेगा।

1.2 उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ स्वस्तिवाचन कैसे किया जाता है, जान लेंगे।
- ❖ संकल्प का क्या महत्व है। समझा सकेंगे।
- ❖ सकाम एवं निष्काम संकल्प को बता सकेंगे।
- ❖ न्यास क्या है। स्पष्ट कर पायेंगे।
- ❖ कर्मकाण्ड में स्वस्तिवाचन, संकल्प एवं न्यास की विधि को बता सकेंगे।

1.3 स्वस्तिवाचन परिचय

भारतीय सनातन परम्परा की पूजन सम्बन्धी क्रिया में स्वस्तिवाचन का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। स्वस्ति का शाब्दिक अर्थ है– कल्याण। पूजन क्रिया में प्रथमतया स्वस्तिवाचन कर्म देवताओं को प्रसन्न करने के लिए , वातावरण को शुद्ध करने के लिए तथा सभी अनिष्टों का शमन कर शान्ति की स्थापना करने के लिए किया जाता है। सर्वप्रथम आचमन पवित्रादि करके गौरी गणेश की प्रतिमा के समक्ष हाथ में अक्षत, पुष्प जलादि लेकर स्वस्तिवाचन करना चाहिये। इसका मन्त्र इस प्रकार है –

हरि: ॐ आ नो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतासउद्भिद:। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना गॅू रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना गॅू सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयु: प्रतिरन्तु जीवसे। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं

मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं वरूण गूँ सोममश्विना सरस्वती न: सुभगा मयस्करत् । तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौ:। तद् ग्रावाण: सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्णया युवम्। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसदवृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये ।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा: । स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु। पृषदश्वा मरूत: पृश्निमातर: शुभं यावानो विदथेषु जग्मय:। अग्निजिह्वा मनव: सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह । भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा गूँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तो:। अदितिद्यौंरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्र:। विश्वे देवा अदिति: पंच जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्। द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष गूँ शान्ति:पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्व गूँ शान्ति: । शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि। यतो यत: समीहसे ततो नो अभयं कुरू। शं न: कुरू प्रजाभ्योऽभयं न: पशुभ्य:। सुशान्तिर्भवतु।

श्रीमन्महागणाधिपतये नम:। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नम:। उमामहेश्वराभ्यां नम:। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नम:। शचीपुरन्दराभ्यां नम:। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नम: । इष्टदेवताभ्यो नम:। कुलदेवताभ्यो नम:। ग्रामदेवताभ्यो नम:। वास्तुदेवताभ्यो नम:। स्थानदेवताभ्यो नम:। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम:। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नम:। ऊँ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नम:

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक:।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक:।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।
अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो य: सुरासुरै:।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरूषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गंगा भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। हाथ में लिये अक्षत-पुष्प को गणेशाम्बिका पर चढ़ा दे। इसके बाद दाहिने हाथ में जल, अक्षत और द्रव्य लेकर संकल्प करें –

1.4 संकल्प एवं न्यास

निष्काम संकल्प –

ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे

जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे ..... नगरे : / ग्रामे / क्षेत्रे ..... वैक्रमाब्दे ..... संवत्सरे ..... मासे..... शुक्ल/ कृष्णपक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... प्रात: / सायंकाले ..... गोत्र: ..... शर्मा / वर्मा / गुप्त: अहं ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ..... देवस्य पूजनं करिष्ये ।

सकाम संकल्प -

यदि सकाम पूजा करनी हो तो कामना - विशेष का नाम लेना चाहिये - या निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये -

ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे ..... नगरे : / ग्रामे / क्षेत्रे ..... वैक्रमाब्दे ..... संवत्सरे ..... मासे..... शुक्ल/ कृष्णपक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... प्रात: / सायंकाले ..... गोत्र: ..... शर्मा / वर्मा / गुप्त: अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थमाधिभौतिकाधिदैविकाध्यात्मिकत्रिविधतापशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं नित्यकल्याणलाभाय भगवत्प्रीत्यर्थं ..... देवस्य पूजनं करिष्ये

इस प्रकार पूजन करने के लिए इच्छारिहत निष्काम संकल्प तथा इच्छासहित सकाम संकल्प करना चाहिए।

संकल्प के पश्चात् न्यास करना चाहिये। वृहत्पाराशरस्मृति में लिखा है कि –

यथा देवे तथा देहे न्यासं कुर्याद् विधानत:। अर्थात् यथा देवताओं के लिए न्यास करते हैं वैसे ही सम्पूर्ण शरीर के रक्षार्थ न्यास करना चाहिये। न्यास करने से मनुष्य में देवत्व का आधान होता है।

अंग न्यास –

सहस्रशीर्षा पुरूष: सहस्राक्ष: सहस्रपात्।
स भूमि गॅू सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशागुंलम्॥ (बायॅा हाथ का स्पर्श करें)
पुरूष एवेद गॅू सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ (दाहिने हाथ का स्पर्श करें)
एतावानस्य महिमातो ज्यायॅाश्च पुरूष:।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (बायें पैर का स्पर्श करें)

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूष: पादोऽस्येहाभवत् पुन: ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।। (दाहिने पैर का स्पर्श करें)
ततो विराडजायत विराजो अधि पुरूष: ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुर: ।। (बायॉ जानु का स्पर्श करें)
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत: सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्तॉश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ।। (दायॉ जानु का स्पर्श करें)
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋच: सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा गूँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।। (बायॉ कटि भाग का स्पर्श करें)
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादत: ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावय: ।। (दायॉ कटि भाग का स्पर्श करें)
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरूषं जातमग्रत: ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ।। (नाभि का स्पर्श करें)
यत्पुरूषं व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमुरू पादा उच्येते ।। (हृदय का स्पर्श करें)
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीदबाहू राजन्य: कृत: ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पदभ्या गूँ शूद्रो अजायत ।। (वाम बाहु का स्पर्श करें)
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।। (दाहिने बाहु का स्पर्श करें)
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गूँ शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत ।
पदभ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकॉ अकल्पयन् ।। (कण्ठ का स्पर्श करें)
यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि: ।। (मुख का स्पर्श करें)
सप्तास्यासन् परिधयस्रि: सप्त समिध: कृता: ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरूषं पशुम् ।। (ऑख का स्पर्श करें)
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ।। (मूर्धा का स्पर्श करें)

पंचांग न्यास –

अदभ्य: सम्भृत: पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मण: समवर्तताग्रे।

तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ (हृदयाय नम:)

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्यवर्णं तमस: परस्तात् ।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ (शिरसे स्वाहा)

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते ।

तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ (शिखाय वषट्)

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहित:।

पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रूचाय ब्राह्मये॥ (कवचाय हुम दोनों कंधो स्पर्श करें)

रूचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे ॥ (अस्त्राय फट, बॉयी हथेली पर ताली बजाये)

करन्यास –

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्य: कृत:।

उरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्या गॅू शूद्रो अजायत ॥ अंगुष्ठाभ्यां नम: (दोनों अंगूठों का स्पर्श करें)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत। तर्जनीभ्यां नम: । (दोनों तर्जनीयों का स्पर्श करें)

नाभ्यां आसीदन्तरिक्ष गॅू शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत।

पदभ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकॉ अकल्पयन् । मध्यमाभ्यां नम: (दोनों मध्यमा अंगूलियों का स्पर्श करें)

यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि: ॥ अनामिकाभ्यां नम: (दोनों अनामिकाओं का स्पर्शकरें)

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रि: सप्त समिध: कृता:।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरूषं पशुम् ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नम: (दोनों कनिष्ठिकाओं का स्पर्श करें)

ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:।

करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: (दोनों करतल और करपृष्ठों का स्पर्श करें)

बोध प्रश्न –

1. स्वस्ति का अर्थ होता है –

क. कल्याण ख. सुन्दर ग. इन्द्र घ. आशीष

2. पूजन के आरम्भ में किया जाता है –

क. अग्नि पूजन ख. ग्रह पूजन ग. संकल्प घ. स्वस्तिवाचन

3. संकल्प के कितने प्रकार है –

क. 2 ख. 3 ग. 4 घ. 5

4. न्यास कितने प्रकार के कहे गये हैं।

क. 2 ख. 3 ग. 4 घ. 5

1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन से आपने जान लिया है कि भारतीय सनातन परम्परा की पूजन सम्बन्धी क्रिया में स्वस्तिवाचन का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। स्वस्ति का शाब्दिक अर्थ है– कल्याण। पूजन क्रिया में प्रथमतया स्वस्तिवाचन कर्म देवताओं को प्रसन्न करने के लिए , वातावरण को शुद्ध करने के लिए तथा सभी अनिष्टों का शमन कर शान्ति की स्थापना करने के लिए किया जाता है। सर्वप्रथम आचमन पवित्रादि करके गौरी गणेश की प्रतिमा के समक्ष हाथ में अक्षत, पुष्प जलादि लेकर स्वस्तिवाचन करना चाहिये।

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

स्वस्ति – कल्याण

सनातन – शाश्वत परम्परा

अनिष्ट – अशुभ

वाचन – बोलना

पूषा – द्वादशादित्य में एक देवता

विश्वदेव – देवता का नाम

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क 2. घ 3. क 4. घ

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्मपूजा प्रकाश

कर्मकाण्ड प्रदीप

हिन्दू संस्कार

ग्रहशान्ति

मन्त्रसंहिता

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का लेखन कीजिये।
2. संकल्प से आप क्या समझते है। सकाम संकल्प का लेखन करें।
3. निष्काम संकल्प से क्या तात्पर्य है।
4. पूजन में संकल्प का महत्व बतलाइये।

इकाई– 2 गणेश एवं षोडशमातृका पूजन

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 गणेश पूजन
2.3.1 षोडशमातृका पूजन
2.4 सारांश
2.5 शब्दावली
2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना-

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-120 की द्वितीय खण्ड की दूसरी इकाई 'गणेश एवं षोडशमातृका पूजन' से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई में आपने स्वस्तिवाचन, पंचांगन्यास एवं करन्यास का अध्ययन कर लिया है। इस इकाई में आप गणेश एवं षोडशमातृका पूजन का अध्ययन करने जा रहे है।

सर्वविदित है कि पूजन में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है। पश्चात् उसी क्रम में अन्य पूजन में षोडशमातृका पूजन होती है। कर्मकाण्ड में इन दोनों पूजन का ही विशेष महत्व है।

गणेश को 'विघ्नहर्ता' कहा गया है, अत: पूजन में सर्वप्रथम इनकी पूजन करने से सम्बन्धित कार्य में बाधा नहीं आती है। आइए गणेश एवं षोडशमातृका पूजन का अध्ययन करते है।

2.2 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ गणेश जी का पूजन कैसे किया जाता है, जान जायेंगे।
- ❖ गणेश पूजन का क्या महत्व है, इसे समझा पायेंगे।
- ❖ षोडश मातृका क्या है, परिभाषित कर सकेंगे।
- ❖ षोडशमातृकापूजन विधि क्या है, बता सकेंगे।
- ❖ षोडशमातृका पूजन का महत्व समझा सकेंगे।

2.3 गणेश पूजन

भारतीय सनातन परम्परा में यह निर्विवाद है कि सभी पूजन कर्मो में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है, साथ में गौरी माता की पूजा भी होती है। पूजन की प्रक्रिया में क्या क्या होता है इसका अध्ययन आप पूर्व के इकाई में कर चुके हैं। प्राचीन काल में पूजन कर्म केवल वैदिक मन्त्रों से किये जाते थे, क्योंकि वह वेदप्रधान युग था। कालांतर में स्थितियॉ बदली, तो अब संस्कृतज्ञों एवं वेदज्ञों की संख्या भी घटती चली गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्यों ने लौकिक मन्त्र का निर्माण किया। इस प्रकार अब लौकिक और वेद मन्त्र से पूजन की जाती है। यहॉ दोनों का समावेश किया जा रहा है आइए गणपति और गौरी पूजन का अध्ययन करते है –

सर्वप्रथम हाथ में अक्षत लेकर गणपति – गौरी का ध्यान निम्नलिखित मन्त्र से करना चाहिए –

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम् ।

उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।

श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः , ध्यानं समर्पयामि ।

इसके पश्चात् हाथ में अक्षत पुष्प लेकर आवाहन करना चाहिए । आवाहन के निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें –

ऊँ गणानां त्वा गणपति गूँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गूँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गूँ हवामहे व्वसो मम् ।। आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्धधम् ।।

एह्योहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष ।

मांगल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा दे । पुनः अक्षत लेकर गणेश जी की दाहिनी ओर गौरी जी का **आवाहन करें** –

ऊँ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् ।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गौर्ये नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

आवाहन के पश्चात् गणपति और गौरी को स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्र से उनकी प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए -

प्रतिष्ठा -

ऊँ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गूँ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम् ।।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

आसन के लिए अक्षत समर्पित करे।

पश्चात् निम्न मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, पुनराचमनीय करें –

ऊँ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥

एतानि पाद्यार्घ्याचनमनीयस्नानीयपुनराचमनीययानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। इतना कहकर जल चढ़ा दे।

दुग्ध स्नान –

ऊँ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।

पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान कराये।

दधिस्नान -

ऊँ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्राण आयू गूँ षि तारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।

दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि। दधि से स्नान कराये।

घृत स्नान –

ऊँ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिघृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृत से स्नान कराये।

मधुस्नान –

ऊँ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव गूँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।

तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: मधुस्नानं समर्पयामि। मधु से स्नान कराये।

शर्करास्नान –

ऊँ अपा गॅू रसमुद्वयस गॅू सूर्ये सन्त गॅू समाहितम् । अपा गॅू रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करा से स्नान कराये।

पञ्चामृत स्नान –

ऊँ पञ्च नद्य: सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतस:। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।

ऊँ पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्धं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृत से स्नान कराये।

गन्धोदक स्नान –

ऊँ अ गॅू शुना ते अ गॅू शु: पृच्यतां परूषा परू:। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत:।

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनि:सृतम् ।
इदं गन्धोधकस्नानं कुंकुमाक्तं च गृह्यताम् ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। गन्धोदक से स्नान कराये।

शुद्धोद्धक स्नान –

ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विना:। श्येत: श्येताक्षोऽरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:॥

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: शुद्धोद्धकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोद्धक स्नान कराये।

आचनम - शुद्धोद्धकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमन के लिए जल दे।

वस्त्र –

ऊँ युवा सुवासा: परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमान:। तं धीरास: कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो ३ मनसा देवयन्त:।

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमत: शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्र समर्पित करे ।

आचमन – वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्र –

ऊँ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्व:। वासो अग्ने विश्वरूप गूँ सं व्ययस्व विभावसो

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किंचिन्न सिध्यति।

उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रभावे रक्तसूत्र समर्पित करे ।

आचमन - उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत -

ऊँ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।

आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:॥

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्॥

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीत समर्पित करे ।

आचमन - यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

चन्दन –

त्वां गन्धर्वा अखनॅस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पति:। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। चन्दन समर्पित करे ।

अक्षत –

ऊँ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता: सुशोभिता:।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि। अक्षत अर्पित करे ।

पुष्पमाला –

ऊँ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरूधः पारयिष्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पमाला समर्पित करे ।

दूर्वा –

ऊँ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परूषः परूषस्परि । एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि। दुर्वा समर्पित करे ।

सिन्दूर –

ऊँ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरूषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि। सिन्दूर समर्पित करे ।

अबीर – गुलाल -

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्
पुमान् पुमा गॅू सं परि पातु विश्वतः।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। अबीर आदि समर्पित करे ।

सुगन्धित द्रव्य –

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्
पुमान् पुमा गॅू सं परि पातु विश्वतः।

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भूतम्।

गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि। द्रव्य समर्पित करे ।

धूप –

ऊँ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम गूँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि। धूप दिखाये।

दीप –

ऊँ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योति : सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निा योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि। दीप दिखाये ।

हस्त प्रक्षालन - ऊँ ह्रीषीकेशाय नमः कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य –

ऊँ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गूँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकॉ अकल्पयन् ।

ऊँ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ऊँ प्राणाय स्वाहा । ऊँ अपानाय स्वाहा । ऊँ समानाय स्वाहा। ऊँ उदानाय स्वाहा। ऊँ व्यानाय स्वाहा । ऊँ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्य निवेदित करे ।

नैवद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल –

ॐ या: फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:। वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गॅू हस: ॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलवाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , ऋतुफलानि समर्पयामि।

फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि

उत्तरापोशन - उत्तरापोऽशनार्थे जलं समर्पयामि। गणेशाम्बिकाभ्यां नम:।

करोद्वर्तन -

ॐ अ गॅू शुना ते अ गॅू शु: पृच्यतां परूषा परू:। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत:।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।

करोद्ववर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल –

ॐ यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि:॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।

दक्षिणा –

ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , कृताया: पूजाया: सांगुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

आरती –

ॐ इद गॅू हवि: प्रजननं मे अस्तु दशवीर गॅू सर्वगण गॅू स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि॥ अग्नि: प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि।

पुष्पांजलि –

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा -

ऊँ ये तीर्थाथ्न प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषडिंगणः। तेषा गॅू सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्य -

ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प , दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े -

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्य समर्पयामि।

अन्त में हाथ जोड़कर प्रार्थना करे –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमोस्ते॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमोस्ते ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय करिरूपाय ते नम:
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति ॥
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति ।
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव
त्वां वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या ॥
विश्वस्य बीजं परमासि माया
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् ।
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतु: ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।

गणेशपूजने कर्म यन्नयूनमधिकं कृतम् ।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयताम् न मम ॥

ऐसा कहकर समस्त पूजन कर्म को गणपति – गौरी को समर्पित कर दे तथा पुन: नमस्कार करना चाहिए ।

बोध प्रश्न-

1. समस्त पूजन में प्रथम पूजन होता है ?
   क. विष्णु ख. शिव ग. गणेश घ. ब्रह्मा
2. गजानन का अर्थ है -
   क. घोड़े के समान मुख ख. हाथी के समान मुख ग. ग्राह के समान मुख घ. कोई नहीं
3. गौरी जी का स्थान गणेश जी के होता है -
   क. दायॉ ख. बायॉ ग. सामने घ. पीछे

4. गणेशाम्बिका का अर्थ है -
   क. गणेश ख. गणेश – गौरी ग. गणेश – दुर्गा घ. शिव – गणेश
5. हिरण्यगर्भगर्भस्थं ..... विभावसो।
   अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
   क. हेमबीज ख. ताम्बूलं ग. कर्पूरं घ. कोई नहीं

2.3.1 षोडश मातृका पूजनम्

मातृका पूजन पंचांग पूजन का अंग है गणेश पूजन के अनन्तर मातृकाओं का पूजन होता है।

सर्वप्रथम प्रधान संकल्प करें ------

ऊँ विष्णःविष्णुःविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूये अमुकायने अमुकऋतौ महामांगल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे एवं ग्रहगुण - विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्निकोऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सर्वपापक्षयपूर्वक- दीर्घायुर्विपुल - धन-धान्य- पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न- सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-कीर्तिलाभ शत्रु पराजय सदभीष्टसिद्ध्यर्थं ..... गणेशपूजनं करिष्ये।

षोडश मातृका चक्र स्थापना -

षोडशमातृकाओं की स्थापना के लिये पूजक दाहिनी ओर पॉच खड़ी पाइयों और पॉच पड़ी पाइयों का चौकोर मण्डल बनायें। इस प्रकार सोलह कोष्ठक बन जायेंगे। पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन और स्थापन करें। कोष्ठकों में रक्त चावल, गेहूँ या जौ रख दे। पहले कोष्ठक में गौरी का आवाहन होता है, अत: गौरी के आवाहन के पूर्व गणेश का भी आवाहन पुष्पाक्षतों द्वारा कोष्ठक में करे। इसी प्रकार अन्य कोष्ठकों में भी निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए आवाहन करे -

आवाहन एवं स्थापन मन्त्र –

ऊँ गणपतये नम:, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ गौर्ये नम:, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पद्मायै नमः, पद्मावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ जयायै नमः , जयामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मातृभ्यों नमः, मातृः आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पुष्टयै नमः पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि

ॐ तुष्टयै नमः तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि

ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि।

षोडशमातृका - चक्र

आत्मनः कुलदेवता १६	लोकमातरः १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टि १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृति १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी गणेश १

इस प्रकार षोडशमातृकाओं का आवाहन, स्थापना कर **ऊँ मनोर्जूति जुषतामा... 0 ,** मंत्र से अक्षत छोड़ते हुए मातृका मण्डल की प्रतिष्ठा करनी चाहिये। तत्पश्चात् निम्नलिखित नाम मन्त्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन करनी चाहिये –

ऊँ गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः ।

विशेष : - मातृकाओं को यज्ञोपवीत नही चढ़ाना चाहिये।

नैवेद्य के साथ - साथ घृत और गुड़ का भी नैवेद्य लगाना चाहिये।

विशेष अर्घ्य दे।

फल का अर्पण - नारियल आदि फल अंजलि में लेकर प्रार्थना करे –

ऊँ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरूध्वं सगणाधिपाः ।।

इस तरह प्रार्थना करने के पश्चात् नारियल आदि फल चढ़ाकर हाथ जोड़कर बोले –

गेहे वृद्धिशतानि भवन्तु, उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ।

इसके बाद –

अनया पूजया गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

इस वाक्य का उच्चारण कर मण्डल पर अक्षत छोड़कर प्रणाम करना चाहिये -

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ।।

2.4 सारांश -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में यह निर्विवाद है कि सभी पूजन कर्मो में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है, साथ में गौरी माता की पूजा भी होती है। पूजन की प्रक्रिया में क्या क्या होता है इसका अध्ययन आप पूर्व के इकाई में कर चुके हैं। प्राचीन काल में पूजन कर्म केवल वैदिक मन्त्रों से किये जाते थे, क्योंकि वह वेदप्रधान युग था। कालांतर में

स्थितियॉ बदली, तो अब संस्कृतज्ञों एवं वेदज्ञों की संख्या भी घटती चली गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्यों ने लौकिक मन्त्र का निर्माण किया। इस प्रकार अब लौकिक और वेद मन्त्र से पूजन की जाती है। गणपति – गौरी पूजन के साथ – साथ मातृका पूजन में षोडशमातृका पूजन (जिसमें 16 कोष्ठक बने होते है) का भी ज्ञान प्राप्त किया है।

2.5 शब्दावली-

वेदप्रधान – जहॉ वेद की प्रधानता हो ।

लौकिक - सांसारिक।

वैदिक – वेद से सम्बन्धित ।

विघ्नेश्वर - विघ्न को हरने वाले ईश्वर ।

आवाहयामि – आवाहन करता हूँ

पूजयामि – पूजन करता हूँ

च – और

घृत – घी

मधु – शहद

शर्करा – चीनी

पंचामृत – दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल का मिश्रण

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ग

2. ख

3. क

4. ख

5. क

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कर्मकाण्ड प्रदीप

2- संस्कार दीपक

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गणपति-गौरी पूजन का विस्तार से वर्णन कीजिये।
2. षोडशमातृका से आप क्या समझते है ? स्पष्ट कीजिये।
3. कर्मकाण्ड में गणपति-गौरी के पूजन के महत्व पर प्रकाश डालिये।
4. लौकिक मन्त्रों द्वारा गणपति पूजन का वर्णन करें।
5. षोडशमातृका पूजन के वैदिक मन्त्रों का उल्लेख करें।

इकाई – 3 कलश एवं पुण्याहवाचन

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 कलश पूजन
3.3.1 पुण्याहवाचन
बोध प्रश्न
3.4 सारांश
3.5 पारिभाषिक शब्दावली
3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.7 सहायक पाठ्यसामग्री
3.8 सन्दर्भग्रन्थ सूची
3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–120 के द्वितीय खण्ड की तीसरी इकाई 'कलश पूजन एवं पुण्याहवाचन' से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने पंचांग परिचय, गणेश – गौरी पूजन एवं पंचांग पूजन का अध्ययन कर लिया है।

पूजन के क्रम में गणेशाम्बिका पूजन के पश्चात् कलश पूजन का विधान है तथा उसी क्रम में पुण्याहवाचन का भी स्थान आता है। कलश में देवताओं का निवास होता है, और वह शुभता का प्रतीक माना जाता है।

आइए इस इकाई में कलश पूजन एवं पुण्याहवाचन का अध्ययन करते है।

3.2 उद्देश्य -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

1. कलश पूजन विधान को समझ लेंगे।
2. कलश पूजन के महत्व को समझा सकेंगे।
3. कलश पूजन के मन्त्रों को जान जायेंगे ।
4. पुण्याहवाचन क्या है, परिभाषित कर सकेंगे।
5. पुण्याहवाचन विधान का वर्णन कर सकेंगे।

3.3 कलश पूजन

कर्मकाण्ड में कलश पूजन का विशेष महत्व है। कलश मंगलकारक होने के साथ - साथ शुभता का प्रतीक भी माना जाता है। यदि कलश को परिभाषित करना हो तो इस प्रकार कर सकते हैं - देवताओं की कलायें (दिव्य तत्त्व या दिव्य अंश) जिसमें निवास करें वही 'कलश' है। इसका तात्पर्य यह है कि देवताओं के दिव्य अंश को मन्त्र पढकर हम इस कलश में आवाहन करते हैं तथा वे तत्त्व इस कलश में अनुष्ठान पूर्ण होने तक सुरक्षित रहते हैं जिनका दर्शन हमें दिव्य जल के रूप में होता है। इसीलिए कलशपूजन के समय - ''यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव''' ऐसा कहते हैं। अस्तु !

इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि देवताओं की दिव्य कलाओं का जिसमें आवाहन किया जाय तथा अनुष्ठानपूर्ण होने तक जिसमें उन दिव्यतत्त्वों को सुरक्षित रखा जाय उसी का नाम कलश है। संभवतः इसीलिए कलशपूजन के क्रम में यह प्रसिद्ध श्लोक भी पढ़ा जाता है।

''कला कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।

संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।।''

अब हम आपसे इसके ऐतिहासिक स्वरूप की भी कुछ चर्चा संक्षेप में करेंगे जो यहाँ अनिवार्य है जिसे शायद आप जानते भी होंगे।

पौराणिक दृष्टि से इस कलश का प्रादुर्भाव समुद्र से होता है क्योंकि जब अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र-मन्थन हो रहा था, तब उसमें से 14 रत्न निकले जिसमें स्वयं भगवान् धन्वन्तरि अमृत से भरे हुए कलश को लेकर प्रकट हुए। ये चौदह रत्न निम्नलिखित हैं -

1. लक्ष्मी,
2. मणि,
3. रम्भा,
4. वारुणी (मदिरा),
5. अमिय (अमृत),
6. शंख,
7. गजराज (ऐरावत हाथी),
8. कल्पद्रुम
9. चन्द्रमा
10. कामधेनु,
11. धन,
12. धन्वन्तरि (वैद्य),
13. विष,
14. उच्चैःश्रवा (घोड़ा)।

इसे याद रखने के लिए एक हिन्दी का प्रसिद्ध दोहा है जिसे मैं आपको बताने जा रहा हूँ।

श्रीमणिरम्भावारुणी अमियषंखगजराज।

कल्पद्रुमशशिधेनुधन धन्वन्तरिविषवाजि ।।

यह पूरा प्रसंग श्रीमद्भागवत के अष्टम-स्कन्ध में वर्णित है। प्रसंगवश इसे मैने बताया। इसे विषयान्तर न समझें। इसी का संकेत कलषपूजन के समय वरुण-प्रार्थना के रूप में किया गया है।

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।

उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।

इसके आगे के श्लोकों की चर्चा प्रसंग आने पर हम आपसे करेंगे।

यह कलश उसी समुद्रमन्थन का प्रतीक आज भी है। इसमें भरा हुआ जल ही अमृत है। जटाओं से युक्त ऊँचा नारियल ही मानो मन्दराचल है। कलश की ग्रीवा में लपेटे गये रक्षासूत्र ही वासुकि है। मन्थन करने वाले यजमान एवं पुरोहित हैं।

यदि इस कलश को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो इस पृथिवी को ही कलश के रूप में स्थापित किया जाता है। चूँकि पृथिवी एक कलश की भाँति है जो जल को सम्भालकर लगातार वृत्ताकार में घूम रही है।

दूसरी बात यह है कि ब्रह्मा द्वारा निर्मित जगत् की पहली सृष्टि जल है (अप एव ससर्जादौ) जिसके देवता वरुण है। इसलिए भी आदि सृष्टि के प्रतीक के रूप में हम कलश स्थापन करते हैं।

यही नहीं और भी देखें, किसी भी अनुष्ठान के षुभारम्भ में हम आचमन जल से ही करते हैं, ऐसा क्यों? इसका समाधान देते हुए षतपथब्राह्मण ग्रन्थ में कहा गया है कि जल पवित्रतम होता है तथा उपासक या अनुष्ठान करने वाला व्यक्ति (अमेध्य) अपवित्र होता है क्योंकि वह स्वभावतः मिथ्या (झूठ) बोलता रहता है। अतः इस जल के आचमन से वह (उपासक) पवित्र हो जाता है, यही रहस्य आचमन का है। जिसका मूल-वचन भी प्रमाण के रूप में आपके सामने रखा जा रहा है। 'तद्यदप उपष्पृषति - अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति तेन पूतिरन्तरतः। मेध्या वा आपः। मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति। पवित्रं वा आपः। पवित्रपूतो व्रतमुपायानीति तस्माद्वा अप उपस्पृषति।

इसका प्रसंग भी संक्षेप में आपको बताया जा रहा है - यह एक वैदिक यज्ञ है जिसका नाम दर्शपूर्णमास है। इसे करने के लिए उद्यत यजमान आहवनीय एवं गार्हपत्य अग्नि के बीच (मध्य) में पूर्वाभिमुख खड़े होकर व्रतग्रहण के लिए जल से आचमन करता है। तथा व्रत करने के लिये संकल्प लेता है। यही आचमन का प्रयोजन बताया गया है। अर्थात् जल अत्यन्त पवित्र होता है, मनुष्य उसे अनुष्ठानकाल में पीकर भीतर एवं बाहर से पवित्र होता है।

कलश स्थापन विधि एवं पूजन

सबसे पहले कलश को जल से पवित्र करना चाहिए। इसके बाद यदि सर्वतोभद्र-मण्डल या किसी भी मंडल के ऊपर जो छोटी चौकी पर बने हों उस पर यदि कलश स्थापन करना हो तो मण्डल के बीच में पर्याप्त चावल रखकर जिससे कलश स्थिर रहे गिरे, न इस प्रकार रखना चाहिए। जो बड़े बड़े यागों मे आप देखते भी है। यदि पृथ्वी पर कलश स्थापन करना हो तो कलश के नीचे पर्याप्त

मिट्टी रखकर उस पर कुंकुम या रोली आदि से अष्टदल कमल बनाकर, कलश मे स्वस्ति का चिन्ह बनाकर उसमे कलाबा (रक्षासूत्र) तीन बार लपेटकर बाँध देना चाहिए। कलश के ऊपर भी रखने के लिए एक कसोरे मे चावल भरकर उस पर अष्टदल या स्वस्ति का चिन्ह बनाकर नारियल में लाल रंग का वस्त्र लपेटकर पहले से ही तैयार रखना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि पूजा की तैयारी पूजन से पहले ही कर लेनी चाहिए। सभी आवश्यक उपचारों को पहले से ही व्यवस्थित तरीके से रखकर तब पूजन प्रारम्भ करना या कराना चाहिये । इससे पूजन में व्यग्रता नहीं होती है। शान्ति बनी रहती है । अस्तु

यजमान कलश के नीचे की भूमि का स्पर्श करे इस मन्त्र को पढ़ते हुए-

ऊँ महीद्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञ मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।

एक बात अवश्य यहाँ ध्यान दें कि सम्पूर्ण मन्त्र पढ़ने के बाद ही क्रिया करनी चाहिए । क्योंकि मन्त्र द्रव्य एवं देवता के स्मारक होते हैं, जैसा कि लिखा है - ''प्रयोग समवेतार्थस्मारकाः मन्त्रा'' अतः मन्त्र के प्रारंभ में या आधे में क्रिया न करें मन्त्र पूरा हो जाने के बाद ही क्रिया करनी चाहिए। यही शास्त्रीय विधि है। इसके बाद -

ऊँ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।

यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि।।

उपरोक्त इस मन्त्र को पढ़कर कलश के नीचे की मिट्टी पर सप्तधान्य रखें । अब आप पूछेगे कि सप्तधान्य क्या होता है ? मैं बताता हूँ-

(सप्तधान्य)

(यव गोधूम धान्यानि तिलाः कंगुस्तथैव च।

श्यामकाश्चणकाष्चैव सप्तधान्यानि संविदुः।।)

अर्थात् यव, गेहूँ, धान, तिल, कंगु, (एक प्रकार का धान्य विशेष), सावाँ (धान्य विशेष), चना ये सप्त धान्य होते है । इन्हें कलश के नीचे रखना चाहिए । उपलब्ध न होने पर उस द्रव्य के अभाव में अक्षत (चावल) छोड़ना चाहिए।

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर सप्तधान्य के ऊपर कलश रखें।

ऊँ आजिघ्र कलशं मह्यात्वाव्विशन्त्विन्दवः।

पुनरुर्जानिवर्तस्वसानः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वती पुनर्म्मांविषताद्रयिः।''

इसके बाद नीचे-लिखे मन्त्र को पढ़कर कलश में जल डाले। यहाँ जल डालने से अभिप्राय

कलश को जल से भरने से है।

ऊँ वरुणस्योत्तम्भ नमसिव्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽऋत- सदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर कलश मे चन्दन छोड़ें-

ऊँ त्वांगन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर सर्वौषधी कलश के भीतर छोड़े-

ऊँ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।

मनैनुबभ्रूणामह षतन्धामानि सप्त च।।

यहाँ सर्वौषधी किसे कहते हैं आपको बताया जा रहा है-

(मुरा माँसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनी द्वयम्।

सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधि गणः स्मृतः।।)

इसके बाद कलश में हरी दूर्वा छोड़ें-

ऊँ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण षतेन च।।

दूर्वा (दूब) छोड़ने के बाद पंचपल्लव को कलश में नीचे लिखे मत्र से छोड़ें-

ऊँ अश्वत्थे निषदनम्पर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता ।

गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ।।

पंचपल्लव में वट, गूलर, पीपल, आम तथा पाकड के पल्लव (पत्ते) लिए जाते है। जैसा कि लिखा है-

''न्यग्रोधोदुम्बरोऽष्वत्थष्चूतः पलक्षस्तथैव च''।

पंचपल्लव छोड़ने के बाद कलश में सप्तमृत्तिका निम्न मंत्र से छोड़े-

ऊँ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेषनी यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।

सात जगह की मिट्टी को सप्तमृत्तिका कहते है। जैसे-

(अश्वस्थानाद्गजस्थानादवल्मीकात्संगमाध्रूरदात्

राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदऽआनीय निःक्षिपेत्।।)

अर्थात् घोड़े के स्थान की, हाथी के, स्थान की, दीमक, संगम, तालाब राजद्वार तथा गोशाले

की मिट्टी को लाकर कलश में छोड़ना चाहिए।

सप्तमृत्तिका के बाद पूगीफल (सोपाड़ी) कलश में नीचे लिखे मत्र से छोड़ें-

ऊँ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽपुष्पायाष्चपुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचत्व हसः।।

इसके बाद नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर पंचरत्न कलश में छोड़ दे-

ऊँ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत।

दधद्रत्नानि दाषुषे।।

पंचरत्नों के नाम निम्नलिखित है-

(कनकं कुलिषं भुक्ता पद्मरागं च नीलकम् ।

एतानि पंचरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत् ।।)

पंचरत्न के बाद सुवर्ण या चाँदी का सिक्का कलश में नीचे के मंत्र से छोड़े-

ऊँ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।

स दाधारपृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

इसके बाद कलश के उपरि भाग में वस्त्र से लपेटकर कलावे से बाँध दें-

ऊँ सुजातो ज्योतिषासहषर्म्मव्वरुथमासदत्स्वः।

व्वासोऽग्नेव्विष्वरूपं संव्ययस्वव्विभावसो।।

इसके बाद नीचे लिखे मंत्रों से कलश पर पूर्णपात्र अर्थात् पहले से एक कसोरे या ताम्रपात्र में कलश को ढकने के लिए चावल भरकर उस पर स्वस्ति या अष्टदल बनाकर रखें, तथा नारियल को उस पर रखकर कलश पर रखें

ऊँ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत।

व्वस्न्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जं षतक्रतो।।

कलश पर स्वात्माभिमुख नारिकेल सहित पूर्णपात्र रखकर नीचे के मंत्र से कलश पर वरुण देवता का आवाहन करें।

ऊँ तत्त्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाषास्ते यजमानोहविर्भिः।

अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुषं समानऽआयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् कलषे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सषक्तिकमावाहयामि। स्थापयामि। अपांपतये वरुणाय नमः। इसके बाद पंचोपचार से (गन्ध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य) से वरुण का पूजन करके

कलश में गंगादि नदियों का आवाहन करें। आवाहन करते समय, अक्षत बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से दो दो दाना कलश पर छोड़ें-

कला कला हि देवानां दानवानां कलाःकलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलषस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णवेणा च गंगा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नदाष्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलषस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः।
आयान्तु मम षान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽह्यथर्वणः।
अंगैष्च सहिताः सर्वे कलषं तु समाश्रिताः।।
अत्र गायत्री सावित्री षान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम षान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

(इमान् श्लोकान् पठेत्। ततो यजमानः स्वहस्ते पुनरक्षतान् गृहीत्वा-)

इन श्लोको को पढ़कर नीचे लिखे मंत्र के द्वारा कलश में वरुणादि-देवताओं का तथा पृथिवी पर स्थित समस्त तीर्थों एवं पवित्र पुण्यसलिला नदियों की कलश में प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विष्वेदेवासऽइहमादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमचार्यै मामहेति च कष्चन।।

‘‘अस्मिन् कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

प्राणप्रतिष्ठा के बाद कलश पर आवाहित वरुणदेवता के साथ अन्य आवाहित देवों का भी विधि एवं श्रद्धा के साथ षोडषोपचार पूजन करें।

आसन -

ऊँ पुरुषऽएवेदं सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्।
उतामृतत्वस्येषानो यदन्नेनातिरोहति।।
(विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजितम्।।)

ऊँ कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। (आसन देने के लिए कलश पर अक्षत पुष्प चढावें)

पाद्य -

ऊँ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँष्च पूरुषः।
पादोऽस्यव्विष्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।
(सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
जलाध्यक्ष! गृहाणेदं भगवन्! भक्तवत्सल!।)

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि (पैर धोने के लिए एक आचमनी जल कलश पर छोड़ें)

अर्घ्य -

ऊँ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततोव्विष्वङ्व्यक्रामत्साषनानषने ऽअभि।।
(जलाध्यक्ष! नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर!
अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्।।)

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। (यहाँ एक छोटे से पात्र में गन्ध पुष्प अक्षत लेकर अर्घ्य प्रदान करें)

आचमन -

ऊँ ततो व्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः।
सजातोऽअत्यरिच्यतपष्चाद्भूमिमथोपुरः।।
(जलाध्यक्ष! नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दितः ।

गंगोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो!।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि। (एक आचमनी कलश पर जल छोड़ें)

स्नान -

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँष्चक्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्याष्चये।।
(मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि। (स्नान के लिए एक आचमनी जल कलश पर छोड़ें)

पंचामृत -

पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सोदेषे भवत्सरित्।।
(पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, मिलितपंचामृतस्नानं समर्पयामि।

(ध्यान दें पंचामृत में गाय का दूध, गाय की दधि, गाय का घृत, षहद तथा चीनी (षर्करा) मिली हुई होती है। कभी-कभी भगवान् षिव के अभिषेक या विषेषानुष्ठानों में अलग अलग द्रव्य जैसे पहले दूध से इसके बाद दधि से इस प्रकार से देवताओं को स्नान कराया जाता है। अतः अलग-अलग द्रव्य से भी स्नान के मंत्र आपके ज्ञानवृद्धि के लिए यहाँ बताया जा रहा है। जिसे आप अच्छी तरह अलग-अलग द्रव्यों (दूध, घी आदि) से करा सकते हैं) आप देश काल द्रव्य के अनुसार अलग-अलग द्रव्यों से एवं मिलित द्रव्यों से भी सुविधानुसार स्नान करा सकते हैं।

पयः (दूध) स्नानम् -

ऊँ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

(कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुष्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयः स्नानं समर्पयामि। पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दधिस्नानम् -

ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः।

सुरभि नो मुखाकरत्प्रणऽआयूंषितारिषत ॥

(पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।

दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम् -

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्य धाम।

अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतं वृषभव्वक्षिहव्यम्॥

(नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥)

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुस्नानम् -

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो

मधुमत्पार्थिवंरजः मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नोव्वनस्पतिर्मधुमाँऽस्तु सूर्य्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

(पुष्परेणु समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।

तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम् -

ॐ अपा रसमुद्वयस सूर्य्ये सन्तं समाहितम्।

अपांरसस्ययोरसस्तं व्वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येश ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।

(इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः षर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम् -

ऊँ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तआष्विनाः श्येत: श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पषुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्ज्जन्याः।
(गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम् -

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरुथमासदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ने विष्वरूपं संव्ययस्वव्विभावसो।।
(शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जायाः रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रमतः षान्तिं प्रयच्छ मे।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम् -

ऊँ युवा सुवासा परिपीतऽआगात्सउश्रेयान्भवतिजायमानः।
तन्धीरासऽकवयऽउन्नयन्तिसाध्योमनसा देवयन्तः।।

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रार्थे मांगलिकसूत्रं (मौली) समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् -

ऊँ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।
(नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेष्वर।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवीतं (जनेऊ) समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दनम् -

ऊँ त्वांगन्धर्व्वाऽअखनँस्तवामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्न्यक्षमादमुच्यत।।

(श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलंकारार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि (फूल एवं माला) -

ऊँ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अष्वाऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

(माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि।

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः।

हस्तघ्नो व्विष्वाव्वयुनानिव्विद्वान्पुमान्पुमां सम्परिपातु व्विष्वतः।।

(नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारुप्रगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

ऊँ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेषूघनासोव्वातप्रमियःपतयन्तियहवाः घृतस्य धाराऽअरुषोनव्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।

(सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम् -

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सुगन्धिद्रव्यम् अनुलेपयामि। (सुगन्धिद्रव्य का अर्थ यहाँ इत्र एवं सुगन्धित तैल से है)

''नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूप-दीपौ च देयौ''

धूपम् -

ऊँ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरुतदस्ययद्वैष्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत।।
(वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।)
आवाहितदेवताभ्यो नमः। धूपमाघ्रापयामि।

दीपम् -

ऊँ चन्द्रमामनसो जातष्चक्षोः सूय्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुष्च प्राणष्चमुखादग्निरजायत।।
(साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद्घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।)
वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपं दर्षयामि हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्यम् -

ऊँ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिश: श्रोत्रात्तथालोकाँ2ऽअकल्पयन्।।
(नैवेद्यं गृह्यतां देव! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
इप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। नैवेद्यं निवेदयामि नैवेद्यान्ते, ध्यानं, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। प्रणायस्वाहा, अपानायस्वाहा, व्यानायस्वाहा, उदानायस्वाहा समानायस्वाहा। इति ग्रासमुद्रां प्रदर्ष्य नैवेद्यं निवेदयेत्।

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आचमनीयं जलं मध्ये पानीयं उत्तरापोषनं च समर्पयामि।

करोद्वर्तनम् -

ऊँ अ षुना तेऽअं षुः पृच्यतां परुषापरुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽच्युतः।।

(चन्दनं मलयोद्भूतं केसरादिसमन्वितम्।

करोद्वर्तनकं देव! गृहाण परमेष्वर!।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, करोद्वर्तनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

(ध्यान दें! करोद्वर्तन का अर्थ दोनों हाथों के अनामिका एवं अंगुष्ठ में केसरयुक्त चन्दन लगाकर देवताओं पर छिड़कें)

ऋतुफलम् -

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

(ऊँ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाष्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुंचन्त्वं हसः।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इमानि ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम् -

यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत।

व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म्मऽइघ्मः षरद्धविः।।

(पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवंगानि च समर्पयामि।

दक्षिणा -

हिरण्गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।

स दाधार पृथ्विीन्द्यामुते मांकस्म्मै देवाय हविषा विधेम।।

(हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदभतः षान्तिं प्रयच्छ मे।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा -

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नष्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।।

प्रदक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम् (आरती) -

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

(कदलीगर्भसम्भूतं कपूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पष्य मे वरदो भव।।)

ऊँ इदं हविः प्रजननम्मेऽस्तु दषवीरं सर्व्वगणं स्वस्तये
आत्मसनिप्रजासनि पषुसनिलोकसन्यभयसनि अग्निः।
प्रजां बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्मासु धत्त।।
वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

हस्तौ प्रक्षाल्य मंत्रपुष्पांजलिः -

यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्।
ते ह नाकम्महिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाणपरमेश्वर।।

वरुणाद्यावाहितं देवताभ्यो नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

प्रार्थना हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा -

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्यवम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विष्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।

त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहं जलोद्भव।।

सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय

सुष्वेतहाराय सुमंगलाय।

सुपाषहस्ताय झषासनाय

जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।

यावत् कर्म करिष्येऽहं तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। प्रार्थनापूर्वकनमस्कारान् समर्पयामि। हस्ते जलमादाय अनेन यथालब्धोपचारपूजनाख्येन कर्मणा वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

बोधप्रश्न - 1

1. गणेश पूजन के बाद किसका पूजन होता है?
2. जल के प्रधान देवता कौन है?
3. अनुष्ठान के प्रारम्भ में व्यक्ति जल से ही आचमन क्यों करता है?
4. समुद्रमन्थन से कितने रत्न निकले थे?
5. पौराणिक दृष्टि से कलश की उत्पत्ति कहाँ से हुई है?
6. समुद्र से अमृतकलश लिए किसका प्राकट्य हुआ था?

3.3.1 पुण्याहवाचन –

पुण्याहवाचन कलश पूजन के ठीक बाद में होता है। इसीलिए यहाँ भी कलश पूजन के ठीक बाद में पुण्याहवाचन दिया गया है, क्योंकि पूजन का शास्त्रीय क्रम इस प्रकार है-

क. गणेशाम्बिका पूजन

ख. कलश पूजन

ग. पुण्याहवाचन

घ. अभिषेक

ङ. षोडशमातृकापूजन

च. सप्तघृतमातृकापूजन

छ. आयुष्यमंत्रजप

ज. नान्दीश्राद्ध

झ. आचार्यादिवरण

ग्रहतत्त्वदीपिका ग्रन्थ में कहा गया है-

पुण्याहवाचने विप्राः युग्मा वेदविदः शुभाः।
यज्ञोपवीतिनः षस्ताः प्राङ्मुखाः स्युः पवित्रिणः।।

इस कर्म में कम से कम दो ब्राह्मण अवश्य रहते हैं। जैसा कि उपरोक्त वचन से ज्ञात होता है। इसमें ब्राह्मणों का हस्तपूजन एवं उनसे आशीर्वाद के लिए यजमान प्रार्थना करता है। पुण्याहवाचन के लिए एक ताम्बे या पीतल का कमण्डलु होना चाहिए। जिसमें टोंटी लगी हो, जल गिरने के लिए।

विधि - यजमान दोनों घुटनों को पृथिवी पर मोड़कर अर्थात् वज्रासन में बैठे, तथा दोनों हाथों को उपर करके खिले हुए कमल के समान बनाये जिसमें आचार्य तीन बार पुण्याहवाचन-कलश को उठाकर यजमान के सिर पर रखते हैं तथा मंत्रपाठ करते हैं।

''ततो यजमानः अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृश मंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना (उभाभ्यां कराभ्याम्) पूर्णकलषं स्वांजलौ धारयित्वा स्वमूर्ध्ना संयोज्य च आशिषः प्रार्थयेत्।

ऊँ दीर्घानागा नद्यो गिरयस्त्रीणिविष्णुपदानि च।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।
विप्राः - ''अस्तु दीर्घमायुः''
ऊँ त्रीणि पदाव्विचक्रमेव्विष्णुर्गोपाऽअदाब्भ्यः।
अतो धर्माणि धारयन्।।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु। (इति यजमानो ब्रूयात्)।
विप्राः - ''अस्तु दीर्घमायुः। इस प्रकार तीन बार इस मंत्र का पाठ एवं क्रिया करनी चाहिये।

ततो यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते जलं दद्यात् -
अपां मध्ये स्थिता तोयाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः षिवा आपो भवन्तु ते।।

''ऊँ शिवा आपः सन्तु'' इति जलं दद्यात्। ''सन्तु शिवा आपः'' इति विप्रा वदेयुः।

यजमानः -

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः।।
''सौमनस्यमस्तु'' (इति विप्रहस्तेषु पुष्पं दद्यात्)
विप्राः - ''अस्तु सौमनस्यम्''।

यजमानः -

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।

यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ।।

''अक्षतंचारिष्टं चास्तु'' (इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात्)

विप्राः - अस्त्वक्षतमरिष्टं च।

यजमानः - ''गन्धाः पान्तु'' इति विप्रहस्तेषु गन्धं दद्यात्।

विप्राः - सुमंगल्यं चास्तु।

यजमानः - ''पुनरक्षताः पान्तु'' इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात्।

विप्राः - ''आयुष्यमस्तु''

यजमानः - ''पुष्पाणि पान्तु''

विप्राः - ''सौश्रियमस्तु''

यजमानः - ''सफलताम्बूलानि पान्तु''

विप्राः - ''ऐश्वर्यमस्तु''

यजमानः - दक्षिणाः पान्तु

विप्राः - बहुधनमस्तु

यजमानः - ''पुनरत्रापः पान्तु।

विप्राः - सकलाराधने स्वर्चितमस्तु

यजमानः - दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यषोविद्याविनयोवित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु। (इति वाक्येन विप्रान् प्रार्थयेत्)

विप्राः - तथास्तु।

यजमानः - यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोंकारमादिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिसंमतं भवद्भिरनुज्ञातं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - वाच्यताम्।

यजमानः - ऊँ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतप्रचतिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत।।1।।

सवितात्वा सवानां सुवतामग्निर्गृहपतीनां सोमोव्वनस्पतीनाम् । बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणो धर्मपतीनाम् ।।2।।

न तद्रक्षां सि न पिषाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः। स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।।3।।

उच्चा ते जातमन्धसो दिविसद्भूम्याददे। उग्रं षर्म्ममहिश्रवः ।।4।।

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँ2इयक्षते ।5।।

व्रत-जप-नियम-तप-स्वाध्याय-क्रतु-षम-दम-दया-दान-विषिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् । (इति विप्रान् प्रार्थयेत्)

विप्राः - समाहितमनसः स्मः ।

यजमानः - प्रसीदन्तु भवन्तः ।

विप्राः - प्रसन्नाः स्मः

यजमानः - ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु। बहिः ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगोऽषुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

अन्तः ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः षुभाः षोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिबकरणे समुहूर्ते-सनक्षत्रे-सग्रहे-सलग्ने-साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाष्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेष्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। बहिः ॐ हताष्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताष्च परिपन्थिनः। ॐ हताष्च विघ्नकर्तारः। ॐ षत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ षाम्यन्तु घोराणि। ॐ षाम्यन्तु पापानि। ॐ षाम्यन्त्वीतयः। ॐ षाम्यन्तूपद्रवाः। अन्तः ॐ षुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ षिवा आपः सन्तु। ॐ षिवा ऋतवः सन्तु। ॐ षिवा अग्नयः सन्तु। ॐ षिवा आहुतयः सन्तु। ॐ षिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ षिवा ओषधयः सन्तु। ॐ षिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे षिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ षुक्रांगारकबुधबृहस्पतिषनैष्चरराहुकेतुसोमसहितादिव्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमानः - एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - वाच्यताम्।

यजमानः -

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः पुण्याह भवन्तो ब्रुवन्तु। (इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेण त्रिर्ब्रूयात्।) ॐ पुण्याहं, ॐ पुण्याहं, ॐ पुण्याहम् इति त्रिर्विप्राः ब्रूयुः। ॐ पुनन्तु मा

देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु व्विष्वाभूतानिजातवेदः पुनीहि मा।

यजमानः -

पृथिव्यामुद्भृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः - ऊँ कल्याणं! ऊँ कल्याणं। ऊँ कल्याणम्।

ऊँ यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्ब्रह्मराजन्याभ्यां षूद्राय चार्याय च स्वायचारणाय च। प्रियो देवानान्दक्षिणायै दातुरिहभूयासमयम्मेकामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु।।

यजमानः -

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

ऊँ कर्म ऋध्यताम्। ऊँ कर्म ऋध्यताम्। ऊँ कर्म ऋध्यताम्। ऊँ

सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽभूम। दिवम्पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदामदेवान्त्स्वर्ज्योतिः।

यजमानः -

स्वस्तिस्तु याऽविनाषाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

ऊँ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विष्ववेदाः।

स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमानः -

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च बुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

ऊँ अस्तु श्रीः। ऊँ अस्तु श्रीः। ऊँ अस्तु श्रीः।

श्रीष्चतेलक्ष्मीष्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरुपमश्विनौ व्यात्तम्।

इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ।।

यजमानः -

मृकण्डसूनोरायुर्यद्ध्रुवलोमषयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम षरदः षतम्।।

विप्राः -

शतं जीवन्तु भवन्तः। शतं जीवन्तु भवन्तः। शतं जीवन्तु भवन्तः।

ऊँ शतमिन्नु शरदोऽन्तिदेवायत्रानष्चक्राजरसन्तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमानः -

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे श्रियं भवन्तो ब्रुवन्तु। श्रियं भवन्तो ब्रुवन्तु। श्रियं भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः।

मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमषीय।

पशूनां रुपमन्नस्यरसो यशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा।।

यजमानः -

प्रजापतिर्लोकपालो धाताब्रह्मा च देवराट्।

भगवांछाष्वतो नित्यं नो रक्षन्तु च सर्वतः।।

विप्राः -

ऊँ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम्।

ऊँ प्रजापते न त्वदेतान्यन्योव्विष्वारूपाणिपरितो बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु व्वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।

यजमानः -

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।

श्रिये दत्ताषिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

विप्राः -

ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।
ऊँ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम्।
येन व्विश्वा: परिद्विषो व्वृणक्ति व्विन्दते व्वसु।।
ऊँ स्वस्तिवाचन समृद्धिरस्तु।
ततो यजमानः हस्ते जलाक्षत द्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात् -

कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः सांगतासिध्यर्थं तत् सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।
पुनर्हस्ते जलमादाय अनेन पुण्याहवाचनेन भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।
(इस पुण्याहवाचन का मूल प्रयोग पारस्करगृह्यसूत्र 1 कण्डिका के गदाधर भाष्य में किया गया है)

(किसी कारणवश या समयाभाव के कारण इस बृहद् पुण्याहवाचन को यदि न कर सकें तो बौधायनोक्त संक्षिप्त पुण्याहवाचन कर सकते हैं। जो अधोलिखित है)

बौधायनोक्त पुण्याहवाचन
यजमानः -
ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रवुन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य (अमुकाख्यस्य) कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मण पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।
विप्राः -

ऊँ पुण्याहम्। ऊँ पुण्याहम्। ऊँ पुण्याहम्।
ऊँ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु व्विष्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।
यजमानः -
पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं बुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।
विप्राः -

ऊँ कल्याणम्। ऊँ कल्याणम्। ऊँ कल्याणम्।
ऊँ यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां षूद्रायचार्याय च स्वायचारणाय च।।

प्रियोदेवादक्षिणायै दातुरिहभूयासमयम्मेकामः समृध्यताभुपमादो नमतु।।

यजमानः -

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृताः।

सम्पूर्णा सुप्रभावा च तांच ऋद्धिं ब्रवुन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्य कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

ऊँ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विष्ववेदाः

स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

यजमानः -

वैधृतौ च व्यतीपाते संक्रान्तौ राहुपर्वणि।

यादृग्वृद्धिमवाप्नोति तां च वृद्धिं ब्रवुन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ऊँ ज्यैष्ठ्यंच मऽआधिपत्यंचमे मन्युष्च मे भामश्च मेऽमष्चमेऽभश्च मे जेमा च मे महिमा च मे व्वरिमा च मे प्रथिमा च मे व्वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

यजमानः -

सरित्पतेश्च या कन्या या श्रीर्विष्णुर्गृहेस्थिता।

सर्वसौख्यवती लक्ष्मीस्तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः।

ऊँ मनसः काममाकूतिम्व्वाचः सत्यमषीय।

पषूनांरूपमन्यस्य रसो यषः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा।।

यजमानः -

शंखासुरविपत्तौ च यथाशान्तिर्धरातले।

यथा च देव देवानां तां च शान्तिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणे अस्मिन् कर्मणि मम गृहे च शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मिन् कर्मणि मम गृहे च शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मिन् कर्मणि मम गृहे च शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

ॐ शान्तिः। ॐ शान्तिः। ॐ शान्तिः।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विष्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ॐ विष्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद्भद्रं तन्नऽआसुव।

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।

शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तथा।।

भद्रमस्तु षिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।

रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा।।

सपत्ना दुर्ग्रहा पापा दुष्टसत्वाद्युपद्रवाः।

पुण्याहं च समालोक्य निष्प्रभावा भवन्तु ते।।

(अन्ते च ब्राह्मणाः यजमान भाले तिलकं कृत्वा, हस्ते आशीर्वादं दद्युः।

इति बौधायनोक्तं पुण्याहवाचनम्।)

(यह पुण्याहवाचन प्रयोग ''संस्कारदीपक'' (महामहोपाध्यायश्रीनित्यानन्दपर्वतीयजी द्वारा लिखित ग्रन्थ) प्रथमभाग पृ. सं. 124 से लिया गया है)

बोधप्रश्न – 2

1. कलशपूजन के बाद कौन सा पूजन होता है?
2. पुण्याहवाचन में कम से कम कितने ब्राह्मण होते हैं?
3. पुण्याहवाचन में छोटे-छोटे वाक्यों की संख्या कितनी है?
4. स्वस्ति के योग में कौन सी विभक्ति होती है?
5. ''शान्तिरस्तु'' इत्यादिवाक्यों में हम क्या करते हैं?
6. आचार्य बौधायन किस षाखा के विद्वान् थे?
7. माध्यन्दिनशाखा के अनुसार पुण्याहवाचन का मूल प्रयोग कहाँ लिखा गया है?

3.4 सारांश

प्रस्तुत **''कलशादि-स्वरूप-विवेचन''** नामक इकाई में कलश का महत्त्व उसका ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक स्वरूप प्रमाण सहित आपको बताया गया। कलश की उत्पत्ति के पौराणिक स्वरूप पर दृष्टिपात करते हुए वैज्ञानिक दृष्टि से भी कलश का स्वरूप बताया गया। प्रसंगतः जल के वैशिष्ट्य को बताते हुए आचमन क्यों किया जाता है, यह प्रसंग, शतपथ-ब्राह्मण के माध्यम से आपके सामने रखा गया। इसके साथ ही कलश के प्रकार एवं परिमाण की भी चर्चा की गई तथा मुख्य बात कलश पर नारियल, शास्त्रीय विधि से कैसे रखा जाता है, वैसे न रखने से क्या दुष्परिणाम होता है आदि बातों की चर्चा आपसे की गई।

3.5 शब्दावली

ग्रीवा	-	गर्दन
वरुण	-	जल के प्रधान देवता
अमेध्य	-	अपवित्र
अनृत	-	झूठ
अप	-	जल
राजतम्	-	चाँदी का (कलश)
उत्सेध	-	ऊँचाई
प्राचीमुख	-	पूर्व दिशा की ओर मुख
वक्त्रं	-	मुख
ज्ञात्वा	-	जानकर

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न -1 का उत्तर

1. गणेश पूजन के बाद कलश पूजन होता है।
2. जल के प्रधान देवता वरुण हैं।
3. जल अत्यन्त पवित्र होता है, पुरुश झूठ बोलने के कारण अपवित्र होता है, इसीलिए अनृत से (मनुष्यभाव से देवभाव को प्राप्त करना) सत्य की ओर आचमन करने से प्रवृत्त होता है।
4. समुद्रमंथन से चौदह रत्न निकले।
5. पौराणिक दृष्टि से कलश की उत्पत्ति समुद्र से हुई है
6. समुद्र से अमृत कलश लिए श्रीधन्वन्तरि जी (वैद्य) प्रकट हुए।

बोध प्रश्न -2 का उत्तर

1. कलशपूजन के बाद पुण्याहवाचन होता है।

2. पुण्याहवाचन में कम से कम दो ब्राह्मण अवश्य रहते हैं। या फिर चार ब्राह्मण।
3. पुण्याहवाचन में छोटे छोटे वाक्य लगभग 72 हैं।
4. स्वस्ति के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।
5. शान्तिरस्तु इत्यादि वाक्यों में कलश के ऊपर अक्षत छोड़ते हैं।
6. आचार्यबौधायन कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयशाखा के विद्वान् थे।
7. पुण्याहवाचन का मूल प्रयोग पारस्करगृह्यसूत्र के प्रथम काण्ड के द्वितीय कण्डिका के ऊपर गदाधरभाष्य में है।

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थनाम	लेखक	प्रकाशन
क. संस्कारदीपक	महामहोपाध्यायनित्यानन्दपर्वतीय	वाराणसी
ख. कर्मसमुच्चय	श्रीरामजीलालशास्त्री	वाराणसी
ग. ग्रहशान्ति	श्रीवायुनन्दनमिश्र	वाराणसी
घ. पारस्करगृह्यसूत्र	महर्षि पारस्कर	वाराणसी

3.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. कलश पूजन की विधि लिखिये।
2. कलश पूजन के महत्व पर प्रकाश डालिये।
3. कर्मकाण्ड में कलश पूजन की उपयोगिता पर टिप्पणी लिखिये।
4. पुण्याहवाचन से आप क्या समझते है?

इकाई - 4 नवग्रह पूजन

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 नवग्रह पूजन
4.4 सारांश
4.5 शब्दावली
4.6 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर
4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-120 से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई में आप कलशादि पूजन विधि का अध्ययन कर चुके है। अब आप नवग्रहों में तथा उसके पूजन विधि के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं।

भारतीय वांगमय में प्रधानतया सूर्यादि नवग्रहों का उल्लेख मिलता है। कर्मकाण्ड में नवग्रह पूजन का विशेष महत्व बतलाया गया है। कहा भी गया है – ग्रहाधीनं जगत् सर्वम्। ग्रहाधीनं तु देवता:। इस प्रकार ग्रहों के अधीन समस्त संसार और देवता आदि भी रहते है। इसलिए ग्रहों का महत्व और भी बढ़ जाता है।

आइए हम सभी इस इकाई के माध्यम से नवग्रहों के बारे में विशेष अध्ययन करने का प्रयास करते हैं।

4.2 उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप बतायेगें कि-

- नवग्रह क्या है।
- सूर्यादि नवग्रहों के नाम क्या है।
- कर्मकाण्ड में ग्रहों का महत्व क्या है।
- नवग्रहों की पूजन विधि क्या है।

4.3 नवग्रह पूजन

भारतीय वैदिक वांगमय में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु को 'नवग्रहों' के नाम से जाना जाता है। ये नवग्रह मानवजीवन को कालानुरोधेने निरन्तर प्रभावित करते रहते हैं। न कि केवल मानव जीवन, अपितु समस्त चराचर प्राणीयों को ग्रह प्रभावित करते हैं। कर्मकाण्ड में भी नवग्रह पूजन का विशेष महत्व बतलाया गया है।

नवग्रह पूजन से ग्रहों की अनुकूलता तो प्राप्त होती ही है, सामान्य रूप में मानव जीवन के उन्नति में आने वाली बाधाओं का भी इससे निवारण होता है। घर में भूत प्रेतादि जनित पीड़ा दूर होती है। शत्रुकृत मारण, मोहन उच्चाटन, स्तम्भन आदि प्रयोगों का प्रभाव भी इससे नष्ट होता है। ग्रहों के प्रसन्न होने से घर में सुख शान्ति, आरोग्य प्राप्ति, सम्पत्ति प्राप्ति, विपत्ति नाश, दैवी प्रकोप का निवारण आदि भी हो जाता है। त्रिविध तापों का निवारण भी हो जाता है नवग्रह पूजन से।

संकल्प - ऊँ विष्णु:3 अधेह अमुकोऽहं..... दशान्तर्दशा प्रत्यन्तरदशा गोचर दशादिना अथवा जन्म कुण्डयां वर्ष कुण्डल्यां गोचरे नैर्याणेड अष्टकवर्गे वर्ष फलेडपिवा चतुर्थाष्टम द्वादश स्थान गतैः कूरग्रहेः संसूचित्रं संसूचयिष्यमाणं यदरिष्टं तत्परिहारार्थ क्रूर ग्रहाणां भिषाय स्थान स्थित वत् उत्तम

फल प्राप्तयर्थ तथा च शुभानां ग्रहाणां शुभ फलधिाक्यावाप्तेय.....अमुक कर्म निमित्वकं ग्रहाणां अनुकूलता सिद्धये (कलशेपरि दध्य क्षत पुंजेषु व्रह्म वरूण सहित आदित्यादि नवग्रहाणां अधि-देवानां प्रत्यधि देवानां विना यकादि पन्चलोक पालानां इन्द्रादि दश दिक्पालानां वास्तोष्यते, क्षेत्राधिपतेश्च प्रतिष्ठावाहनाडि पूर्वक यथाज्ञानं यथामिलितोपचारैश्च पूजनं करिष्ये।
(नवग्रह मण्डल या वेदी में ग्रहपूजन होने पर) नवग्रह मण्डले (वेधुपरिवा) सुवर्ण प्रतिमासु आदित्यादि नवग्रहाणां पूजनं करिष्ये। दध्यक्षत पंुजेषु, पूगीफले वा अधिदेवानां प्रत्यधिदेवानां इन्द्रादि दश दिक्पालानां, वास्तोष्यतेः क्षेत्राधिपतेश्च, प्रतिष्ठावाहनाडि पूर्वकं यथाज्ञानं यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

विनियोग - (हाथ में जल लें) ऊँ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, व्याहृतीनां विश्वमित्र जमदग्नि भरद्वाजा ऋषयः गाय¯युक् अनुष्टुप्छन्दासिे नवग्रहा देवता स्थापने विनियोगः
नवग्रह मण्डल के मध्य अष्टदल में सूर्य की स्थापना इस प्रकार करें
सूर्य का वैदिक मन्त्र –
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्य/। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

ऊँ भू भूर्वः स्वः कलिङगदेशोद्भव काश्यप गोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजार्थ त्वां आवहयामि स्थापर्याम ''स्थापंयामि'' उच्चारण होने पर दक्ष्यक्षत (या अक्षत) चढ़ावें।
चन्द्र ग्रह का वैदिक मन्त्र - ॐ इमन्देवाऽअसपत्न œ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमीराजा सोमोस्माकम्ब्राताणाना œ राजा। ऊँ भू भुर्वः स्वः यमुना तीरोदभव आत्रेय गोत्र शुक्ल वर्ण भो सोम। इहा गच्छ इह तिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि स्थापयमि।

भौम ग्रह का वैदिक मन्त्र - ॐ अग्निमर्मूद्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाœरेताœसि जिन्वति।
ऊँ भुर्भुवः स्वः अवन्ति देशादव भारद्वाज गोत्र रक्त वर्ण यो थौम। इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि स्थापयामि -
बुध ग्रह का वैदिक मन्त्र- उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सœसृजथामय/ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः मगध देशों द्रव आत्रेयागोत्र हरित वर्ण भो बुद्ध। इहा गच्छ इह तिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहर्याम स्थापर्यामे।

गुरु ग्रह का वैदिक मन्त्र - बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।

ॐ भू भुर्वः स्वः सिन्धु देशोद्भव आङ गिरस गोत्र पीतवर्ण भो गुरो। इहागच्छ इहतिष्ठ पूजार्थ आवाह यामि स्थापयामि।

शुक्र ग्रह का वैदिक मन्त्र - अन्नात् परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान œ शुक्रमन्धसऽइन्द्रियमिदम्पयो मृतम्मधु।

ॐ भूर्भूव: स्वः भोजकर देशो द्रव भार्गक गोत्र शुक्ल कर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि स्थापयामि।

शनि ग्रह का वैदिक मन्त्र- ॐ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रन्तु नः।। ॐ भूभवः स्वः सौरष्टू देशोभ्दव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनेश्चर। इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि स्थापयामि।

राहु मन्त्र - ऊँ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधःसखा। कया शचिष्ठया वृता। ऊँ भूर्भुवः स्वः वैराटिन पुरोद्भव पैठीनसि गोत्र कृष्ण वर्णभारा हो। इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि स्थाययामि।

केतु मन्त्र - ऊँ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽ अपेशसे समुषरि रजाय थाः ।। ऊँ भूभुर्वः स्वः अंत र्वेदी समुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्र वर्ण (कृष्ण वर्ण) भे केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थं त्वां आवाहयामि स्थापयामि।।

प्रत्येक ग्रह के दायी ओर अधिदेवता का स्थापन सुपारी या दध्यक्षत से करें। सभी ग्रहों का मुख सूर्य की ओर है।

अधि देवता प्रत्यधि देवता आदि की स्थापना नाम मन्त्रों से करें

अधिदेवता -

10 ऊँ भू भुर्वः स्वः ईश्वराय नमः ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि

11 ऊँ भू भुर्वः स्वः उमायै नमः उमां आवाहयामि स्थापयामि

12 ऊँ भू भुर्वः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि

13 ऊँ भू भुर्वः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि

14. ऊँ भू भुर्वः स्वः व्रह्मणे नमः व्रहमाणं आवाहयामि स्थापयामि

15. ऊँ भू भुर्वः स्वः इन्द्रायं नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि

16. ऊँ भू भुर्वः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि

17. ऊँ भू भुर्वः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि

18. ऊँ भू भुर्वः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तं आवाहयामि स्थापयामि

प्रत्यधिदेवता

19. ऊँ भू र्भुवः स्वः अग्नेय नमः अग्निं आवाहयामि स्थापयामि
20. ऊँ भू र्भुवः स्वः अद्भ्रयो नमः आपः आवाहयामि स्थापयामि
21. ऊँ भू र्भुवः स्वः पृथि नमः पृथिवीं आवाहयामि स्थापयामि
22. ऊँ भू र्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि
23. ऊँ भू र्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि
24. ऊँ भू र्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः इन्द्रावीं आवाहयामि स्थापयामि
25. ऊँ भू र्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि
26. ऊँ भू र्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि
27. ऊँ भू र्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि

पन्चलोकपाल देवता

28. ऊँ भू र्भुवः स्वः विनायकाय नम: विनायक: आवाहयामि स्थापयामि
29. ऊँ भू र्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गां आवाहयामि स्थापयामि
30. ऊँ भू र्भुवः स्वः वायवे नमः वायु आवाहयामि स्थापयामि
31. ऊँ भू र्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि
32. ऊँ भू र्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि

वास्तुदेवता

34. ऊँ भू र्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तु पुरुषं आवाहयामि स्थापयामि

क्षेत्रपालदेवता

33. ऊँ भू र्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालं आवाहयामि स्थापयामि

दशदिक्पाल

35. ऊँ भू र्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि
36. ऊँ भू र्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निं आवाहयामि स्थापयामि
37. ऊँ भू र्भुवः स्वः चयाम नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि
38. ऊँ भू र्भुवः स्वः निर्ऋत्ये नमः निर्ऋतिं आवाहयामि स्थापयामि
39. ऊँ भू र्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरूणं आवाहयामि स्थापयामि
40. ऊँ भू र्भुवः स्वः वायुवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि
41. ऊँ भू र्भुवः स्वः कुबेराय नमः कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि
42. ऊँ भू र्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि
43. ऊँ भू र्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः व्रह्ाणं आवाहयामि स्थापयामि

44. ऊँ भू र्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि

प्रतिष्ठा में स्थापना के पश्चात् अक्षतों से प्रतिष्ठा करें- (सुवर्ण प्रतिमा, सुपारी या दध्यक्षत पुंजों पर अक्षत डालें)

ऊँ एतन्ते देव सवित ष्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतय ब्रहमण तेन याज्ञमव तेन षज्ञपतिं तेन मामव।। मनो जूनिर्जुषता माज्ज्यस्य वृहस्पति र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ आदित्यादि नवग्रहाः सांगाः सायुधाः सवाहनाः सपरिवार।ः साधि देवता प्रात्याधि देवता विनायकादि पन्च लोकपालाः वास्तोष्पति क्षेत्राधिपति सहिताः इन्द्रादि दश दिक्पालाः सु प्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।।

सूर्य ध्यानम् - लाल पुष्पाक्षतों से वेदी के मध्य अष्टदल में सूर्य का ध्यान करें। मन्त्र समाप्ति में नमः आने पर पुष्प तद्तद् देवता को समर्पित करें। पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहु, पदद्युतिः सप्त तुरंग वाहनः।
दिवाकरों लोकगुरूः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

सूर्याय नमः

चन्द्रध्यानम- श्वेत पुष्पों से-

श्वेताम्बरः श्वेतबिभूषणश्च, श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः।
चन्दोऽमृतात्मा वरदः किरोटी माये प्रसादं विदधातु देवः
चन्द्र मसे नमः

भौम ध्यानम् - लाल पुष्पों से -

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी, चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत।
धरा सुतः शक्तिधरश्च शली सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः भौमाय

बुध ध्यानम् - (पीत पुष्पों से)

पीताम्बरों पीतवपुः किरीटी, चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी
चर्मासिघृक सोमसुतः सदा में, सिंहधिरूढो बरदो बुधः स्यात्।। बुधायनम,

गुरू ध्यानम् - (पीत पुष्पों से)

पीताम्बरो पीतवपुः किरीटी चतुभुजो देवगुरूः प्रशान्तः।
दधाति दण्डं च कमण्डलुं च तथा क्ष सूत्रं वरदोऽस्तु मह्यम्।। गुरवे नमः

शुक्र ध्यानम- (श्वेत व सुगन्धित रंग विरंगे पुष्पों से)

श्वेताम्बरौं श्वेतवपुः किरीटी, चतुर्भुजो देतगुरूः प्रशान्तः।
तथाक्ष सूत्रं च कमण्डुं च दण्डं च विभ्रत् वरदोऽस्तु मध्यम्।। शुक्रायनमः

शनि ध्यानम् - (नीले पुष्पों से)

नीलद्युति: शेलघरः किरीटी, गृध्रस्थितिः मासकरो धनुष्मान्।

चतुर्भुजः सूर्यसूतः प्रशान्तः सदास्तु मह्यं वरमन्दगामी।। शनैश्चराय नमः

राहु ध्यानम्-(नीले पुष्पों से)

नीलद्युतिः शेलघरः किरीटी, गृध्रस्थितः मासकरो धनुष्मान्।

चतुर्भुज: सूर्यसूतः प्रशान्तः, सदास्तु मह्यं वरमन्दगामी।। शनैश्चराय नमः

राहु ध्यानम्- (नीचे पुष्पों से)

नीलाम्बरो नीलवयुः किरीटी करालवक्त्रः करवाल शूली।

चतुर्थुजः चर्मघरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्।।

राहवे नमः।।

केतु ध्यानम् (नीले पुष्पों से)

घ्रूमों द्विवा हु र्वरदो गदाभृद् गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।

किरीट केयर बिभूषिताङगः, सदास्तु में केतु गण प्रशान्त।। केतवे नमः

अथवा संक्षिप्त नवग्रहों का ध्यान अनेक प्रकार के पुष्प कलश में चढ़ावें

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारि भानु शशी भूमि सुतो बुधश्च।

गुरूश्च शुक्रः शनिराहु केतवः सर्वे ग्रहाः क्षेमकराः भवन्तु।।

ब्रह्व वरूण सहित आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः।। ध्यान समर्पयामि

यदि नवग्रह मण्डल कलश से भिन्न हो तो जो भी वस्तु समर्पित करें वह दोनों में करें (कलश व नवग्रह मण्डल या वेदी) कलश में एक स्थान पर हो तो 1 में ही चढ़ावें।

आवाहन - अक्षत चढ़ावें-

ऊँ सहस्रशीर्ष पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

सभूमि सर्व तस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशागुङलम्।।

कलशे ब्रह्व वरुणाभ्यां नमः। आदित्यादि न वग्रहेभ्यो नमः

आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

आसनम् - पुष्प चढ़ावें-

ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आसनार्धे पुष्पं सर्मपयामि पुरुष एवेद सर्वं यद् भूतं बच्च भाव्यम्।

उतामृतत्व स्येशानो षदन्नेनाति रोहति।।

पाद्यम - पुष्प या चम्मच से जल चढ़ावे।

ऊँ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः

पादोऽस्य विश्वाभूतानि भिपादस्या मृतन्दिवि।।

आङि पाद्यार्थे जलं सर्मपयामि

अर्ध्यम् - अर्ध में पवित्र, जल, गंधाक्षत, पुष्प रखकर जल चढ़ावें।

ऊँ भिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पदोस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत साशना नशने अभि।।
आङि हस्तयोः अर्ध समर्पयामि।।
आचमनीयम् - आचमन से जल चढ़ाकें।
ऊँ ततो व्विराडजायत विराजोऽधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद भूमि मधो पुरः।।
आदि. अर्ध्यान्ते आचर्मनीयं जलं समर्थयामि।
शुद्धोदक स्नानम् - स्नान हेतु पुष्प या आचमन से जल चढ़ावें।
ऊँ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंश्तॉश्चक्रे वायव्या नाख्या ग्राम्याश्च पै।।
आदि. शुस्नानीयं जलं समर्पयामि।
पन्चामृत स्नानम् - पन्चामृत चढावें।
ऊँ पन्च नद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पन्चधा सो देशेऽभवत् सरित्।।
आदि. पन्चामृतेन स्नापयामि।
शुद्धोदक स्नानम् - (शुद्ध जल चढ़ावे)
ऊँ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।
ष्येतः श्योताक्षोऽरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा छामा
अवलिप्ता नभो रूपाः पार्जन्याः।।
आदि. शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
वस्त्रम्-(वस्त्र हेतु ग्रहों के वर्ण के अनुसार वस्त्र चढ़ावें, अभाव में कलावा या पुष्प चढ़ावें।
ऊँ तस्माद यज्ञात सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा सिजज्ञिरे तस्माद् यजुस् तस्माद जायत।।
आदि. वस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं सर्मपयामि।
उपवस्त्रम्-उपवस्त्र चढ़ावें। अभाव में पुष्प या कलावा चढ़ावें।
ऊँ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथ माऽसदत्त्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो।।
आदि. वस्त्रो पवस्त्रं सम. अथवा पुष्पं समर्प यामि
उपवस्त्रान्ते आचमनीयम् जलं समर्पयामि। (वस्त्र के बाद जल चढ़ावें)
यज्ञो पवीतं परमं पवित्रं, प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्
आयुष्टामग्रयं प्रतिमुन्च शुभं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

आदि. यज्ञोपवीतं समर्पयामि अभावे रक्तसूंत्र सर्मपयामि।
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि।
गन्धम्-रोली चढ़ावें।
ऊँ षज्ञं वहिर्षि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।।
तेन देवा अयजन्त साद्धया ऋषयश्च षे।।
आदि. गन्धं समर्पयामि।
अक्षताः अक्षत चढ़ावें।
ऊँ अक्षन्नमी मदनत ह्यवप्रिया, अधूजत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रानविष्ठया मतीयो जान्विन्द्र ते हरी।।
आदि. अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पाणि-ऊँ ओषधीः प्रतिमोदध्वं, पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरी वीरुघः पारणिष्णवः।।
आदि. पुष्पाणि, पुष्यमालां च समर्पयामि।
धूपम् - धूप जलाकर (नवग्रह मण्डल या कलशके) वायी ओर रक्खें।
ऊँ व्राहनणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
अरू तदस्य षद् वैश्यः पद्भ्या शूद्रोऽअजायत।।
आदि. धूपं आध्रापयामि।
दीपः- दीप जलाकर (नवग्रह मण्डल या कलश के) दा ीय ओर रक्खें।
ऊँ चन्द्रमा मनसो जाल श्चक्षोः सूर्योऽ अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्य मुखादग्निरजायत।।
आदि. दीपं दर्शयामि।
नैवेद्यम् - ''देवताओं के सामने नैवेद्य रखकर जल भी समर्पित करें।
ऊँ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकॉऽ2 अकल्पयन्।।
आदित्यादि. नैवेद्यं निवेदंयामि। आचरनीयं जलं च समर्पयामि।
ऋतु फलानि-फल समर्पित करें (अनेक प्रकार के फल पंचमेवा चढ़ावें)
ऊँ याः फलिनीर्या अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
वृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुन्चत्व हसः।।
आदि. ऋतुफलानि समपयामि।
ताम्बूलम- पान के पत्ते में सुपारी लोंगे, इलाचयी, कपूर रखकर चढ़ावें।
ऊँ षेत्पुरूषेण हविजा देवा याज्ञमतन्न्वत।

व्वसन्तोऽस्पासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धीवः।।
आदि. ताम्बूल पत्रं एलालवङ्ग यूगीफलेच सहित ताम्बूलपत्रं समर्पयामि
दक्षिणा - दक्षिणा चढ़ावें।
ऊँ हिरण्य गर्भः समर्वतताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविला विधेम।।
आदि. कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां सर्मपयामि।
क्षणं ध्यात्वा जपं कुर्यात् (प्रत्येक ग्रह का नाम मंत्र से जप करें
ऊँ ब्रह्मणे नमः, वरूणाय नमः, सूर्याय नमः, चन्द्राख नमः
भौमाय नमः, बुधाय नमः, गुरूबे नमः, शुक्राय नमः, शनै श्चराय नमः, राहवे नम, केतवे नमः, ईश्वराय नम, उमायै नमः स्कन्दाय नमः, विष्णवे नमः, ब्रहणे नमः, इन्द्राय नमः, यमोय नमः, कालाय नमः, चित्रगुप्ताय नमः, अग्नये नमः,
अद्भ्यो नमः, भूम्यै नमः, विष्णवे नमः, इन्द्राय नमः,
इन्द्राण्यै नमः, प्रजापतये नमः, सर्पेभ्यो नमः, ब्रह्मणे नमः,
विनायकाय नमः, दुर्गायै नमः, वायवे नमः, आकाशाय नमः
अश्विभ्यां नमः, क्षेत्राधिपतये नमः, वास्तोष्पतये नमः, इन्द्राय नम, यमाय नमः, निर्ऋतये नमः, वरूणाय नमः, वायवे नमः, कुबेराय नमः, ईशानाथ नमः, ब्रहाणे नमः, अनन्ताय नमः, इष्ट देवताभ्योनमः कुलदेवताभ्योनमः।। अन्त में हाथ में जल लेकर नवगहों के ऊपर घूमाकर (जल नीचे छोड़े)
गुह्याति गुह्य गोप्तारः गृहणन्तु अस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धि भर्वन्तु भो देवः त्वत्प्रसादात भवतां मम।।
आरार्तिक्यं-अन्तस्तेजो वहिस्तेजो एकी कृत्यामितप्रभम्।।
आरार्तिक्य महं कुर्वे पश्य मे वर दो भव।।
ऊँ इद हविः प्रजननं में अस्तु दशवीर सर्वगण स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशु सनि लोक सन्यभय सनि।
अग्नि: प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासुंधन्त।।
कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरंण प्रदीपितम्।
आरार्तिक्य महं कुर्बे पश्य में वरदो भव।।
मन्त्र पुष्पान्जलि- (विविध प्रकार के पुष्प नवग्रहों को समर्पित करें।

ऊँ ब्रह्मा मुरारिस्त्रि पुरान्तकारी, भानुः शशी भूमि सुतो बुहाश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः क्षेमकराः भवन्त।।
सूर्य्यः शौर्य मथेन्दु रूच्च पदवी सन्मङ्गलं मङगलः।

सद्बुद्धिं च बुधो गुरूश्च गुरुतां शुक्रं शुभं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं,
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूलाः ग्रहाः।।
आयुश्च वित्तं च तथा सुखं च
धर्मार्थ लाभौ बहु पुत्रतां च।
शत्रुक्षयं राजसु पूज्यतां च
तुष्टाः ग्रहाः क्षेयकराः भवन्तु।।

नव ग्रह स्थापन का संक्षिप्त विधान

1 ऊँ भू र्भुवः स्वः सूर्याय नमः सूर्यं आवाहयामि स्थपयामि
2 ऊँ भू र्भुवः स्वः चन्द्राय नमः चन्द्रं आवाहयामि स्थपयामि
3 ऊँ भू र्भुवः स्वः भौमाय नमः भौमं आवाहयामि स्थपयामि
4 ऊँ भू र्भुवः स्वः बुधाय नमः बुद्धं आवाहयामि स्थपयामि
5 ऊँ भू र्भुवः स्वः गुरवे नमः गुरूं आवाहयामि स्थपयामि
6 ऊँ भू र्भुवः स्वः शुक्राय नमः शुक्रं आवाहयामि स्थपयामि
7 ऊँ भू र्भुवः स्वः शनये नमः शनिं आवाहयामि स्थपयामि
8 ऊँ भू र्भुवः स्वः राहवे नमः राहुं आवाहयामि स्थपयामि
9 ऊँ भू र्भुवः स्वः केतवे नमः केतुं आवाहयामि स्थपयामि
10 ऊँ भू र्भुवः स्वः ईश्वराय नमः ईश्वरं आवाहयामि स्थपयामि
11 ऊँ भू र्भुवः स्वः उमायै नमः उमां आवाहयामि स्थपयामि
12 ऊँ भू र्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थपयामि
13 ऊँ भू र्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थपयामि
14. ऊँ भू र्भुवः स्वः व्रह्मणे नमः व्रहमाणं आवाहयामि स्थापयामि
15. ऊँ भू र्भुवः स्वः इन्द्रायं नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि
16. ऊँ भू र्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि
17. ऊँ भू र्भुवः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि
18. ऊँ भू र्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तं आवाहयामि स्थापयामि
19. ऊँ भू र्भुवः स्वः अग्नेय नमः अग्निं आवाहयामि स्थापयामि
20. ऊँ भू र्भुवः स्वः अद्भयो नमः आपः आवाहयामि स्थापयामि
21. ऊँ भू र्भुवः स्वः पृथि नमः पृथिवीं आवाहयामि स्थापयामि
22. ऊँ भू र्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि
23. ऊँ भू र्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि

24. ऊँ भू र्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः इन्द्रावीं आवाहयामि स्थापयामि
25. ऊँ भू र्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि
26. ऊँ भू र्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि
27. ऊँ भू र्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि
28. ऊँ भू र्भुवः स्वः विनायकाय ि नमः वनायकं आवाहयामि स्थापयामि
29. ऊँ भू र्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गां आवाहयामि स्थापयामि
30. ऊँ भू र्भुवः स्वः वायवे नमः वायु आवाहयामि स्थापयामि
31. ऊँ भू र्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि
32. ऊँ भू र्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि
33. ऊँ भू र्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालं आवाहयामि स्थापयामि
34. ऊँ भू र्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तु पुरुषं आवाहयामि स्थापयामि
35. ऊँ भू र्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि
36. ऊँ भू र्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निं आवाहयामि स्थापयामि
37. ऊँ भू र्भुवः स्वः चयाम नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि
38. ऊँ भू र्भुवः स्वः निर्ऋत्ये नमः निर्ऋतिं आवाहयामि स्थापयामि
39. ऊँ भू र्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरूणं आवाहयामि स्थापयामि
40. ऊँ भू र्भुवः स्वः वायुवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि
41. ऊँ भू र्भुवः स्वः कुबेराय नमः कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि
42. ऊँ भू र्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि
43. ऊँ भू र्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्राह्मणं आवाहयामि स्थापयामि
44. ऊँ भू र्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि
45. ऊँ भू र्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माण आवाहयामि स्थापयामि

पूर्वोक्त मंत्रों से 45 स्थानों पर सुपारी दध्यक्षत रक्खे।

प्रतिष्ठा - (अक्षत चढ़ावें) ऊँ मनो जूतिर्जुषता माज्ज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ सीमशं दधातु विश्वेदे्वा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ।। ऊँ भूर्भूवः नवग्रह मण्डले (कलशे वा) सूर्यादि नवग्रहाः साधि प्रत्यधि देवाः खंच लोकपाल सहित दश दिक्पालाः विश्वकर्माणा साहिताः वास्तेष्पतिः क्षेत्राधिपतिश्च इहा गच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।।

ध्यानम् - पुष्प् चढ़ावें

व्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वेग्रहाः क्षेत्रकराः भवतन्तु।।

आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः स्नानं समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः शुद्धोदकं स्नानं समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं - (रक्तसूत्रं) समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः अक्षताः समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पुष्पाणि समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्योनमः धूपं आघ्रापयामि समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः दीपं र्दशयामि समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि
नैवेद्यान्ते जलं समर्पयामि
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो ऋतु फलानि समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो एलालवङ्गडियुतं ताम्बूलं समर्पयामि।
ऊँ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो भूषणार्थे द्रव्यं समर्पयामि।
जपं विधाय, आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः
अधिदेवताभ्यो नवग्रहेभ्योनमः
प्रत्यधि देवताभ्यो नवग्रहेभ्योनमः
विनायकाडिपंचलोकपालेभ्यो नवग्रहेभ्योनमः
इन्द्रदिदश दिक्पालेभ्यो नवग्रहेभ्योनमः
विश्व कर्मणे नमः वास्तु पुरुषाय नवग्रहेभ्यो नमः
क्षेत्राधिपतये नमः कलशे ब्रह्म वरूणाभ्यां नमः।।
जप समर्पण - (हाथ में जल लेकर नवग्रहों के ऊपर छोड़ दें-
गुह्यातगोप्त गोप्तारः गृह्णन्त्व स्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति भो देवाः त्वत्प्रसादात् भवतां मम।।
आरार्तिक्यं - (कर्पूर से घण्टा नाद पूर्वक आरती करें)
इद हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर सर्वगण

स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि प्शु शनि लोकसन्यभय
स्नि अग्निः प्रजां बहुलां करोत्वन्नं प्यो रेतो अस्मासु घत्ता।।
(जल से आरती को शीतल करें। पुष्प् से ग्रहों को दें। पश्चात् स्वयं ग्रहण करें)
मंत्र पुष्पांजलि - (पुष्पों से) -
व्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्त कारी भानुः शशी भूमिसुतो वुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शाति कराः भवन्तु।।

अन्त में **नवग्रह स्तोत्र का पाठ करें।।**

व्यास प्रोक्तं नवग्रह स्तोत्रम् -

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापध्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।
धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिका श्यामं रूपेण प्रतिमं वुधम्।
सोम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।।
देवानां च ऋषीणां च गुरूं कान्चन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।
हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलान्जन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायार्माण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाश पुष्पसंकाशं तारका ग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यास मुखो द्गीतं यः पठेत्सु समाहितः।
दिवा वा यदिवा रात्रौ विध्न शान्ति र्भविष्यति।।
नर नारीदि नृपाणां च भवेद् दुःस्वपन्नाशनम्।
ऐश्वर्य मतुलं तेषां आरोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।

ग्रहनक्षन्नजाः पीडाः तस्कराग्निं समुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

इस नवग्रह स्तोत्र का पाठ करने से (प्रातः व सांय) विध्न शान्ति, दुःस्वप्ननाश, ग्रह नक्षत्र जनित पीडा शान्ति चौरभय, अग्निभय का नाश आरोगय प्राप्ति, शरीर में रोगनाश पुष्टि वर्धन व अत्याधिक ऐश्वर्य प्राप्ति होती है।।
अशुभ स्थान में बैठने से मारक या अष्टमेश होने से शुभ ग्रह भी अशुभ फल देता है। अतः ग्रहों के इसी दुष्प्रभाव के निवारर्णा ग्रहों के निमित्त जप, हवन दान का विधान शास्त्रों में बताया है। अतः नवग्रहों के जप दान द्रवय यहां कहे जाते हैं।

सर्वप्रथम सूर्य के जपके विधान को दिया जता है सर्य भगावान् का जाप सात हजार होगा-। नीचे लिखे मन्त्र से विनियेग करें-
विनियाग:-ॐ आकृष्णेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपाड्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीतयर्थे जपे विनियोगः।।
अथ करन्यासः।। आकृष्णेन रजसा अंगूष्ठाभ्यां नमः।
वर्तमानो निवेशयन् तर्जनीभ्यां नमः।
अमृतं मर्त्य च मध्यमाभ्यां नमः।
हिरण्ययेन अनामिकाभ्यां नमः।
सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
एवं हृदयादिन्यासः।। आकृष्णेन रजसा हृदयाय नमः।
वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा।
अमृतं मर्त्य च शिखायै वषट्।
हिरण्येन कवचाय हुँ।
सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट्।
देवो याति भुवनानि पश्यन् अस्त्राय फट्।
अथ ध्यानम्- आसनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरड्गवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरूः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

सूर्यगायत्री-ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।1।।

जपमन्त्रःॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॐ सूर्याय नमः।।1।।

अथ चन्द्रमन्त्रः- चन्द्रमा का जाप ग्यारह हजार होगा ।

विनियोगः-इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छनदः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।। अथ करन्यासः।। इमन्देवाऽअसपत्न œ सुवध्वं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय तर्जनी।

महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय मध्यमा0।

इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै अनामिका0।

विशऽएष वो मीराजा कनिष्ठिका0।

सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना œ राजा करतल0।

एवं हृदयादिन्यासः। इमन्देवाऽअसपत्न œ सुवध्वं हृदयाय0।

महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याम शिरसे0।

महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय शिखायै0।

इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै कवचा0।

विशऽएष वो मी राजा नेत्रत्रयाय0।

सोमोऽस्काकं ब्राह्मणाना œराजा अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्-श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः।

चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।1।।

चन्द्रगायत्री-ॐ अत्रिपुत्राय विùहे सागरोöवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्।।1।।

जपमन्त्रः - ॐ इमन्देवाऽअसपत्न œ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमीराजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणाना œ राजा। ॐ सोमाय नमः।

अथ भौममन्त्रः- भौम का जाप ग्यारह हजार होगा।

विनियोगःअग्निर्मूद्धेति मन्त्रस्य विरूपाड्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छनदः, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

अथ करन्यासः।। अग्निर्मूर्द्धा अंगुष्ठा0।

दिवः ककुत् तर्जनी0।

पितः मध्यमा0।

पृथिव्या अयम् अनामिका0।

अपाœरेताœसि कनिष्ठका0। जिन्वतिकरतल0। एवं हृदयादिन्यासः।

अग्निमूर्द्धा हृदयाय0।

दिवः ककुत् शिरसे0।
पतिः शिखायै0 । पृथिव्या अयं कवचा0।
अपाœरेताœसि नेत्रत्र0।
जिन्वति अस्त्राय0।।
अथ ध्यानम्-रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः।।1।।
भौमगायत्री-ॐ क्षितिपुत्राय विùहे लोहितांगाय धीमहि तन्नो
भौमः प्रचोदयात्।
जपमन्त्रः-ॐ अग्निमर्मूर्द्धा दिः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाœरेताœसि जिन्वति। ॐ भौमाय नमः।।
अथ सौम्यमन्त्रः- बुद्ध का जाप चार हजार होगा, कुद ग्रन्थों में बुद्ध का नौ हजर जाप करने का निर्देश है।
विनियोगःउदबुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापति ऋषिः, त्रिष्अुप्छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।
अथ करन्यासः।। उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वम् अङ्गष्ठाभ्यां नमः।
इष्टापूर्ते तजर्नी0।
सœसृजेथामयं च मध्यमा0।
अस्मिन्त्सधस्थेऽत्तरस्मिन् अनामिका0।
विश्वेदेवा यजमानश्च कनिष्ठिका0। सीदत करतल0।
एवं हृदयादिन्यासः। उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वं हृदयाय0।
इष्टापूर्ते शिरसे0।
सœसृजेथामयुञ्च शिखायै0।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् कवचा0।
विश्वेदेवा यजमानश्च नेत्रत्र0। सीदत अस्त्रा0।
अथ ध्यानम्-पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी।
चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च।।1।।
बुधगायत्री- चन्द्रपुत्राय विùह रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।।1।।
जपमन्त्रः- ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सœसृजथामयञ्च अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। ॐ सौम्याय नमः।।
अथ बृहस्पतिमन्त्रः- बृहस्पति का जाप उन्नीस हजार जाप होता है।

विनियोगः- बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुपछन्दः, ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाः।।

अथ करन्यासः।। बृहस्पतेऽअतियदर्य्यों अंगुष्ठा0।

अर्हाद्युमत् तर्जनी0। विभाति।

विभाति क्रतुमत् मध्यमा0।

जनेषु अनामिका0।

यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु कनिष्ठिका0।

द्रविणं धेहि चित्रम् करतल0।

एवं हृदयादिन्यासः।

बृहस्पतेऽअतियदर्य्यों हृदयाय0।

अर्हाद्युमत् शिरसे0।

विभाति क्रतुमत् शिखायै0।

जनेषु कवचा0।

यद्दीदध्यानम्-पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरूः प्रशान्तः।

तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।1।।

गुरूगायत्री-ॐ अंगिरोजाताय विùहे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरूः प्रचोदयात्।।1।।

जपमन्त्रः-ॐ वृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनषु यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये नमः।।

अथ शुक्रमन्त्रः-

अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजापतिऋषिः, अनुष्टुप् छनदः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

अथ करन्यास।। अन्नत्परिस्रुतो रसं अंगुष्ठा0।

ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं तर्ज्जनी0।

पयः सोमम्प्रजापतिः मध्यमा0

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं अनामिका0।

विपानर्ठ0 शुक्रमन्धस कनिष्टिका0।

इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु करतल0।

एवं हृदयादिन्यासः।

अन्नत्परिस्रुतो रसं हृदया0।

ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं शिरसे0।

पयः सोमं प्रजापति शिखायै0।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचा0।

विपनर्ठ शुक्रमन्धस नेत्रत्र0।
इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु अस्त्राय0।
अथ ध्ययनम्-श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देत्यगुरूः प्रशान्तः।
तथाऽक्षसूत्रञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्याम्।।1।।
भृगुगायत्री-ॐ भृगुवंशजाताय विùहे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः कविः प्रचोदयात्।।1।।
जपमन्त्रः-ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपानर्ठ शुक्रमन्धसऽइन्द्रियमिदम्पयो मृतम्मधु। ॐ शुक्राय नमः।
अथ शनिमन्त्रः-
शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।
अथ करन्यासः।। शन्नो देवीः अंगुष्ठा0।
अभिष्टये तर्ज्जनी0।
आपो भवन्तु मध्यमा0।
पीतये अनामि0 शंय्योरभि कनिष्ठि0।
स्रवन्तु नः सरतल0।
एवं हृदयादिन्यासः। शन्नो देवीः हृदयाय0।
अभिष्टये शिरसे0।
आपो भवन्तु शिखायै0।
पीतये कवचा0।
शंय्योरभि नेत्रत्र0।
नः अस्त्राय0।।
अथ राहुमन्त्रः-
कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छनदः, राहुदेवताः, राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।
अथकरन्यासः।। कया नः अंगुष्ठा0।
चित्र आ तर्ज्जनी0।
भुवदूती अध्यमा0।
सदावृधः सखा अनामिका0 ।
कया कनिष्ठिका0।।
शचिष्टया वृता करतल0।
एवं हृदयादि0।
कयानः हृदयाय0।
चित्र आ शीर्षे0।।

भुवदूती शिखायै0।
सदावृधः सखा कवचा0।
कया नेत्रत्र।
शचिष्टया वृता अस्त्राय0।।
अथ ध्यानम्-नीलाम्बरो नीवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशुल।
चतुर्भजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो' वरदोऽस्तु मह्यम्।।1।।
राहुगायत्री-नीलवर्णाय विùहे सैहिकेयाय धीमहि तन्नो रहुः प्रचोदयात्।।1।।
जपमन्त्रः- ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता ।ॐ राहवे नमः।।
अथ केतुमन्त्रः-
केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।
हृदयादिन्यासः। केतुं कृण्वन् हृदयाय नमः।
अकेतवे शिरसे0।
पेशोमर्या शिखायै व0।
अपेशसे कवचाय हूँ।
समुषöि ः नेत्रत्र0।
अजायथाः अस्त्राय फट।।
अथ ध्यानम् धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
किरीटकेयूरविभूषतो याःसदाऽस्तु में केतुगणः प्रशान्तः।।1।।
केतुगायत्री-अन्नवाय (धूम्राय) विùहे कपातवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।
अथ जपमन्त्रः
ॐ केतुड़ कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुष रजायथा। ॐ केतवे नमः।।

	ग्रह	दान द्रव्य	जप संख्या
1.	सूर्य	मणिक्य, गेहूंत्सालगौ, रक्तकमल, कौशुम्बीवस्त्र, सोना चन्दन तॉबा	7000
2.	चन्द्र	वंशपात्र, चावल, कपूर श्वेत वस्त्र, मोती, चाँदी, घृत कुंर्भ वृषभ	11000
3.	मंगल	मूंगा, गेहूं, मसूर, लालवैल, गुड़, सुवर्ण, तॉबा रक्त वस्त्र	10000
4.	बुध	कांस्यपात्र, हरा वस्त्र, हाथी, मूंग, जौ, सोना, दासी पुष्प, चॉदी	9000
5.	वृहस्पति	च्ना, पीलावस्त्र, सोना, पुखराज घोड़ा, हल्दी, नमक, चीनी	19000
6.	शुक्र	चवल, चित्र, श्वेत वस्त्र, चॉदी, सोना, सफेद घोड़ा, सुगंधित द्रव्य सवत्सा गौर	16000
7.	शनि	थ्तल, तेल, कालावस्त्र, कुलथी लोहा भैंस, उडद, नीलम दक्षिणा	23000
8.	राहु	नीला वस्त्र, गोमेद रत्न, तेल, गेहूं,, कम्बल, घेड़ा, अभ्रक, काबल	18000

9.	केतु	कम्बल, कस्तूरी, वैदूर्यमणि तिल, तेल, काला वस्त्र	17000

नवग्रह का संक्षिप्त परिचय एवं देवत्व निरूपण

सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ये नवग्रह कहलाते हैं। सभी शास्त्रों के अनुसार देवत्व का स्थान प्राप्त है। प्रत्येक कर्म में पंचांग कर्म के साथ इनके पूजन का विधान है। पूजा से प्रसन्न होकर ग्रह क्रियमाण कर्म की पूर्णता में सहयोग देते हैं क्योंकि लग्न में स्थित या दृष्टि द्वारा प्रभावित करने वाला पाप ग्रह हमारे दैनिक कार्यों, अर्थोपार्जन या अभ्युदय के कार्यों में अवरोध उत्पन्न करते हैं पूजा जप, दान से प्रसन्न ग्रह हमारी उन्नति में सहायता करते हैं महर्षि पाराशर ने ग्रहों को भगवान का दशावतारकहा है। श्री राम-सूर्य, श्रीकृष्ण-चन्द्र, नृसिंह-मंगल, बुद्ध- बुध, वामन-बृहस्पति, परशुराम शुक्र, कूर्म शनैश्चर वाराह राहु, मीन केतु के अंशों से अवतार लेते हैं। ब्रह्मा जी ने ग्रहों को वरदान दिया जो तुम्हारी पूजा करे उसके अरिष्ट व क्लेश बाधाओं को दूर करना तथा इष्ट नाभाडि के द्वारा वृद्धि करना।

विभिन्न शास्त्रों में वर्णित नवग्रह महत्व

श्री कामः शान्ति कामो वा ग्रहयज्ञं समाचेरत्।।

याज्ञवल्क्य स्मृति श्री व शान्ति की कामना करने वाले मनुष्य को ग्रह यज्ञ करना चाहिये

शन्नों ग्रहाः चद्रमसाः शमदित्यश्च राहुणा।
शन्नो मृत्यु र्धूमकेतुः शं रूद्रास्तिग्म तेजसः।

चन्द्रमा के साथ समस्त ग्रह, मृत्युसूचक, धूमकेतु विकराल अद्रगण हमारे लिये कल्याणकारी हों।

ऊँ अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्यो देवता चन्द्रमादेवता।

अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, अष्टवसु, एकादश रूद्र, द्वादशादित्य, एकोनपंचाशत (पुर) मरूद्गण विश्वदेव, बृहस्पति, इन्द्र, वरूण हमारे लिये कल्याणकारी हों।

बोध प्रश्न -

1. नवग्रहों की संख्या कितनी है
   क. 5 ख. 7 ग. 8 घ. 9
2. नवग्रहों में प्रधान ग्रह कौन है?
   क. सूर्य ख. चन्द्र ग. मंगल घ. शनि
3. निम्न में 'देवगुरु' किसे कहा जाता है?
   क. शुक्र ख. बुध ग. मंगल घ. गुरु
4. शन्नोदेवि रभिष्टया आपो भवन्तु पीतये ..... किसका वैदिक मन्त्र है?
   क. गुरु ख. मंगल ग. बुध घ. शनि

5. दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् .... 0 किस ग्रह का मन्त्र है?
   क. मंगल ख. चन्द्रमा ग. सूर्य घ. गुरु

4.5 सारांश-

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जान लिया है कि नवग्रहों का कर्मकाण्ड में महत्वपूर्ण योगदान है। सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु नवग्रह कहे गये हैं। लौकिक एवं वैदिक मन्त्रों से नवग्रहों का पूजन किया जाता है। नवग्रहों का पूजन, विनयोग, वैदिक एवं लौकिक मन्त्रों का उल्लेख इस इकाई में आपके ज्ञानार्थ किया जा चुका है। सूर्यादि नवग्रहों का अलग-अलग जपदान संख्या भी बतलाया गया है। नवग्रहों के पूजन से मानव जीवन में हर प्रकार की सुख-शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होती है।

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

नवग्रह – सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु को नवग्रह कहा जाता है।
वैदिक – वेदों में प्रतिपादित
लौकिक – सांसारिक
जपदान – कथित निश्चित संख्या का जप करना
अवरोध – बाधा
सनातन – शाश्वत् चलने वाला
अनादि – जिसका कोई आरम्भ न हो

4.7 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

1. घ
2. क
3. घ
4. घ
5. ख

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नवग्रहशान्ति
2. अनुष्ठान प्रकाश
3. ग्रहशान्ति
4. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. नवग्रहों का परिचय दीजिये।
2. नवग्रह पूजन विधि का लेखन कीजिये।
3. नवग्रहों के वैदिक एवं लौकिक मन्त्रों का लेखन कीजिये।
4. कर्मकाण्ड में नवग्रहों का वैशिष्ट्य बतलाइये।
5. नवग्रहों का विस्तृत वर्णन करें।

इकाई– 5 अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता एवं पंचलोकपाल पूजन

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3. अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता
5.3.1 पंचलोकपालों का परिचय
5.4 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन
5.4.1 वैदिक मन्त्रों के अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का आवाहन-
5.4.2 पौराणिक मन्त्रों के अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का आवाहन-
5.4.3 नाम मन्त्रों से अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का आवाहन-
5.4.4 अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का वैदिक मन्त्र विधि से पूजन
5.4.5 अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का पौराणिक मन्त्र विधि से पूजन
5.4.5 अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का नाम मन्त्र विधि से पूजन
5.5 सारांश
5.6 शब्दावली
5.7 अभास प्रश्नो के उत्तर
5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ
5.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री
5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना-

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-120 के द्वितीय खण्ड की पाँचवीं इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है- अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता एवं पंचलोकपाल। इसके पूर्व की इकाई में आपने नवग्रहों का अध्ययन कर लिया है। अब आप सभी अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता एवं पंचलोकपाल के बारे में जानेंगे।

कोई भी जातक यदि कोई शान्ति कराता है तो प्रायः शान्ति प्रविधियों में नवग्रहों का स्थापन एवं अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल का आवाहन पूजन करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना आप कैसे करेगें, इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

किसी भी कर्मकाण्ड में नवग्रहों का स्थापन प्रायः किया जाता है। ग्रह स्थापन के नाम पर सामान्य लोगों में यही धारणा बनी रहती है कि नौ ग्रह है उनका नाम लिया जाता है। लेकिन जब आप नवग्रह मण्डल पर ग्रहों का स्थापन विधान देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि नवग्रहों के अलावा उनके अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का भी आवाहन स्थापन करना पड़ता है इनके अभाव में नवग्रह मण्डल के देवताओं का पूजन हो ही नही पाता क्योकि मण्डल पर तो कुल चौवालीस **44** देवता होते है। अभी हम केवल नवग्रहों का कहां -कहां स्थापन किया जाता है? इसको हमने जाना है। लेकिन अब उन नवग्रहों के कौन-कौन से अधि देवता है? कौन-कौन प्रत्यधि देवता है एवं कौन-कौन पंलोकपाल है**?** उनका स्थान कहां-कहां होता है? इस पर विचार करेंगें। इस प्रकार इस ईकाई के अध्ययन से आपको संबंधित समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

5.2 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्आप जान लेंगे कि –

- अधिदेवता किसे कहते है।
- प्रत्यधिदेवता क्या है।
- पंचलोकपाल कौन कौन से है।-
- अधिदेवता एवं प्रत्यधिदेवता का पूजन कैसे किया जाता है।
- पंचलोकपाल पूजन विधि क्या है।

5.3 अधिदेवता एवं प्रत्यधिदेवता

यह सर्व विदित है कि जब भी हम कोई शान्ति करते हैं तो नवग्रह मण्डल का निर्माण कर नवग्रहों की स्थापना अवश्य करते हैं। न केवल शान्ति अपितु यज्ञों में भी नवग्रहों की स्थापना करनी पड़ती

है। नवग्रहों की स्थापना के बिना हम किसी भी अनुष्ठानिक प्रक्रिया का सम्पादन नही कर सकते इसलिये नवग्रहों का ज्ञान अति आवश्यक है। ईशाने ग्रह वेदिका कहते हुये यह बतलाया गया है कि नवग्रह वेदी का निर्माण ईशान कोण में करके नवग्रहों की स्थापना करनी चाहिये। नवग्ररहों के रूप में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एव केतु होते हैं। इन नवों ग्रहों के दक्षिण अधि देवता एवं बाम भाग में प्रत्यधि देवता विराजित होते हैं। कहा गया है-

अधि देवता दक्षिणे वामे प्रत्यधि देवता।

इसमें दक्षिण एवं वाम का विचार उन ग्रहों से करना चाहिये। प्रायः इस बात को समझने में भूल हो जाती है कि दक्षिण और बाम तो एक ओर होगा लेकिन ऐसा नही है। क्योकि लिखा गया-

शुक्रार्कौ प्रांगमुखो ज्ञेयौ गुरुसौम्या उदंगमुखः।
प्रत्यंगमुखो सोम शनि शेषाः दक्षिणतो मुखाः।।

अर्थात् शुक्र एवं सूर्य का मुख पूर्व की ओर होता है। बुध एवं गुरु का मुख उत्तर की ओर होता है। सोम एवं शनि का मुख पश्चिम की ओर तथा शेष ग्रहों का मुख दक्षिण की ओर होता है। इस स्थिति पर विचार करना चाहिये। कोई व्यक्ति यदि पूर्व की ओर मुख करके खड़ा है तो उसका दाहिना जिधर होगा उधर पश्चिम की ओर मुख करके खड़े हुये व्यक्ति का नही होगा। ठीक उसी प्रकार उत्तर की ओर मुख करके खडे हुये व्ययक्ति का दहिना बाया भाग जिस ओर होगा दक्षिण की ओर मुख किये व्यक्ति का दायां बाया भाग उससे विपरीत होगा। इस लिये अधि देवता एवं प्रत्यधि देवता के स्थापन में हमें सावधानी पूर्वक ग्रहों के मूख का ज्ञान रखना होगा तभी अधि एवं प्रत्यधि देवताओं की स्थापना सम्यक् तरीके से हो पायेगी। इसके अलावा एक और भी विधान शास्त्रों में देखने को मिलता है-

आदित्याभिमुखाःसर्वेसाधिप्रत्यधिदेवताः ।
अधिदेवता दक्षिणे वामे प्रत्यधिदेवताः ।।

यहां भी उसी प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो रही है। सूर्य सभी ग्रहों के मध्य में विराजमान है। अब सारे ग्रह सूर्य को देख रहे हैं ऐसी स्थिति में उनके मुख की दिशा अलग-अलग होगी जिसके कारण उनका दायां एवं बायां भाग बदल जायेगा और अधि-प्रत्यधि देवताओं का स्थान उसके अनुरूप होगा।

अब यहां विचारणीय होगा कि अधि देवता कौन-कौन है? इसके उत्तर के सन्दर्भ में मत्स्य पुराण एवं कोटि होम पद्धति में लिखा गया है कि-

ईश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो विष्णुस्तथैव च। ब्रह्मेन्द्रौ यमकालाश्च चित्रगुप्ताधिदेवताः।

अर्थात् ईश्वर, उमा, स्कन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल एवं चित्रगुप्त ये अधि देवता कहे गये है। इसको और अच्छी तरह हम इस प्रकार समझ सकते है। सूर्य के दक्षिण भाग में ईश्वर का स्थान होता है। चन्द्रमा के दक्षिण भाग में उमा का स्थान होता है। मंगल के दक्षिण भाग में स्कन्द का स्थान होता है। बुध के दक्षिण भाग में विष्णु का स्थान होता है। बृहस्पति के दक्षिण भाग में ब्रह्मा का स्थान होता

है। शुक्र के दक्षिण भाग में इन्द्र का स्थान होता है। शनि के दक्षिण भाग में यम का स्थान होता है। राहु के दक्षिण भाग में काल का स्थान होता है एवं केतु के दक्षिण भाग में चित्रगुप्त का स्थान होता है।

इसी प्रकार प्रत्यधि देवताओं के बारे में विचार करते हुये कहा गया है कि-

अग्निरापो धरा विष्णुः इन्द्रश्चैन्द्री प्रजापतिः। सर्पाब्रह्मा च निर्दिष्टा प्रत्यधिदेवा यथाक्रमम्।।

अर्थात् अग्नि, अप, धरा, विष्णु, इन्द्र, ऐन्द्री, प्रजापति, सर्प एवं ब्रह्मा प्रत्यधि देवता होते हैं। इसको इस प्रकार सरलता से समझा जा सकता है। सूर्य के वाम भाग में अग्नि का स्थान होता है। चन्द्रमा के वाम भाग में अप का स्थान होता है। मंगल के वाम भाग में धरा का स्थान होता है। बुध के वाम भाग में विष्णु का स्थान होता है। बृहस्पति के वाम भाग में इन्द्र का स्थान होता है। शुक्र के वाम भाग में ऐन्द्री का स्थान होता है। शनि के वाम भाग में प्रजापति का स्थान होता है। राहु के वाम भाग में सर्प का स्थान होता है एवं केतु के वाम भाग में ब्रह्मा का स्थान होता है।

इस प्रकार से आपने अधि देवता एवं प्रत्यधि देवताओं का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन अधि देवता प्रत्यधि देवता सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** ईश्वर किसका अधि देवता है **?**

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न **2-** उमा किसकी अधिदेवता है**?**

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न **3-** स्कन्द किसका अधिदेवता है**?**

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न **4-** विष्णु किसका अधिदेवता है**?**

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न **5-** इन्द्र किसका प्रत्यधि देवता है**?**

क- बृहस्पति का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न **6-** ऐन्द्री किसका प्रत्यधि देवता है**?**

क- सूर्य का , ख- शुक्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न **7-** प्रजापति किसके प्रत्यधि देवता है**?**

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

प्रश्न **8-** सर्प किसके प्रत्यधि देवता है**?**

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- राहु का।

प्रश्न **9-** ब्रह्मा किसके प्रत्यधि देवता है**?**

क- सूर्य का , ख- केतु का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न **10-** काल किसके अधि देवता है**?**

क- सूर्य का , ख- मंगल का, ग- शनि का, घ- राहु का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता एवं प्रत्यधि देवताओं का नाम स्थान सहित परिचय का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्ठी तरह समझ गये होगें। अब हम पंचलोकपालों की स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

5.3.1 पंचलोकपालों का परिचय-

नवग्रह मण्डल पर पंच लोकपालों की स्थापना की जाती है। पंचलोकपालों के विषय में लिखा है कि ग्रहाणामुत्तरे पंच लोकपालाः व्यवस्थिताः। अर्थात् ग्रहों के उत्तर में पंच लोकपालों की व्यवस्था की गयी है। इन पंचलोकपालों के नाम के सन्दर्भ में प्राप्त होता है कि गणेशश्चाम्बिका वायु आकाशश्चाश्विनौ तथा। अर्थात् गणेश, अंबिका, वायु, आकाश एवं अश्विनी कुमार ये पॉच लोकपाल है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार प्राप्त होता है-

1- श्री गणेश का स्वरूप-

चतुर्भुजस्त्रिनेत्रश्च कर्तव्योत्र गजाननः। नागयज्ञोपवीतश्च शशांक कृतशेखरः ।
दक्षे दन्तं करे दद्यात् द्वितीये चाक्षसूत्रकम्। तृतीये परशुं दद्याच्चतुर्थे मोदकं तथा ।।

उपरोक्त श्लोक में श्री गणेश जी के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि पंचलोकपाल के रूप में व्यवस्थित गणेश जी चार भुजा वाले हैं, तीन नेत्रों वाले हैं तथा उनका मुख गज का बना हुआ है। नाग के यज्ञोपवीत धारण करते है तथा उनके शिखर पर चन्द्रमा विराजमान रहता है। दाहिने हाथ में दांत धारण किये हुये है। ऐसी किंवदन्ती है कि गणेश जी के हाथी वाले मुख में दो दांत थे। एक दांत उन्होने स्वयं ही तोड़ दिया इसलिये अब केवल एक दांत ही बचा रह गया जिसके कारण वे एकदन्त हो गये। वहीं कहा गया एक दांत उनका कहां चला गया ? जिसे उन्होने तोड़ा तो बतलाया गया उसी को दाहिने हाथ में अस्त्र के रूप में धारण कर लिये। इसलिये श्री गणेश जी एकदन्त हो गये। दूसरे हाथ में अक्ष एवं सूत्र लिये हुये है। तीसरे हाथ में परशु लिये हुये है तथा चौथे हाथ में मोदक लिये हुये है। इस प्रकार का स्वरूप श्रीगणेश लाकपाल का है।

2- अम्बिका का स्वरूप-

शक्तिं बाणं तथा शूलं खड्गं चक्रं च दक्षिणे। चन्द्रबिम्बमधो वामे खेटमूर्ध्वे कपालकम्।
सुकंकटं च विभ्राणा सिंहारूढ़ा तु दिग्भुजा। एषा देवी समुद्दिष्टा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।

इस श्लोक में दूसरे लोकपाल अम्बिका का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार अम्बिका नाम की दुर्गा देवि शक्ति, बाण, शूल, खड्ग, एवं चक्र दाहिनी ओर धारण की हुई है। वाम भाग में चन्द्र बिम्ब, ग्रह, कपाल एवं सुकंकट धारण की हुयी सिंह पर आरूढ़ दश भुजाओं वाली दुर्गा देवि का स्वरूप इस प्रकार है।

3- वायु का स्वरूप-

तीसरे लोकपाल के रूप में वायु को स्वीकार किया गया है। वायु के स्वरूप का वर्णन करते हुये दानमयूख में इस प्रकार कहा गया है।

धावद्धरणिपृष्ठस्थो ध्वजधारी समीरणः।
वरदानकरो धूम्रवर्णः कार्यो विजानता।

वायु के स्वरूप के बारे में कहा गया है कि वायु लोकपाल धरणिपृष्ठ यानी भूमि के पृष्ठ पर दौड़ रहे है। ये वायु देवता ध्वज धारण किये हुये है। एक हाथ से वरदान वाली मुद्रा बनाये हुये है। इनका वर्ण धूम्र है। इस प्रकार वायु लोकपाल का स्वरूप बतलाया गया है।

4-आकाश का स्वरूप-

चौथे लोकपाल के रूप में आकाश को स्वीकार किया गया है। आकाश नामक लोकपाल के स्वरूप का वर्णन करते हुये पाया गया है कि-

नीलोत्पलाभं गगनं तद्वर्णाम्बरधारि च।
चन्द्रार्क हस्तं कर्तव्यं द्विभुजं सौम्यखण्डवत्।

आकाश के स्वरूप के बारे में कहा गया है कि नीले उत्पल यानी कमल के समान गगन नामक दिग्पाल की आभा है। और उसी वर्ण का अम्बर भी धारण किया हुआ है। आकाश जी की दो भुजायें है इन दोनों भुजाओं में चन्द्रमा एवं सूर्य को धारण किये हुये है। आकाश अखण्ड स्वरूप में एवं सौम्य स्वरूप में विराजमान है।

5- अश्विनी कुमार का स्वरूप-

पॉचवे लोकपाल के रूप में अश्विनी कुमार को जाना जाता है। अश्विनी कुमार के स्वरूप की चर्चा करते हुये दानमयूख में कहा गया है कि-

द्विभुजौ सौम्य वरदौ कर्तव्यो रूपसंयुता। तयोरोषधयः कार्या दिव्या दक्षिण हस्तयोः।

वामयोः पुस्तकौ कार्यौ दर्शनीयौ तथा द्विजाः। एकस्य दक्षिणे पार्श्वे वामे चास्य च यादवः।

नारी युगं प्रकर्तव्यं सुरूपं चारुदर्शनम्। रत्नभाण्डकरे कार्ये चन्द्रशुक्लाम्बरे तथा।

अश्विनी कुमार की विशेषता यह है कि ये देवता तो एक है लेकिन ये दो कुमारों के स्वरूप में रहते है। दो भुजायें धारण करने वाले उन भुजाओं से वर देने वाले तथा औषधि का काम करने वाले है। दक्षिण एवं वाम पार्श्व के रूप में विराजमान है। इनका दर्शन अत्यन्त मनोहर है। नारिओं जैसा ये दिखाई देते

है। रत्न भाण्ड यानी पात्र लिये हुये होते है।

इस प्रकार से आपने पंच लोकपालों का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** नवग्रह मण्डल पर कितने लोकपाल होते है**?**

क- **2,** ख- **3,** ग- **4,** घ- **5**।

प्रश्न **2-** प्रथम लोकपाल कौन है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ख- वायु, ग- आकाश।

प्रश्न **3-** द्वितीय लोकपाल कौन है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न **4-** तृतीय लोकपाल कौन है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न **5-** चतुर्थ लोकपाल कौन है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न **6-** पंचम लोकपाल कौन है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- अश्विनी कुमार, घ- आकाश।

प्रश्न **7-** चतुर्थे मोदकं तथा किस लोकपाल के लिये है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न **8-** सिंहारूढ़ा कौन लोकपाल है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न **9-** ध्वजधारी लोकपाल कौन है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न **10-** नीलोत्पलाभ लोकपाल कौन है**?**

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में पंचलोकपालों के परिचय का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

5.4. अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन-

अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के विविध तरीके है। उनमें से हम वैदिक मन्त्रों से आवाहन, पौराणिक मन्त्रों से आवाहन एवं नाम मन्त्रों से आवाहन की विधि पर विचार करेगें जो इस प्रकार है-

5.4.1 वैदिक मन्त्रों के अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का आवाहन-

आप अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों के बारे परिचय प्राप्त कर लिये है। अब इनका आवाहन इस प्रकार है-

अधिदेवता स्थापनम्

1-सूर्य के दक्षिण में ईश्वर का आवाहन- ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। ओं भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः। ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के दक्षिण में उमा का आवाहन- श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म ऽ इषाण सर्व्वलोकम्म ऽइषाण।। ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के दक्षिण में स्कन्द का आवाहन- ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्य पक्षाहरिणस्यबाहू उपस्तुत्यम्महिजातन्ते ऽ अर्व्वन्।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के दक्षिण में विष्णु का आवहन- ॐ विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोसि। व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ।। ओं भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

5- बृहस्पति के दक्षिण में ब्रह्मा का आवाहन- ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽ इषव्योतिव्याधीमहारथोजायतांदोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरंधिर्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ओं भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के दक्षिण में इन्द्र का आवाहन- ॐ सयोषा ऽ इन्द्र सगणो मरु सोमंपिबव्वृत्रहा शूर विद्वान्। जहिशत्रूँ**2** रपमृधोनुदस्वाथाभ्यङ्कृणुहि विश्वतो नः।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

7- शनि के दक्षिण में यम का आवाहन- ओं यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे।। ओं भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के दक्षिण में काल का आवाहन- ॐ कार्षिरसि समुüस्य त्वाक्षित्या ऽ उन्नयामि समापो ऽ अरग्मतसमोषधीभिरोषधीः।। ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- केतु के दक्षिण में चित्रगुप्त का आवाहन- ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

1-सूर्य के वाम भाग में अग्नि का आवाहन- ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यावाहमुपब्रुवे। देवाँ आसादयादिह । ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के वाम भाग में अप का आवाहन- ओं आपो हिष्ठामयोभुवस्तान ऽउर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के वाम भाग में पृथ्वी का आवाहन-ओ स्योनापृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्म शप्प्रथाः।। ओं भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के वाम भाग में विष्णु का आवाहन- ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा गुं सुरे स्वाहा।। ओं भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।।

5-बृहस्पति के वाम में इन्द्र का आवाहन- ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुर ऽ एतु सोमः। देवसेनानामभिभंजतीनांजयन्तीनांमरुतोयंत्वग्रम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के वाम में इन्द्राणी का आवाहन- ॐ आदित्यै रास्ना सीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- शनि के वाम में प्रजापति का आवाहन- ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्योव्विश्वारुपाणि परिताबभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु व्वय गुं स्यामपतयोरयीणाम् ।। ओं भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के वाम भाग में सर्प का आवाहन- ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि

9- केतु के वाम भाग में ब्रह्म का आवाहन- ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमितः सुरुचोव्वेन ऽ आवः। स बुध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।। ¬ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं

आवाहयामि स्थापयामि ।।

विनायकादिपंचलोकपालानामावाहनम्

1- गणेश का आवाहन- ॐ गणान्त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भ्भधम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।।

2- अम्बिका का आवाहन- ॐ अम्बे ऽ अम्बिके अम्बालिके न मा मयति कश्चन। ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।।

3- वायु का आवाहन- ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये ।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- आकाश का आवाहन-ओं घृतं घृतपावानः पिबतव्वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा ।। दिशः प्रदिश ऽ आदिशो व्विदिशिऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5-अश्विनी कुमार का आवाहन- ओं यावांकशामधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार से आपने वैदिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** नवग्रह मण्डल पर कितने अधिदेवता होते है**?**

क- **7,** ख- **8,** ग- **9,** घ- **10**।

प्रश्न **2-** त्र्यम्बकं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **3-** यदक्रन्दः प्रथमं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **4-** इदं विष्णु मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **5-** सयोषा इन्द्र मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **6-** अग्निं दूतं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- अग्नि का, ख-अप का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न **7-** आपो हिष्ठा मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- अप का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **8-** विष्णो रराट मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- अग्नि का, ख-अप का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न **9-** स्योना पृथ्वी मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- अग्नि का, ख-अप का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न **10-**घृतं घृतपावानः से किसका आवाहन करते है**?**

क- गणेश का, ख- अम्बिका का, ग- वायु का, घ- आकाश का?

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को वैदिक मन्त्रों से आवाहन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना पौराणिक मन्त्रों से कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है। इस सन्दर्भ में हमने एक निवेदन पूर्व में भी किया है कि वैदिक मन्त्रों का उच्चारण वे ही कर सकते जिन्होने गुरुमुखोच्चारण पद्धति मन्त्रों से पढ़ा है अन्यथा वे मन्त्र अशुद्ध ही पढ़ जायेगें। इसलिये इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाय कि जो शुद्ध रूप से वेद मन्त्रों का उच्चारण न कर सकते हो वे पौराणिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते है। पौराणिक मन्त्र वैदिक मन्त्र की अपेक्षा काफी सरल एवं सुगम है। अतः पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन इस प्रकार है-

5.4.2 पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन

1-सूर्य के दाहिने भाग में ईश्वर का स्थान होता है। इनका आवाहन इस प्रकार है-

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूल कपालखड्वांगधरेण सार्धम्।
लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते।।
ओं भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः। ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के दक्षिण में उमा का स्थान होता है । इनका आवाहन इस प्रकार है-

हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के दक्षिण में स्कन्द का स्थान है उनका आवाहन इस प्रकार है-

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दं आवाहयाम्यहम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के दक्षिण में विष्णु का स्थान है। अतः आवहन इस प्रकार है-

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

5- बृहस्पति के दक्षिण में ब्रह्मा का स्थान होता है जिनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ कृष्णाजिनांबरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूभुर्वः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के दक्षिण में इन्द्र का स्थान है इनका आवाहन इस प्रकार किया जाता है-

ओं देवराजं गजारूढ़ं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

7- शनि के दक्षिण में यम का सथान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ओं धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्।।
ओं भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के दक्षिण में काल का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ओं अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्।।
ओं भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- केतु के दक्षिण में चित्रगुप्त का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ओं धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम्।
आवाहये चित्रगुप्तं लेखनी पत्रहस्तकम्।।
ओं भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

1-सूर्य के वाम भाग में अग्नि का आवाहन-

ॐ रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्।।
ओं भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के वाम भाग में अप का आवाहन-

ओं आदिदेवसमुद्भूत जगत्छुद्धिकराः शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम्।।

ओं भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के वाम भाग में पृथ्वी का आवाहन-

ॐ शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के वाम भाग में विष्णु का आवाहन-

ॐ शंखचक्रगदापद्महस्तं गरुड़वाहनम्।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।।

5-बृहस्पति के वाम में इन्द्र का आवाहन-

ॐ ऐरावत गजारूढ़ं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के वाम में इन्द्राणी का आवाहन-

ॐ प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानालंकारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- शनि के वाम में प्रजापति का आवाहन-

ॐ आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के वाम भाग में सर्प का आवाहन-

ओं अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि ।।

9- केतु के वाम भाग में ब्रह्मा का आवाहन-

ओं हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

विनायकादिपंचलोकपालानामावाहनम्

1- गणेश का आवाहन-

ॐ लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयामयहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।।

2- अम्बिका का आवाहन-

ॐ पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजाति कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।।

3- वायु का आवाहन-

ॐ आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- आकाश का आवाहन-

ॐ अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5-अश्विनी कुमार का आवाहन-

ॐ देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषक्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्नौ पुष्टिवर्द्धनम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार से आवाहन करके प्रतिष्ठा करनी चाहिये। क्योंकि बिना प्रतिष्ठा के पूजन नही हो पायेगा। इसलिये हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुये प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चनः।।

इस प्रकार से आपने पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** नवग्रह मण्डल पर कितने प्रत्यधिदेवता होते है**?**

क- **7,** ख- **8,** ग- **9,** घ- **10**।

प्रश्न **2-** एह्येहि विश्वेश्वर मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **3-** रुद्रतेजः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **4-** देव देव जगन्नाथ मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **5-**देवराजं गजारूढ़ं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **6-** धर्मराजं महावीर्यं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-यम का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **7-** धर्मराज सभासंस्थं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क-चित्रगुप्त का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **8-**रक्तमाल्यम्बरधरः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- अग्नि का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **9-** शुक्लवर्णां विशालाक्षीं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न **10-** ऐरावत गजारूढ़ मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को पौराणिक मन्त्रों से आवाहन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना नाम मन्त्रों से कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है। इस सन्दर्भ में हमने एक निवेदन पूर्व में भी किया है कि वैदिक मन्त्रों का उच्चारण वे ही कर सकते हैं जिन्होने गुरुमुखोच्चारण पद्धति से मन्त्रों को पढ़ा है अन्यथा वे मन्त्र अशुद्ध ही पढ़े जायेगें। इसलिये इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाय कि जो शुद्ध रूप से वेद मन्त्रों का उच्चारण न कर सकते हो वे पौराणिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते है। पौराणिक मन्त्र वैदिक मन्त्र की अपेक्षा काफी सरल एवं सुगम है। परन्तु पौराणिक मन्त्रों से भी आवाहन करने में काठिन्य हो रहा हो तो नाम मन्त्रों से आवाहन करना चाहिये लेकिन किसी भी हालत में अशुद्धि नही होनी चाहिये। अतः पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन इस प्रकार है-

5.4.3 नाम मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन

1-सूर्य के दाहिने भाग में ईश्वर का स्थान होता है। इनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः। ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के दक्षिण में उमा का स्थान होता है । इनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के दक्षिण में स्कन्द का स्थान है उनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के दक्षिण में विष्णु का स्थान है। अतः आवहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

5- बृहस्पति के दक्षिण में ब्रह्मा का स्थान होता है जिनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के दक्षिण में इन्द्र का स्थान है इनका आवाहन इस प्रकार किया जाता है-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

7- शनि के दक्षिण में यम का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के दक्षिण में काल का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- केतु के दक्षिण में चित्रगुप्त का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

1-सूर्य के वाम भाग में अग्नि का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के वाम भाग में अप का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के वाम भाग में पृथ्वी का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के वाम भाग में विष्णु का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।।

5-बृहस्पति के वाम में इन्द्र का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के वाम में इन्द्राणी का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- शनि के वाम में प्रजापति का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के वाम भाग में सर्प का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि ।।

9- केतु के वाम भाग में ब्रह्मा का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

विनायकादिपंचलोकपालानामावाहनम्

1- गणेश का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।।

2- अम्बिका का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।।

3- वायु का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- आकाश का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5-अश्विनी कुमार का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार से आवाहन करके प्रतिष्ठा करनी चाहिये। क्योंकि बिना प्रतिष्ठा के पूजन नही हो पायेगा। इसलिये हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुये प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चनः।।

इस प्रकार से आपने नाम मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** नवग्रह मण्डल पर कितने पुरुष प्रत्यधिदेवता होते है**?**

क- **7,** ख- **8,** ग- **9,** घ- **10**।

प्रश्न **2-** ओं भूर्भुवः स्वः ईश्वराय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **3-** ओं भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **4-** ओं भूर्भुवः स्वः विष्णवे मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **5-**ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **6-** ओं भूर्भुवः स्वः यमाय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-यम का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **7-** ओं भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क-चित्रगुप्त का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **8-**ओं भूर्भुवः स्वः अग्नये मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- अग्नि का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न **9-** ओ भूर्भुवः स्वः पृथीव्यै मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न **10-** ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है**?**

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता**,** प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को नाम मन्त्रों से आवाहन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता**,** प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पूजन कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

5.4.4 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का वैदिक विधि से पूजन

अब आप अधिदेवता**,** प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये वैदिक मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता**,** प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

ओं पुरुषऽएवेद गुं सर्व्वं यद भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान्

समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल, हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य, मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल, स्नान हेतु स्नानीय जल एवं पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

ततः पादयोः पाद्यं हस्तयोरर्घ्यं आचमनीयं जलं -देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्- ओं पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्- शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभो रूपाः पार्ज्जन्न्याः।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्- ओ युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः।। शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्- ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमःयज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्- ओं सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथ मासदत्स्वः।। व्वासो ऽअग्ने विश्वरूप गुं संव्ययस्व व्विभावसो।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्- ओं त्वांगन्धर्वाऽ अँखनसूँत्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्चत।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्- ओं अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा न विष्ठया मतीयोजान्विद्रतेहरी।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्- ओं ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वा इव सजीत्वरीर्व्विरुधः पारयिष्णवः। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-ओं काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।। सौभाग्य सिन्दूरम्-ओ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रियः पतयन्तियह्वाः। घृतस्यधाराऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि- ओं अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा गुं सं परिपातु विश्वतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्- ओं धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्वतं योऽ स्मान्धूर्वतितं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वन्हितम् गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देव हूतमम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-ओं अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्नि र्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योति र्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् - ओं नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ अकल्पयन् ।। नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-ओं अ गुं शुनाते अ गुं शुः पृच्यतां परुषांपरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः।। चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-ओं याः फलिनीर्य्याऽ अफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं हसः।। इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकं च-ओं यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः।। मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् - इद गुं हविः प्रजननम्मे ऽअस्तु दशव्वीर गुं सर्व्वगण गुं स्वस्तये । आत्मशनि प्प्रजाशनि पशुशनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽ अस्मासु धत्त।। आ रात्रि पार्थिव गुं रजः पितुर प्रायिधामभिः। दिवः सदा गुं सि वृहती व्वितिष्ठस ऽआत्वेषं वर्त्तते तमः।। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः- ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्न्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।। मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा- ऊँ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः।। तेषा गुंसहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने वैदिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का पूजन पंच लोकपालों सहित करा सकते है । अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा । अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न -

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं । अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है । प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** पुरुष एवेद मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **2-** पंचनद्यः मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **3-** ओषधीः मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **4-** अहिरिव भोगैः मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **5-** धूरसि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **6-**अग्निर्ज्योति मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **7-** नाभ्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **8-** यत् पुरुषेण मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न **9-** याः फलिनीर्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **10-** यज्ञेन मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को वैदिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पूजन पौराणिक विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

5.4.5 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पौराणिक विधि से पूजन-

अब आप अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पौराणिक विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवान किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये पौराणिक मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

ओं अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस श्लोक को पढ़कर दें।

ओं गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

ओं गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

ओं कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।,

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

ओं मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

ओं पयो दधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुध वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

ओं नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

ओं उवपस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

ओं श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाठ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुररेष्ठ चन्दनं प्रतिग्रह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

ओं अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण सर्वदेवता।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

ओं माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

ओं दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

ओ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरम् प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

ओं अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

ओं वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाठयो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां धूपो अयं प्रतिगृह्यताम्।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

ओं साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

ओं शर्कराखण्डखाद्यादि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य

ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

ओं चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

ओं इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ।।

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-

ओं पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

ओं हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

कृतायाः पूजायाः सादृण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

ॐ नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानिच। पुष्पांजलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदेपदे। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का पूजन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** अनेक रत्न संयुक्तं मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **2-** पयो दधि घृतं चैव मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **3-** माल्यादीनि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **4-** अबीरं च गुलालं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **5-** वनस्पति रसो मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **6-**साज्यं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **7-** शर्कराखण्ड मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **8-** पूंगीफल महद्दिव्यं मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न **9-** इदं फलं मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **10-** नाना सुगन्धि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पंाजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को पौराणिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया। आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पूजन नाम मन्त्र की विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

5.4.6 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन-

अब आप अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये नाम मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस मन्त्र को पढ़कर दें।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।,

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है ।

पंचामृतस्नानम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा-

प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने नाम मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का पूजन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** आसनं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **2-** पंचामृतं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **3-** पुष्पमालां समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **4-** नाना परिमलद्रव्याणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **5-** धूपं आघ्रापयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **6-**दीपं दर्शयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **7-** नैवेद्यं निवेदयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **8-** ताम्बूल पत्राणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न **9-** इमानि फलानि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **10-** मन्त्र पुष्पांजलि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालो का पूजन नाम मन्त्र की विधि से जाना । आशा है आप इसे अच्ठी तरह समझ गये होंगे। अब हम इसका सारांश वर्णित करने जा रहे है।

5.5 सारांश

इस ईकाई में आपने नवग्रह मण्डल पर अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के स्थापन का विधान जाना है। वस्तुतः किसी भी प्रकार की शान्ति के लिये या पौरोहित्यिक कर्मकाण्ड के लिये नवग्रह मण्डल का निर्माण करके नवग्रहों की स्थापना करके पूजन करते है। क्येंकि बिना स्थापना के

वह ग्रह या देवता वहां आकर विराजमान नही होता जिसकी हम पूजा करना चाहते है। इसलिये स्थापन जानना आवश्यक है और पूजन भी जानना अति आवश्यक है।

इस ईकाई में यह बात स्पष्ट की गयी की प्रत्येक ग्रह के अधिदेवता होते हैं और प्रत्येक ग्रह के प्रत्यधि देवता भी होते हैं। अर्थात् नवग्रह यदि नव है तो उनके अधिदेवता भी नव तथा प्रत्यधि देवता भी नव ही होगें। नवग्रहों की संख्या तथा उनके नामों का वर्णन करते हुये मत्स्य पुराण कहता है कि- सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा नव।। अर्थात् सूर्य , चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु को नवग्रह कहा गया है। अब इन नवग्रहों के दाहिने अधिदेवता एवं बाम भाग में प्रत्यधि देवता रहते हैं। अब प्रश्न उठता है कि इनके क्या-क्या नाम है? इस सन्दर्भ में कहा गया है कि ईश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो विष्णुस्तथैव चाब्रह्मेन्द्रौयमकालाश्चचित्रगुप्ताधिदेवता।। यानी क्रमशः सूर्यादि नवग्रहों के दक्षिण में ईश्वर, उमा, स्कन्द, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल, चित्रगुप्त ये अधिदेवता है। इन्ही सूर्यादि ग्रहों के बाम भाग में क्रमशः देवता विराजमान रहते हें जिन्हे प्रत्यधि देवता के रूप में जाना जाता है। इनके नाम क्रमशः अग्निरापोधराविष्णुशक्रेन्द्रणिपितामहाः। पन्नगाकः क्रमाद्वामे ग्रह प्रत्यधि देवता।। अर्थात् अग्नि, आप, धरा, विष्णु , शक्र, इन्द्राणि, पितामह, पन्नग और ब्रह्मा क्रम से ग्रहों के वाम में प्रत्यधि देवता होते है। इसके अलावा नवग्रह मण्डल पर पंचलोकपाल होते है जिनके बारे में कहा गया है कि गणेशश्चाम्बिकावायुआकाशश्चाश्विनौ तथा। अर्थात् गणेश, अम्बिका, वायु, आकाश एवं अश्विनी कुमार ये पंच लोकपाल के रूप में जाने जाते है।

इन सभी ग्रहों और देवताओं के आवाहन को तीन प्रकारों में बांटा गया है। जिसे वैदिक मन्त्रों द्वारा आवाहन, पौराणिक मन्त्रों द्वारा आवाहन एवं नाम मन्त्रों द्वारा आवाहन के रूप में जाना जाता है। न केवल आवाहन स्थापन अपितु इनका पूजन भी तीन ही विधाओं में बांटा गया है जिन्हे वैदिक मन्त्रों द्वारा, पौराणिक मन्त्रों द्वारा एवं नाम मन्त्रों द्वारा बतलाया गया है। इसमें वैदिक मन्त्रों से यदि नही करना हो तो पौराणिक मन्त्रों करना चाहिये या इसी प्रकार पौराणिक मन्त्रों से या समयाभाव हो तो नाम मन्त्रों से नवग्रहों का स्थापन किया जाता है। आवाहन स्थापन के उपरान्त नवग्रहों का यथालब्धोपचार या षोडशोपचार से पूजन किया जाता है।

5.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

विश्वेश्वर- विश्व के ईश्वर, अप- जल, लोकेश- लोक के स्वामी, यज्ञेश्वर- यज्ञ के इश्वर, हेमाद्रि- हिमालय, शंकरप्रियाम्- शंकर की प्रिया, देवसेनाग्रगं- देवसेना के आगे चलने वाले। षण्मुख- छः मुख, कुत्तिका सूनु- कृत्तिका के पुत्र, जगन्नाथ- जगत् के स्वामी, चतुर्भुज- चार भुजाओं वाले, रमानाथ- रमा के पति, अम्बर- वस्त्र, पद्मसंस्थ- कमल पर स्थित, चतुर्मुख- चार मुख, वेदाधार- वेद का आधार, निरालम्ब- बिना सहारा के, देवराज- देवताओं के राजा, गजारूढ़- हाथी पर सवार, शतक्रतु- सौ यज्ञ करने वाला, वज्र हस्त- हाथ में वज्र, धर्म राज- धर्म के स्वामी, महावीर्य- महा

बलवान, दिक्पति- दिशा के पति, अनाकार- बिना आकार के, कृताकृत- किया या न किया, शुक्लवर्णा- सफेद वर्ण, विशालाक्षी- विशाल आंख वाली, सर्व शस्याश्रया- सभी प्रकार के अन्नों का आश्रय, गरुड़वाहन- गरुड़ का वाहन, कुण्डलधर- कुण्डल धारण करने वाले, सहस्राक्ष- सहस्रों आंखे, शचीपति- शची के पति इन्द्र, सुराधीश- देवताओं के अधिपति, प्रसन्न वदनाः- प्रसन्न मुख वाली, महाकाय- विशाल शरीर, गजवक्त्र- हाथी का मुख, सिद्धिदायक- सिद्धि देने वाले, विपिन- वन, सर्वग- सभी जगह जाने वाले।

5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

3.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**ध, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**घ।

3.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-घ, **2-**क, **3-**ख, **4-**ग, **5-**घ, **6-**ग, **7-**क, **8-**ख, **9-** ग, **10-**घ।

3.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-ग, **2-**क, **3-**ख, **4-**ग, **5-**घ, **6-**क, **7-**क, **8-**ग, **9-**घ, **10-**घ।

3.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-ग, **2-**क, **3-**ख, **4-**ग, **5-**घ, **6-**ख, **7-**क, **8-**ग, **9-**घ, **10-**घ।

3.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**क, **3-**ख, **4-**ग, **5-**घ, **6-**ख, **7-**क, **8-**ग, **9-**घ, **10-**घ।

3.4.4 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

3.4.5 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

3.4.6 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-दान मयूख।

2-प्रतिष्ठा मयूख।

3-बृहद् ब्रह्म नित्य कर्म समुच्चय।

4- शान्ति- विधानम्।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7- कर्मजव्याधिदैवी चिकित्सा।

8- फलदीपिका

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- सर्व देव प्रतिष्ठा प्रकाशः।

11- संस्कार-भास्करः । वीणा टीका सहिता।

12- मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्- भारतीय व्रत एवं अनुष्ठान।

13- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

5.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- पूजन विधानम्।

2- श्री काशी विश्वनाथ पंचांग।

3- भारतीय रत्न सिद्धान्त।

4- याज्ञवल्क्य स्मृतिः।

5- संस्कार- विधानम्।

5.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- अधिदेवताओ एवं प्रत्यधि देवताओं का परिचय दीजिये।

2- पंच लोकपालों का स्वरूप बतलाइये।

3- अधिदेवता स्थापन की वैदिक विधि बतलाइये।

4- प्रत्यधि देवता स्थापन की पौराणिक विधि वर्णित कीजिये।

5- पंचलोकपाल स्थापन की नाम मन्त्र की विधि का वर्णन कीजिये।

6- अधिदेवताओं का वैदिक मन्त्रों से पूजन सविधि लिखिये।

7- प्रत्यधि देवताओं का पौराणिक मन्त्रों से पूजन लिखिये।

8- पंचलोकपालों का पूजन नाम मन्त्रों से लिखिये।

9- गणेश लोकपाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

10- वायु लोकपाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

इकाई - 6 वास्तोष्पत्ति एवं क्षेत्रपाल

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय
6.4 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन
6.**4.**1 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से आवाहन
6.4.2 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन
6.4.3 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का नाम मन्त्रों से आवाहन-
6.4.4 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से पूजन -
6.5 सारांशः
6.6 पारिभाषिक शब्दावली
6.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
6.8 बोधप्रश्नों के उत्तर
6.9 निबन्धात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

इस इकाई में वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन एवं पूजन संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व नवग्रह स्थापन सहित अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन पूजन सहित अन्य शान्ति प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया है। कोई भी व्यक्ति यदि कोई शान्ति कराता है तो प्रायः शान्ति प्रविधियों में नवग्रहों का स्थापन एवं अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल का आवाहन पूजन करना पड़ता है। इसके अलावा नवग्रह मण्डल पर ही वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन एवं पूजन भी करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन एवं पूजन आप कैसे करेगें, इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

प्रायः कर्मकाण्डीय प्रक्रियाओं में नवग्रहों का स्थापन किया जाता है। ग्रह स्थापन के नाम पर सामान्य लोगों में यही धारणा बनी रहती है कि नौ ग्रह है उनका नाम लिया जाता है। लेकिन जब आप नवग्रह मण्डल पर ग्रहों का स्थापन विधान देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि नवग्रहों के अलावा उनके अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों सहित वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का भी आवाहन स्थापन करना पड़ता है इनके अभाव में नवग्रह मण्डल के देवताओं का पूजन हो ही नही पाता क्योकि मण्डल पर तो कुल चौवालीश **44** देवता होते है। अभी हमने केवल नवग्रहों का तथा अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का कहां -कहां स्थापन किया जाता है **?** इसको जाना है। लेकिन अब वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन स्थान कहां-कहां होता है**?** कैसे किया जाता है**?** पूजन की विधि क्या है इस पर विचार करेंगें। इस प्रकार इस ईकाई के अध्ययन से आपको संबंधित समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

इस इकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन एवं पूजन करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे अंग सहित नवग्रहों के स्थापन का ज्ञान हो जायेगा जिसका प्रयोग आप संबंधित व्यक्ति के दोषों से निवारण में कर सकेगें जिससे वह अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित होते हुये लोकोपकारक हो सकेगा।

6.2 उद्देश्य-

इस ईकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर नवग्रहों के स्थापन की आवश्यकता को समझ रहे होगें। अतः इसका उद्देश्य तो वृहद् है परन्तु संक्षिप्त में इस प्रकार आप जान सकते है।

- वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन एवं पूजन से समस्त कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन एवं पूजन की शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।

- इस कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।
- संदर्भित शिक्षा के विविध तथ्यों को प्रकाश में लाना।

6.3 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपालों का परिचय

6.3.1 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय

यह सर्व विदित है कि जब भी हम कोई शान्ति करते हैं तो नवग्रह मण्डल का निर्माण कर नवग्रहों की स्थापना अवश्य करते हैं। न केवल शान्ति अपितु यज्ञों में भी नवग्रहों की स्थापना करनी पड़ती है। नवग्रहों की स्थापना के बिना हम किसी भी अनुष्ठानिक प्रक्रिया का सम्पादन नही कर सकते इसलिये नवग्रहों का ज्ञान अति आवश्यक है। ईशाने ग्रह वेदिका कहते हुये यह बतलाया गया है कि नवग्रह वेदी का निर्माण ईशान कोण में करके नवग्रहों की स्थापना करनी चाहिये। नवग्रहों के रूप में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एव केतु होते है। इन नवों ग्रहों के दक्षिण अधि देवता एवं बाम भाग में प्रत्यधि देवता विराजित होते हैं।

नवग्रह मण्डल पर वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल की स्थापना की जाती है। इन दोनों देवताओं को नवग्रह मण्डल पर अंग देवता के रूप में जाना जाता है। वास्तोष्पति को वास्तु देवता भी कहा जाता है। निरुक्तकार महर्षि यास्क ने इसकी व्याख्या करते हुये कहा है कि वासतुर्वसतेर्निवास कर्मणः। अर्थात् जहां हम निवास करते हैं वहा वास्तु देवता का वास होता है। इसीलिये जब किसी नवीन ग्रह में प्रवेश करते हैं तो वहां वास्तु पूजन कराते है। जब हम किसी नवीन भवन के प्रारम्भ का उद्घाटन करते है तो वहां भी वास्तु पूजन कराने का विधान है। परन्तु इन स्थानों पर जो वास्तु शान्ति करायी जाती है वह नवग्रह के वास्तोष्पति से भिन्न होती है क्योकि वहां अलग से वास्तुमण्डल बनाकर पूजन किया जाता है। यहां अर्थात् नवग्रह मण्डल पर एक स्थान पर वास्तोष्पति के रूप में अक्षत पुंज को रखा जाता है और उनकी पूजा की जाती है। वास्तु के आवाहन मन्त्र के रूप में वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शं न्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। मन्त्र को जाना जाता है।

क्षेत्रपाल के परिचय में भी यह बतलाया गया है कि क्षेत्र के स्वामी को क्षेत्राधिपति कहते है। ये देवता समस्त क्षेत्रों से हमारी रक्षा करते है। क्षेत्रपाल के ध्यान का यह श्लोक अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो इस प्रकार है-

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैस्सह। पूजा बलिं गृहाणेम सौम्यो भवति सर्वदा।
पुत्रान्देहिधनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे। आयुरारोग्य मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।।

इसमें यह स्पष्ट रूप से बतलाया गया है कि भूत-प्रेत गणों के साथ क्षेत्रपाल जी रहते है इसलिये उनको इन गणों के साथ नमस्कार है। मेरे द्वारा दी गयी पूजा एवं बलि को ग्रहण करें और हमारे प्रति सौम्य रहे। मुझे पुत्र, धन एवं सभी कामनाओं को दे और आयु एवं आरोग्य को प्रदान करे तथा हमारे सारे कार्य निर्विघ्न सम्पन्न करें। वैसे तो क्षेत्रपाल का पृथक् मण्डल बनाया जाता है तो एकोनपंचाशत् यानी उन्चास या एकपंचाशत् अर्थात् इक्यावन देवता होते है। परन्तु यहॉ एक ही स्थान पर अक्षत पुंज रखकर क्षेत्रपाल का आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल देवता को नवग्रह मण्डल पर अंग देवता के रूप में स्वीकार किया गया है। पृथक् मण्डल बनाये जाने पर एवं पूजित होने पर भी इनका नवग्रह मण्डल पर पूजन किया ही जाता है।

इस प्रकार से आपने नाम वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के परिचयात्मक ज्ञान को जान सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

इस प्रकार अपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय प्राप्त किया । अब हम दश दिग्पालों का परिचय अग्रिम प्रकरण में प्रदान करने जा रहें हैं जो इस प्रकार है-

6.4.1 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से आवाहन -

नवग्रह मण्डल पर पंचलोकपालों के आवाहन के अनन्तर वास्तोष्पति का आवाहन किया जाता है। जिसका मन्त्र इस प्रकार है-

1- **वास्तोष्पति के आवाहन का मन्त्र-**

ओंवास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवोभवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ॥

2- क्षेत्रपाल के आवाहन का मन्त्र- ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर ऽ एतारमग्नेः॥ एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यंवैश्वानरं क्षेत्रजित्यायदेवाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः ॥ क्षेत्राधिपतिं आवाहयामि स्थापयामि॥

इस प्रकार से वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से आपने वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते हैं। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** त्रातारमिन्द्र मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **2-** त्वन्नो अग्ने मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **3-** यमाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **4-** असुन्वन्त मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **5-** तत्वायामि मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **6-** आनोनियुद्भिः मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **7-** उपयाम मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **8-** तमीशानं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न **9 -**अस्मै रुद्रा मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **10-** स्योना पृथ्वी मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- अनन्त, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से आवाहन विधान का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन, स्थापन पौराणिक मन्त्रों से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

6.4.2 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन-

अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन की विधि बताने जा रहे है। क्योकि वैदिक मन्त्र सर्वगम्य नही है। वैदिक मन्त्रों का उच्चारण वे ही कर सकते है जो इन

मन्त्रों का गुरुमुखोच्चारण परम्परा से ज्ञान प्राप्त किये हो। वैदिक मन्त्र जटिल होता है मेरे कहने का अभिप्राय यह है। उच्चारण की अशुद्धि से बचने के लिये पौराणिक मन्त्रों का प्रयोग श्रेयष्कर माना गया है। अतः पौराणिक मन्त्रों से वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का आवाहन इस प्रकार है-

1- वास्तोष्पति के आवाहन का मन्त्र-

ओंवास्तोष्पतिं विदिक्कायं भुशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देव सर्वकर्मफलप्रदम् ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- क्षेत्रपाल के आवाहन का मन्त्र-

ॐ भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः ।। क्षेत्राधिपतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

इस प्रकार से वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से आपने वास्तोष्पति एवं का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते हैं। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** इन्द्रं सुरपतिं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **2-** त्रिपादं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **3-** महामहिषमारूढ़ं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **4-** सर्वप्रेताधिपं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **5-** शुद्धस्फटिकसंकाशं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **6-** मनोजवः मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **7-** आवाहयामि देवेश धनदं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **8-** सर्वाधिपं महादेवं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न **9 -**पद्मयोनिं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **10-** अनन्तं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- अनन्त, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन विधान का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का आवाहन, स्थापन नाम मन्त्रों से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

6.4.3 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का नाम मन्त्रों से आवाहन-

अब हम वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का नाम मन्त्रों से आवाहन की विधि बताने जा रहे है। क्योकि वैदिक मन्त्र सर्वगम्य नही है। पौराणिक मन्त्र भी कम पढ़े लिखे लोगों के लिये कठिन है। तथा कभी-कभी कार्य की व्यस्तता होने से समयाभाव हो जात है। ऐसी स्थिति में प्रधान कार्य में व्यवधान न हो इसके लिये नाम मन्त्रों का सहारा लेना पड़ता है। जिससे समय की बचत हो जाती है और प्रयोग भी सविधि सम्पन्न हो जाता है।

अतः नाम मन्त्रों से आवाहन इस प्रकार है-

1- वास्तोष्पति के आवाहन का मन्त्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- क्षेत्रपाल के आवाहन का मन्त्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः ।। क्षेत्राधिपतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

इस प्रकार से वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से आपने वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का नाम मन्त्रों से आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का नाम मन्त्रों से आवाहन कर सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** इन्द्राय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **2-** अग्नये मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **3-** यमाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **4-** निर्ऋतये मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **5-** वरुणाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **6-** वायवे मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **7-** धनदाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **8-** ईशानाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न **9 -**ब्रह्मणे मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **10-** अनन्ताय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है**?**

क- अनन्त, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का नाम मन्त्रों से आवाहन विधान का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का पूजन कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

6.4.4 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से पूजन -

अब हम वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से पूजन की विधि बताने जा रहे है। जो इस प्रकार है-

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये वैदिक मन्त्र को पढ़ते है और वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

ओं पुरुषऽएवेद गुं सर्व्वं यदभूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल, हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य, मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल, स्नान हेतु स्नानीय जल एवं पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

ततः पादयोः पाद्यं हस्तयोरर्घ्यं आचमनीयं जलं -देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्- ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्- शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभो रूपाः पार्ज्जन्न्याः।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्- ओ युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्- ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्- ओं सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथ मासदत्स्वः।। व्वासो ऽअग्ने विश्वरूप गुं संव्ययस्व व्विभावसो।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्- ओं त्वांगन्धर्वाऽ अँखनसूँत्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्चत।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्- ओं अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा न विष्ठया मतीयोजान्विद्रतेहरी।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्- ओं ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वा इव सजीत्वरीर्व्विरुधः पारयिष्णवः। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-ओं काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-ओ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्तियह्वाः। घृतस्यधाराऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि- ओं अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा गुं सं परिपातु विश्वतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्- ओं धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्वतं योऽ स्मान्धूर्वतितं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वन्हतम् गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देव हूतमम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्- ॐ अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्नि र्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योति र्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् - ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ अकल्पयन् ।। नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।।ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-ओं अ गुं शुनाते अ गुं शुः पृच्यतां परुषांपरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः।। चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-ओं याः फलिनीर्य्याऽ अफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं हसः।। इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-ओं यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः।। मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्¬¬मै देवाय हविषा विधेम।। कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् - इद गुं हविः प्रजननम्मे ऽअस्तु दशव्वीर गुं सर्व्वगण गुं स्वस्तये । आत्मशनि प्प्रजाशनि पशुशनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽ अस्मासु धत्त।।

आ रात्रि पार्थिव गुं रजः पितुर प्रायिधामभिः। दिवः सदा गुं सि वृहती व्वितिष्ठस ऽआत्वेषं वर्त्तते तमः।। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलि:- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्न्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।। मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः।। तेषा गुंसहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालदेवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने वैदिक मन्त्रों से वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पाल देवता का पूजन करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** पुरुष एवेद मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **2-** पंचनद्यः मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **3-** ओषधीः मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **4-** अहिरिव भोगैः मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **5-** धूरसि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **6-**अग्निर्ज्योति मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **7-** नाभ्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **8-** यत् पुरुषेण मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न **9-** याः फलिनीर्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **10-** यज्ञेन मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालें को वैदिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालों का पूजन पौराणिक विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

6.4.5 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का पौराणिक विधि से पूजन-

अब आप वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का पौराणिक विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवान किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये पौराणिक मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते हैं।

ओं अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस श्लोक को पढ़कर दें।

ओं गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

ॐ गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

ओं पयो दधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

ओं नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

ओं उवपस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

ओं श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाठ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरेरेष्ठ चन्दनं प्रतिग्रह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

ओं अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण सर्वदेवता।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

ओं माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

ओं दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

ओ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरम् प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

ओं अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

ओं वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाठयो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां धूपो अयं प्रतिगृह्यताम्।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

ओं साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।
दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

ओं शर्कराखण्डखाद्यादि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य
ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।
चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

ओं चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।
चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।
इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

ओं इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ।।
इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।
इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकं च-

ओं पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।
इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

ओं हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

ॐ नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानिच। पुष्पांजलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदेपदे।

प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने पौराणिक मन्त्रों से वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति क्षेत्रपाल देवता का पूजन दशदिक्पालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** अनेक रत्न संयुक्तं मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **2-** पयो दधि घृतं चैव मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **3-** माल्यादीनि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **4-** अबीरं च गुलालं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **5-** वनस्पति रसो मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **6-**साज्यं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **7-** शर्कराखण्ड मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **8-** पूंगीफल महद्दिव्यं मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न **9-** इदं फलं मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **10-** नाना सुगन्धि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति क्षेत्रपाल देवता एवं दशदिक्पालों को पौराणिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति क्षेत्रपाल देवता एवं दशदिक्पालों का पूजन नाम मन्त्र की विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

6.4.6 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का नाम मन्त्र की विधि से पूजन-

अब आप वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये नाम मन्त्र को पढ़ते हैं और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस मन्त्र को पढ़कर दें।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्ड ऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

प्रदक्षिणा-

प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालाः प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने नाम मन्त्रों से वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल का पूजन करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** आसनं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **2-** पंचामृतं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **3-** पुष्पमालां समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **4-** नाना परिमलद्रव्याणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **5-** धूपं आघ्रापयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **6-**दीपं दर्शयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **7-** नैवेद्यं निवेदयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **8-** ताम्बूल पत्राणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न **9-** इमानि फलानि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न **10-** मन्त्र पुष्पांजलि मन्त्र से क्या समर्पित करते है**?**

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का पूजन नाम मन्त्र की विधि से जाना । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होंगे। अब हम इसका सारांश वर्णित करने जा रहे है।

6.5 सारांश

इस ईकाई में आपने नवग्रह मण्डल पर वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों के स्थापन का विधान जाना है। वस्तुतः किसी भी प्रकार की शान्ति के लिये या कर्मकाण्ड के लिये नवग्रह मण्डल का निर्माण करके नवग्रहों की स्थापना करके पूजन करते हैं। क्येंकि बिना स्थापना के वह ग्रह या देवता वहां आकर विराजमान नही होता जिसकी हम पूजा करना चाहते है। इसलिये स्थापन जानना आवश्यक है और पूजन भी जानना अति आवश्यक है।

इस ईकाई में यह बात स्पष्ट की गयी की प्रत्येक ग्रहमण्डल पर वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का आवाहन किया जाता है तथा उनका पूजन किया जाता है। वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल को अंग देवता के रूप में नवग्रह मण्डल पर स्थान दिया जाता है। इसके अनन्तर नवग्रह मण्डल पर दश दिक्पालों को स्थापित किया जाता है। इसको समझने के लिये दश दिक्पाल को विच्छेदित करने पर तीन भागों में उसका विभाजन देखने को मिलता है जो दश, दिक् और पाल है। दश का अर्थ दश

संख्या, दिक् का अर्थ दिशायें एवं पाल का अर्थ है पालने वाला अर्थात् दशों दिशाओं से हमारा पालन करने वाला दश दिक्पाल कहलाता है। अब प्रश्न उठता है कि ये दशा दिशायें कौन है? क्योंकि चार दिशा पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण को तो हम जानते है। हम यह भी जानते है कि चार विदिशा यानी अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायव्य कोण एवं ईशान कोण है। लेकिन फिर कुल मिलाकर आठ ही हुआ। अभी दो और दिशायें बाकी हैं जिन्हे ऊपर और नीचे के रूप में जानते हैं। एक प्रश्न और यहां खड़ा होता है कि ऊपर और नीचे दो दिशायें हैं तो उनके स्वामिओं को नवग्रह मण्डल पर कैसे दिखाया जायेगा। इसका उत्तर देते हुये बतलाया गया है पूर्व एवं ईशान के बीच में आकाश का स्थान एवं नैर्ऋत्य पश्चिम के बीच में पाताल का स्थान नवग्रह मण्डल पर होता है । इस प्रकार उनके स्वामिओं को वहां दिखाया जा सकता है। अब क्रंमशः दिशाओं के अधिपतियों का नाम इस प्रकार जाना जा सकता है।

इन्द्रोवह्निपितृपतिनैर्ऋतोवरुणोमरुत्। कुबेरईशोब्रह्मा च अनन्तो दश दिक्पतिः।।

इसको यदि और सपष्ट किया जाय तो इस प्रकार कहा जा सकता है। पूर्व दिशा का स्वामी इन्द्र है। अग्नि कोण का स्वामी अग्नि है। दक्षिण दिशा का स्वामी यम है। नैर्ऋत्य कोण का स्वामी निर्ऋति है। पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण है। वायव्य कोण का स्वामी वायु है। उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर है। ईशान कोण का स्वामी ईशान है। पूर्व एवं ईशान के बीच का स्वामी ब्रह्मा है तथा पश्चिम एवं नैर्ऋत्य के बीच का स्वामी अनन्त है । इस प्रकार इनका आवाहन किया जाता है। जिसे वैदिक मन्त्रों द्वारा आवाहन, पौराणिक मन्त्रों द्वारा आवाहन एवं नाम मन्त्रों द्वारा आवाहन के रूप में जाना जाता है। न केवल आवाहन स्थापन अपितु इनका पूजन भी तीन ही विधाओं में बांटा गया है जिन्हे वैदिक मन्त्रों द्वारा, पौराणिक मन्त्रों द्वारा एवं नाम मन्त्रों द्वारा बतलाया गया है।

6.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

भू शैया- भूमि की शैया, शूलपाणिन- हाथ मे त्रिशूल वाला, सुरपति- देवताओं के स्वामी, शतयज्ञाधिप- सौ यज्ञों के स्वामी, त्रिपाद- तीन पैरों वाला, सप्तहस्त- सात हाथों वाला, द्विमूर्धा- दो शिर, द्विनासिका- दो नाक, षण्नेत्र- छः आखें, चतुः श्रोत्र- चार कान, महिष-भैस, दण्डहस्त- हाथ में दण्ड, सर्वप्रेताधिप- सभी प्रेतों के स्वामी, नीलविग्रह- नीला शरीर, नरारूढ़- मनुष्य पर सवार, वरप्रद- वर देने वाला, जलेश- जल का स्वामी, प्रतीचीशं- पश्चिम दिशा का स्वामी, मनोजव- मन के समान गति करने वाला, महातेज- अत्यन्त तेज से समन्वित, धनद- धन देने वाला, यक्षपूजित- यक्षों से पूजित, दिव्यदेह- दिव्य शरीर, नरयान- मनुष्य का यान, सर्वाधिप- सभी का राजा, अव्यय- जो व्यय न हो, अभयप्रद- अभय देने वाले, पद्मयोनि- कमल से उत्पन्न, चतुर्मुर्ति- चार मुख, सर्वनागानामधिप- सभी नागों के स्वामी, दिक्- दिशायें, पाल- रक्षक, वरेण्य- श्रेष्ठ, विश्वजित- विश्व को जीतने वाला, अर्चक- अर्चा करने वाला, समर्पयामि- समर्पित करता हूं, दर्शयामि- दिखाता हूं, निवेदयामि- निवेदन करता हूं, आघ्रापयामि- सुघाता हूं, पाद्य- पैर प्रक्षालित करने हेतु जल, आराम-

बागीचा, मुद्रा- जो प्रसन्न कर दे, द्रवित कर दे, पितृपति- पितरों के स्वामी, मरुत्- वायु, , सर्षप- सरसों, दिवाकर- सूर्य, गजेन्द्र- हाथियों का स्वामी, लम्बोदर- लम्बा उदर, जम्बू- जामुन, चारु- सुन्दर, भव- होवो, पराभव- हार, विभव- धन-सम्पदा।

6.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

6.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**ध, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ग, **10-**क।

6.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ग, **10-**क।

6.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ग, **10-**क।

6.4.4 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

6.4.5 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

6.4.6 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-दान मयूख।

2-प्रतिष्ठा मयूख।

3-बृहद् ब्रह्म नित्य कर्म समुच्चय।

4- शान्ति- विधानम्।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7- कर्मजव्याधिदैवी चिकित्सा।

8- फलदीपिका

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- सर्व देव प्रतिष्ठा प्रकाशः।

11- संस्कार-भास्करः । वीणा टीका सहिता।

12- मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्- भारतीय व्रत एवं अनुष्ठान।

13- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

6.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- पूजन विधानम्।

2- श्री काशी विश्वनाथ पंचांग।

3- भारतीय रत्न सिद्धान्त।

4- याज्ञवल्क्य स्मृतिः।

5- संस्कार- विधानम्।

6.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- क्षेत्रपाल एवं वास्तोष्पति देवताओं का परिचय दीजिये।

2- इन्द्र दिक्पाल का स्वरूप बतलाइये।

3- वास्तोष्पतिदेवता स्थापन की वैदिक विधि बतलाइये।

4- क्षेत्रपाल देवता स्थापन की पौराणिक विधि वर्णित कीजिये।

5- दशदिक्कपाल स्थापन की नाम मन्त्र की विधि का वर्णन कीजिये।

6- क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से पूजन सविधि लिखिये।

7- प्रत्यधि देवताओं का पौराणिक मन्त्रों से पूजन लिखिये।

8- दश दिक्पालों का पूजन नाम मन्त्रों से लिखिये।

9- यम दिक्पाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

10- वरुण दिक्पाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

इकाई – 7 दश दिक्पाल पूजन

इकाई की संरचना

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 दश दिक्पाल का परिचय
7.3.1 दश दिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन
7.3.2 दश दिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन
7.3.3 दश दिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन
7.3.4 वैदिक मन्त्रों से दश दिक्पालों की पूजन विधि
7.3.5 पौराणिक मन्त्रों से दश दिक्पालों की पूजन विधि
7.3.6 नाम मन्त्रों से दश दिक्पालों की पूजन विधि
7.4 सारांश
7.5 बोध प्रश्नों के उत्तर
7.6 पारिभाषिक शब्दावली
7.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
7.8 सहायक पाठ्यसामग्री
7.9 निबन्धात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-120 की द्वितीय खण्ड की सातवीं और अंतिम इकाई से संबंधित है। इस इकाई का शीर्षक है – दश दिक्पाल। इससे पूर्व की इकाई में आपने वास्तोष्पत्ति तथा क्षेत्रपाल के बारे में अध्ययन कर लिया है। अब आप दश दिक्पालों के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं।

जैसे क्षेत्र का पालक क्षेत्रपाल होता है, उसी प्रकार दसों दिशाओं के पालक को दिक्पाल कहते हैं। कर्मकाण्ड में इन दिक्पालों का पूजन परम आवश्यक माना गया है। इनके पूजन की भी वैदिक, पौराणिक एवं नाम मन्त्रों से विधि बतलायी गयी है।

आइए हम सभी दसों दिक्पालों के बारे में इस अध्याय के माध्यम से जानने का प्रयास करते हैं।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लेंगे कि –

1. दस दिक्पाल क्या है।
2. दस दिक्पालों की पूजन विधि क्या है।
3. वैदिक तथा पौराणिक मन्त्रों से दिक्पालों का पूजन कैसे किया जाता है।
4. नाम मन्त्रों से दिक्पाल पूजन की विधि क्या है।
5. कर्मकाण्ड में दश दिक्पालों का क्या महत्व है।

7.3 दश दिक्पालों का परिचय-

इससे पूर्व में आपने वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के विषय में परिचय प्राप्त किया। अब हम इस प्रकरण में दश दिक्पालों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने जा रहे हैं। दश दिक्पाल को विच्छेदित करने पर तीन भागों में उसका विभाजन देखने को मिलता है जो दश, दिक् और पाल है। दश का अर्थ दश संख्या, दिक् का अर्थ दिशायें एवं पाल का अर्थ है पालने वाला अर्थात् दशों दिशाओं से हमारा पालन करने वाला दश दिक्पाल कहलाता है। अब प्रश्न उठता है कि ये दशो दिशायें कौन है? क्योंकि चार दिशा पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण को तो हम जानते है। हम यह भी जानते है कि चार विदिशा यानी अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायव्य कोण एवं ईशान कोण है। लेकिन फिर कुल मिलाकर आठ ही हुआ। अभी दो और दिशायें बाकी हैं जिन्हे ऊपर और नीचे के रूप में जानते है। एक प्रश्न और यहां खड़ा होता है कि ऊपर और नीचे दो दिशायें हैं तो उनके स्वामिओं को नवग्रह मण्डल पर कैसे दिखाया जायेगा? इसका उत्तर देते हुये बतलाया गया है पूर्व एवं ईशान के बीच में आकाश का स्थान एवं नैर्ऋत्य पश्चिम के बीच में पाताल का स्थान नवग्रह मण्डल पर होता है। इस प्रकार उनके स्वामिओं को वहां दिखाया जा सकता है। अब क्रमशः दिशाओं के अधिपतियों का नाम इस प्रकार जाना जा सकता है।

इन्द्रोवह्निपितृपतिनैर्ऋतोवरुणोमरुत्। कुबेरईशोब्रह्मा च अनन्तो दश दिक्पतिः।।

इसको यदि और स्पष्ट किया जाय तो इस प्रकार कहा जा सकता है। पूर्व दिशा का स्वामी इन्द्र हैर्। अिगन कोण का स्वामी अग्नि है। दक्षिण दिशा का स्वामी यम है। नैर्ऋत्य कोण का स्वामी निर्ऋति है। पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण है। वायव्य कोण का स्वामी वायु है। उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर है। ईशान कोण का स्वामी ईशान है। पूर्व एवं ईशान के बीच का स्वामी ब्रह्मा है तथा पश्चिम एवं नैर्ऋत्य के बीच का स्वामी अनन्त है । अब हम इन दिग्पालों के स्वरूपों की चर्चा करेगें जिससे इनका परिचय और प्रगाढ़ हो जायेगा।

1- इन्द्र का स्वरूप-

चतुर्दन्तगजारूढ़ो वज्री कुलिशभृत्करः। शचीपति प्रकर्तव्यो नानाभरणभूषितः।।

इन्द्र के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि चार दांतों वाले हाथियों पर इन्द्र विराजमान है। इन्द्र के हाथी का नाम ऐरावत है। वज्र एवं ठाल हाथों में लिये हुये हैं। शची के पति हैं तथा विभिन्न प्रकार के आभूषणों से विभूषित है।

2- अग्नि का स्वरूप- दूसरे दिक्पाल के रूप में अग्नि को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

पिंगलशमश्रुकेशाक्षः पीनांगोजवरो अरुण। छागस्थः साक्षसूत्रोग्निः सप्तार्चिः शक्तिधारकः।।

अर्थात् पिंगल वर्ण की मूछें, पिंगल वर्ण के केश एवं पिंगल वर्ण की आंखें है। अग्नि का अंग पीनांग है, इनके अंगों से तीव्र तेज लाल स्वरूप में निकलता रहता है। छाग अग्नि देवता का वाहन हैं। अक्ष माला एवं सूत्र धारण किया हुआ है। सात जिह्वाओं वाला इनका मुख है और शक्ति को धारण करने वाले ये देवता है।

3- यम का स्वरूप- तीसरे दिक्पाल के रूप में यम को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

ईषन्नीलो यमः कार्यो दण्डहस्तो विजानता। रक्तदृक्पाशहस्तश्च महामहिषवाहनः।

अर्थात् थोड़ा नीला लिये हुये काला यम का स्वरूप है। इनको दण्ड हाथ में लिये हुये जाना जाता है। लाल-लाल इनकी आंखे है, हाथों में पाश लिये हुये हैं। इसी पाश से ये मनुष्यों को खीचकर लाते हैं। महा महिष के वाहन पर विराजते है।

4- निर्ऋति का स्वरूप- चौथे दिक्पाल के रूप में निर्ऋति को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

खड्गचर्मधरोबालो निर्ऋतिर्नरवाहनः। ऊर्ध्वकेशो विरूपाक्षः करालः कालिकाप्रियः।।

निर्ऋति के बारे में बतलाया गया कि तलवार और ठाल धारण किये हुये नर के वाहन पर सवार, सदा ऊर्ध्व केश रखने वाले विरूप अक्षों वाले किराल स्वरूप वाले कालिका के प्रिय निर्ऋति देवता है।

5- वरुण का स्वरूप- पांचवें दिक्पाल के रूप में वरुण को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

नागपाशधरो रक्तभूषणः पद्मिनीपतिः। वरुणो अंबुपतिः स्वर्णवर्णो मकरवाहनः।

अर्थात् नागों के पाश को धारण करने वाले, लाल आभूषण धारण करने वाले, पद्मिनी के पति वरुण देवता जल के स्वामी है और स्वर्ण वर्ण वाले है तथा मकर के वाहन पर विराजमान है।

6- वायु का स्वरूप- छठवें दिक्पाल के रूप में वायु को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

धावद्धरणिपृष्ठस्थो ध्वजधारी समीरणः। वरदानकरो धूम्रवर्णः कार्यो विजानता।।

अर्थात् धरणिपृष्ठ यानी भूमि के ऊपर वायु देवता दौड़ते रहते हैं। वायु देवता ध्वज धारण किये रहते हैं। वरदान करने वाले धूम्रवर्ण के रूप में इनको जाना जाता है।

7- कुबेर का स्वरूप- सातवें दिक्पाल के रूप में कुबेर को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

नरयुत पुष्पकविमानस्थं कुण्डलकेयूरहारविभूषितं वरदगदाधरदक्षिणवामहस्तं मुकुटिनं महोदरं स्थूलकायं ह्रस्व पिंगलनेत्रं पीतविग्रहं शिवसखं विमानस्थं कुबेरं ध्यायेत्।

अर्थात् मनुष्य के स्वरूप वाले पुष्पक विमान पर स्थित, कुण्डल एवं केयूर हार से विभूषित, वरद मुद्रा एवं गदा धारण करने वाले, मुकुट पहने हुये, बड़े पेट वाले, स्थूल शरीर वाले, छोटे-छोटे पिंगल नेत्रों वाले, पीले विग्रह को धारण करने वाले शिव के सखा कुबेर का स्वरूप है।

8- ईशान का स्वरूप- आठवें दिक्पाल के रूप में ईशान को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

एह्येहि विश्वेश्वरनस्त्रिशूलकपालखड्वांगधरेणसार्द्धम्।

लोकेन यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते।।

अर्थात् विश्वेश्वर के रूप में जाने जाने वाले, कपाल एवं खट्वांग धारण करने वाले, लोक के यज्ञ के सिद्धि के लिये पूजा ग्रहण करने वाले है। इनको नमस्कार है।

सर्वाधिपो महादेव ईशानो शुक्ल ईश्वरः। शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः।।

इसे भी ईशान का स्वरूप बतलाया गया है।

9- ब्रह्मा का स्वरूप- नवें दिक्पाल के रूप में ब्रह्मा को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

पद्मासनस्थो जटिलो ब्रह्माकार्यश्चतुर्मुखः। अक्षमाला स्रुवं विभ्रत्पुस्तकं च कमण्डलुम्।।

अर्थात् ब्रहमा कमल के आसन पर विराजमान, जटा धारण किये हुये, चार मुखों वाले, रुद्राक्ष की माला धारण किये हुये, स्रुव , पुस्तक एवं कमण्डल धारण किये हुये है।

10- अनन्त का स्वरूप- दसवें दिक्पाल के रूप में अनन्त को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

अनन्तं शमनासीनं फणसप्तकमण्डितम्।।

योसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरं। पुष्पवद्धारयेनमूर्ध्नी तस्मै नित्यं नमो नमः।।

अनन्त सात फणों वाले है। पृथ्वी को इस प्रकार धारण किये रहते है जैसे कोई पुष्प धारण किया रहता है।

इस प्रकार से आपने नाम दश दिक्पतियों का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ दिक्पतियों के परिचयात्मक ज्ञान को जान सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** पूर्व दिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **2-** अग्नि कोण का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **3-** दक्षिण दिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **4-** निर्ऋति विदिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **5-** पश्चिम दिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **6-** वायव्य विदिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **7-** उत्तर दिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **8-** ईशान विदिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न **9-** पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न **10-** नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच की दिशा का दिक्पति कौन है**?**

क- इन्द, ख- अनन्त, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने दशदिक्पालों का परिचय का ज्ञान प्राप्त किया। आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम दश दिक्पालों का आवाहन, स्थापन कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

7.3.1 दशदिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन-

अब आप दश दिक्पालों के आवाहन के बारे में जानेगें। इनके आवाहन को कर्मकाण्ड में तीन भागों में बाटा गया है जिसे वैदिक मन्त्रों से आवाहन, पौराणिक मन्त्रों से आवाहन एवं नाम मन्त्रों से आवाहन के रूप में जाना जाता है। जो इस प्रकार है-

वास्तोष्पत्ति एवं क्षेत्रपाल आवाहन के पश्चात् मण्डल से बाहर दश दिक्पालों का आवाहन करना चाहिये जो इस प्रकार है।

मण्डलाद्बाह्ये दशदिक्पिालानामावाहनम्

1- इन्द्र का आवाहन-

ओं त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र गुं स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ॥

2- अग्नि का आवाहन-

ओं त्वं न्नो अग्ने तवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य। त्रातातोकस्य तनये गवामस्य निमेष गुं रक्षमाणस्तवव्रते ॥ ॐ भूर्भुव: स्वः अग्नये नमः ॥ अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ॥

3- यम का आवाहन-

ॐ यमाय त्वां गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्रे। ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि॥

4- निर्ऋति का आवाहन-

ॐ असुन्वन्त मयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋृतिं आवाहयामि स्थापयामि ॥

5- वरुण का आवाहन-

ओं तत्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहडमानो वरुणेह बोध्युरुश गुं समान आयुः प्रमोषीः॥ ॐ वरुणाय नमः वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ॥

6- वायु का आवाहन-

ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर गुं सहस्त्रिणी भिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽ अस्मिन्सवने मादयस्वयूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि॥

7- कुबेर का आवाहन-

ॐ उपयामगृहीतो अस्यश्विभ्यां त्वा सरसवत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण। एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा॥ ¬ भूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि॥

8- ईशान का आवाहन-

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियन्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषानो यथा व्वेद सामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि॥

9- ब्रह्मा का आवाहन-

ओं अस्मै रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्यै भरहूतौ सजोषाः। यः श गुं सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽ इन्द्र ज्येष्ठा ऽ अस्माऽ **2** ऽ अवन्तु देवाः ॥ ¬ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि॥

10- अनन्त का आवाहन-

ॐ स्योनापृथिवीनोभवानृक्षरानिवेशनी। यच्छाः नः शर्म्म सप्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि ॥

इस प्रकार आवाहन करके प्राण प्रतिष्ठा अधोलिखित मन्त्रों से करनी चाहिये-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामों **3** प्रतिष्ठ॥ ॐ सूर्यादि अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥

7.3.2 दशदिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन-

मण्डल से बाहर दश दिक्पालों का आवाहन करना चाहिये जो इस प्रकार है।

मण्डलाद्बाह्ये दशदिक्पिालानामावाहनम्

1- इन्द्र का आवाहन-

ओं इन्द्रं सुरपतिं श्रेष्ठं वज्रहस्त महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥
ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ॥

2- अग्नि का आवाहन-

ओं त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमुर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुव: स्वः अग्नये नमः ॥ अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ॥

3- यम का आवाहन-

ॐ महामहिषमारूढ़ं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- निर्ऋति का आवाहन-

ॐ सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढ़ं वरप्रदम्।।

ॐ भूर्भवः स्वः निर्ऋृतये नमः निर्ऋृतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5- वरुण का आवाहन-

ओं शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ वरुणाय नमः वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

6- वायु का आवाहन-

ॐ मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- कुबेर का आवाहन-

ॐ आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- ईशान का आवाहन-

ॐ सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- ब्रह्मा का आवाहन-

ओं पद्मयोनिं चतुर्मुर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहययामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धि हेतवे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

10- अनन्त का आवाहन-

ॐ अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार आवाहन करके प्राण प्रतिष्ठा अधोलिखित मन्त्र से करनी चाहिये-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ सूर्यादि अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

7.3.3 दशदिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन-

मण्डल से बाहर दश दिक्पालों का आवाहन करना चाहिये जो इस प्रकार है।

मण्डलाद्बाह्ये दशदिक्पिालानामावाहनम्

1- इन्द्र का आवाहन-

ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- अग्नि का आवाहन-

ॐ भूर्भुव: स्वः अग्नये नमः ।। अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ।।

3- यम का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- निर्ऋति का आवाहन-

ॐ भूर्भवः स्वः निर्ऋृतये नमः निर्ऋृतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5- वरुण का आवाहन-

ॐ वरुणाय नमः वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

6- वायु का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- कुबेर का आवाहन-

ओं भूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- ईशान का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- ब्रह्मा का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

10- अनन्त का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार आवाहन करके प्राण प्रतिष्ठा अधोलिखित मन्त्र से करनी चाहिये-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ सूर्यादि अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

7.3.4 वैदिक मन्त्रों से दश दिक्पालों का पूजन विधि

ओं पुरुषऽएवेद गुं सर्व्वं यदभूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल, हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य, मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल, स्नान हेतु स्नानीय जल एवं पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

ततः पादयोः पाद्यं हस्तयोरर्घ्यं आचमनीयं जलं -देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्- ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्- शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभो रूपाः पार्ज्जन्न्याः।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्- ओ युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्- ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्- ओं सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथ मासदत्स्वः।। व्वासो ऽअग्ने विश्वरूप गुं संव्ययस्व व्विभावसो।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्- ओं त्वांगन्धर्वाऽ अँखनसूँत्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्चत।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्- ओं अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा न विष्ठया मतीयोजान्विद्रतेहरी।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्- ओं ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वा इव सजीत्वरीर्व्विरुधः पारयिष्णवः। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-ओं काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-ओ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्तियह्वाः। घृतस्यधाराऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि- ओं अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा गुं सं परिपातु विश्वतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्- ओं धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्वतं योऽ स्मान्धूर्वतितं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वन्हतम् गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देव हूतमम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्- ॐ अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योर्तिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्नि र्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योति र्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् - ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ अकल्पयन् ।। नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।।ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-ओं अ गुं शुनाते अ गुं शुः पृच्यतां परुषांपरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः।। चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-ओं याः फलिनीर्य्याऽ अफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं हसः।। इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-ओं यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः।। मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-ओं हिरण्यगर्भः समवर्ततात्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्¬¬मै देवाय हविषा विधेम।। कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् - इद गुं हविः प्रजननम्मे ऽअस्तु दशव्वीर गुं सर्व्वगण गुं स्वस्तये । आत्मशनि प्प्रजाशनि पशुशनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽ अस्मासु धत्त।। आ रात्रि पार्थिव गुं रजः पितुर प्रायिधामभिः। दिवः सदा गुं सि वृहती व्वितिष्ठस ऽआत्वेषं वर्त्तते तमः।। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलि:- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।। मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः।। तेषा गुंसहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालदेवता प्रीयन्तां न मम।।

7.3.5 पौराणिक मन्त्रों से दश दिक्पालों का पूजन विधि

अब आप पौराणिक मन्त्रों से दश दिक्पालों की पूजन विधि को जानेंगे।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवान किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये पौराणिक मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते हैं।

ओं अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस श्लोक को पढ़कर दें।

ओं गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

ॐ गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

ओं पयो दधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

ओं नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

ओं उवपस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

ओं श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाठ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरेष्ठ चन्दनं प्रतिग्रह्यताम्।।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।
गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

ओं अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण सर्वदेवता।।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।
इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

ओं माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

ओं दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

ओ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरम् प्रतिगृह्यताम्।।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।
नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

ओं अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।
दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।
नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-
ओं वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाठयो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां धूपो अयं प्रतिगृह्यताम्।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।
इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

ओं साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।
दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

ओं शर्कराखण्डखाद्यादि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

ओं चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।
चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

ओं इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ।।
इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकं च-

ओं पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

ओं हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

ॐ नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानिच। पुष्पांजलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदेपदे। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

7.3.6 नाम मन्त्रों से दश दिक्पालों का पूजन विधि

अब आप दशदिक्पालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये नाम मन्त्र को पढ़ते हैं और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस मन्त्र को पढ़कर दें।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्ड ऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ॥

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

कृतायाः पूजायाः सादृण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि॥ श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ॥ इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि॥ श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ॥

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि॥ श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ॥

प्रदक्षिणा-

प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ॥

हस्ते जलमादाय अनया पूजया वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालाः प्रीयन्तां न मम॥

7.4 सारांश

इस ईकाई में आपने नवग्रह मण्डल पर दशदिक्पालों के स्थापन का विधान जाना है। वस्तुतः किसी भी प्रकार की शान्ति के लिये या कर्मकाण्ड के लिये नवग्रह मण्डल का निर्माण करके नवग्रहों की स्थापना करके पूजन करते हैं। क्येंकि बिना स्थापना के वह ग्रह या देवता वहां आकर विराजमान नही होता जिसकी हम पूजा करना चाहते है। इसलिये स्थापन जानना आवश्यक है और पूजन भी जानना अति आवश्यक है।

इस ईकाई में यह बात स्पष्ट की गयी की प्रत्येक ग्रहमण्डल पर दशदिक्पालों का आवाहन किया जाता है तथा उनका पूजन किया जाता है। वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल को अंग देवता के रूप में नवग्रह मण्डल पर स्थान दिया जाता है। इसके अनन्तर नवग्रह मण्डल पर दश दिक्पालों को स्थापित किया जाता है। इसको समझने के लिये दश दिक्पाल को विच्छेदित करने पर तीन भागों में उसका विभाजन देखने को मिलता है जो दश, दिक् और पाल है। दश का अर्थ दश संख्या, दिक् का अर्थ दिशायें एवं पाल का अर्थ है पालने वाला अर्थात् दशों दिशाओं से हमारा पालन करने वाला दश दिक्पाल कहलाता है। अब प्रश्न उठता है कि ये दशा दिशायें कौन है? क्योंकि चार दिशा पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण को तो हम जानते है। हम यह भी जानते है कि चार विदिशा यानी अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायव्य कोण एवं ईशान कोण है। लेकिन फिर कुल मिलाकर आठ ही हुआ। अभी दो और दिशायें

बाकी हैं जिन्हे ऊपर और नीचे के रूप में जानते हैं। एक प्रश्न और यहां खड़ा होता है कि ऊपर और नीचे दो दिशायें हैं तो उनके स्वामिओं को नवग्रह मण्डल पर कैसे दिखाया जायेगा। इसका उत्तर देते हुये बतलाया गया है पूर्व एवं ईशान के बीच में आकाश का स्थान एवं नैर्ऋत्य पश्चिम के बीच में पाताल का स्थान नवग्रह मण्डल पर होता है । इस प्रकार उनके स्वामिओं को वहां दिखाया जा सकता है। अब क्रंमशः दिशाओं के अधिपतियों का नाम इस प्रकार जाना जा सकता है।

इन्द्रोवह्निपितृपतिनैर्ऋतोवरुणोमरुत्। कुबेरईशोब्रह्मा च अनन्तो दश दिक्पतिः।।

इसको यदि और सपष्ट किया जाय तो इस प्रकार कहा जा सकता है। पूर्व दिशा का स्वामी इन्द्र है। अग्नि कोण का स्वामी अग्नि है। दक्षिण दिशा का स्वामी यम है। नैर्ऋत्य कोण का स्वामी निर्ऋति है। पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण है। वायव्य कोण का स्वामी वायु है। उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर है। ईशान कोण का स्वामी ईशान है। पूर्व एवं ईशान के बीच का स्वामी ब्रह्मा है तथा पश्चिम एवं नैर्ऋत्य के बीच का स्वामी अनन्त है । इस प्रकार इनका आवाहन किया जाता है। जिसे वैदिक मन्त्रों द्वारा आवाहन, पौराणिक मन्त्रों द्वारा आवाहन एवं नाम मन्त्रों द्वारा आवाहन के रूप में जाना जाता है। न केवल आवाहन स्थापन अपितु इनका पूजन भी तीन ही विधाओं में बांटा गया है जिन्हे वैदिक मन्त्रों द्वारा, पौराणिक मन्त्रों द्वारा एवं नाम मन्त्रों द्वारा बतलाया गया है।

7.5 पारिभाषिक शब्दावलियां-

भू शैया- भूमि की शैया, शूलपाणिन- हाथ मे त्रिशूल वाला, सुरपति- देवताओं के स्वामी, शतयज्ञाधिप- सौ यज्ञों के स्वामी, त्रिपाद- तीन पैरों वाला, सप्तहस्त- सात हाथों वाला, द्विमूर्धा- दो शिर, द्विनासिका- दो नाक, षण्नेत्र- छः आखें, चतुः श्रोत्र- चार कान, महिष-भैस, दण्डहस्त- हाथ में दण्ड, सर्वप्रेताधिप- सभी प्रेतों के स्वामी, नीलविग्रह- नीला शरीर, नरारूढ़- मनुष्य पर सवार, वरप्रद- वर देने वाला, जलेश- जल का स्वामी, प्रतीचीशं- पश्चिम दिशा का स्वामी, मनोजव- मन के समान गति करने वाला, महातेज- अत्यन्त तेज से समन्वित, धनद- धन देने वाला, यक्षपूजित- यक्षों से पूजित, दिव्यदेह- दिव्य शरीर, नरयान- मनुष्य का यान, सर्वाधिप- सभी का राजा, अव्यय- जो व्यय न हो, अभयप्रद- अभय देने वाले, पद्मयोनि- कमल से उत्पन्न, चतुर्मुर्ति- चार मुख, सर्वनागानामधिप- सभी नागों के स्वामी, दिक्- दिशायें, पाल- रक्षक, वरेण्य- श्रेष्ठ, विश्वजित- विश्व को जीतने वाला, अर्चक- अर्चा करने वाला, समर्पयामि- समर्पित करता हूं, दर्शयामि- दिखाता हूं, निवेदयामि- निवेदन करता हूं, आघ्रापयामि- सुघाता हूं, पाद्य- पैर प्रक्षालित करने हेतु जल, आराम- बागीचा, मुद्रा- जो प्रसन्न कर दे, द्रवित कर दे, पितृपति- पितरों के स्वामी, मरुत्- वायु, , सर्षप- सरसों, दिवाकर- सूर्य, गजेन्द्र- हाथियों का स्वामी, लम्बोदर- लम्बा उदर, जम्बू- जामुन, चारु- सुन्दर, भव- होवो, पराभव- हार, विभव- धन-सम्पदा।

7.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

7.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-ख, **2-**ख, **3-**क, **4-**ग, **5-**घ, **6-**ख, **7-**क, **8-**ग, **9-**क, **10-**ग।

7.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-दान मयूख।

2-प्रतिष्ठा मयूख।

3-बृहद् ब्रह्म नित्य कर्म समुच्चय।

4- शान्ति- विधानम्।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7- कर्मजव्याधिदैवी चिकित्सा।

8- फलदीपिका

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- सर्व देव प्रतिष्ठा प्रकाशः।

11- संस्कार-भास्करः । वीणा टीका सहिता।

12- मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्- भारतीय व्रत एवं अनुष्ठान।

13- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

7.8- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- पूजन विधानम्।

2- श्री काशी विश्वनाथ पंचांग।

3- भारतीय रत्न सिद्धान्त।

4- याज्ञवल्क्य स्मृतिः।

5- संस्कार- विधानम्।

7.9 निबंधात्मक प्रश्न-

1- इन्द्र दिक्पाल का स्वरूप बतलाइये।

2- दशदिक्कपाल स्थापन की नाम मन्त्र की विधि का वर्णन कीजिये।

3- दश दिक्पालों का पूजन नाम मन्त्रों से लिखिये।

4- यम दिक्पाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

5- वरुण दिक्पाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।